

भारतीय विद्या मन्दिर ग्रन्थमाला

६

नागदमण

भारतीय विद्या मन्दिर ग्रंथमाला

६



परामश-मण्डल

श्री नरोत्तमदास जी स्वामी एम ए
श्री शम्भुदयाल जी सक्सेना, साहित्यरत्न
श्री अक्षयचन्द्र जी गर्मा एम ए
श्री नाथूराम जी लखगावत एम ए
श्री रामेश्वरप्रसाद श्री पांडिया, एम ए
श्री चन्द्रदान जी धारण, एम ए

नागदमण

[डिगळ कृष्ण-भक्ति-साहित्य का सुमधुर वाव्य]

सम्पादक

मूलचंद्र 'प्राणेश', साहित्यरत्न

शोधसहायक, मा० वि० म० शोध प्रतिष्ठान,
बोकानेर



भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान

बोकानेर [राजस्थान]

भारतीय विद्या मंदिर ग्रन्थमाला-६

● सम्पादक

श्री मूलचन्द्र 'प्राणेश', साहित्यपरत

● आवरण शिल्पी

श्री आशाराम गोस्वामी

● प्रथम संस्करण भा० सं० १८८८, १९६६ ई०

● मूल्य ५ ००

● प्रकाशक

भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर [राजस्थान]

● मुद्रक

एम्प्लोयर्स प्रेस, बीकानेर

विषय-सूची

आभार	१
प्राक्कथन	२
सम्पादकीय	१-५
भूमिका	१-१२

खंड १

प्रथम अध्याय	
भूसा सांपात्री व्यक्तित्व और कृतित्व	३
द्वितीय अध्याय	
नागरमण का कथा-स्रोत तथा कवि की मौलिक उद्भावना	११
तृतीय अध्याय	
नागरमण की भाषा और व्याकरण	२१
चतुर्थ अध्याय	
नागरमण का साहित्य सौष्ठव	३६

खंड २

नागरमण : मूल पाठ, महारघुर्ष पाठनेह शशय एवं भाषा	५३
---	----

परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य में नागरमण प्रसंग	१०६
-------------------------------------	-----

आभार

भारतीय विद्या भवन ग्रन्थ माला का छठा पुष्प पाठकों की सेवा में सह्य प्रस्तुत है । इसके प्रकाशन में राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग एवं परम ब्रह्मव साहित्यानुरागी श्रीमान गिरधरदास जी मूधडा द्वारा उदारता पूर्ण प्रदत्त आर्थिक सहयोग के लिए हम उनके बड़े आभारी हैं ।

ब्रह्मव भक्ति साहित्य पर सस्था का यह पहला ग्रन्थ है । आशा है इसी प्रकार भविष्य में भी सस्था अपने शुभचिंतकों व सहायकों के सहयोग एवं सहायता से उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन करती रहेगी ।

मूलचन्द्र पारीक

रजिस्ट्रार

भारतीय विद्या भवन, बीकानेर

प्राक्कथन

कालिय और कस की दुरभिसधि के कारण आये दिन यज्ञमण्डल में नये नये उत्पात हो रहे थे । जन घन की अपार क्षति हो रही थी । सारे भूभाग में क्षोभ की सहर दौड़ रही थी । जनता हाथों में तलवार लिए दुष्टों का दलन करने के लिए सन्नद्ध थी । मगधान कृष्ण ने उनका नेतृत्व किया । यज्ञमण्डल की कृषि और गोधन की समृद्धि के लिए यह आवश्यक हो गया कि विषघर कालिय का सत्काल नष्ट किया जाय । एक दिन कन्वुक-क्रीडा के निमित्त कृष्ण ने कालिय को उसके घर में जा बसाया । पुराने सारे वर धुका दिये । इस पौराणिक आह्वान को कवि साया झूला ने भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से मौलिक रूप में काव्यात्मित व्यक्त की है । काव्य सौंदर्य और श्लोगत विशेषताओं पर मूढिकाकार और सपादक महोदय ने विंगद प्रकाश डाल दिया है, भेरे लिए कुछ कहने की शेष नहीं रहा है । रचनाकार ने सभसामयिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों और आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में इस कृति का सजन किया है और वह इसमें पूर्ण सफल हुआ है । साधना के एक एक गम्भ से अभि-मिश्रित यह काव्यकृति पुरातन काल से कवि की कीर्ति का कलग रही है, और आज की बदली हुई परिस्थितियों में भी यह हमें दुष्टों का दलन करने की बराबर प्रेरणा दे रही है । अत्याचारियों को गव को धूर कर जन जीवन को निरापद करने की यह शीघ्र पूर्ण गाया लौकिक साहित्य की अमर-निधि है और इसीलिए इसे पूरी मेहनत के साथ सम्पादित कर साहित्य जगत के हाथों में सौंपा गया है ।

प्रिय श्री मूलचन्द 'प्राणेश' ने डिगल भाषा और साहित्य की भाव प्रवणता और उसके व्याकरण के मम को समझकर आधुनिक साहित्य के विद्वानों के लिए कृति को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है । वह हम सबके साधुवाद के पात्र हैं ।

हमें इस बात का गव और हर्ष है कि इस महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ को नये रूप में प्रकाशित करने का श्रेय शोध प्रतिष्ठान को प्राप्त हुआ है । आशा है, विश्व पाठक इसका पूरा आनन्द उठा पायेंगे ।

सत्यनारायण पारीक

अध्यक्ष

भा वि म शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर

सम्पादकीय

शोध प्रतिष्ठान द्वारा संचालित साक्षात् हि साहित्य-गोष्ठी में एक दिन इंगल भाषा और साहित्य विषय की चर्चा चल रही थी । प्रतिष्ठान के तत्कालीन संचालक श्रीमान् अक्षयचन्द्रजी शर्मा एम ए ने इंगल काव्य पर कर्ण कटुता एवं बुरूहता का आरोप लगाने वाले व्यक्तियों की अल्पज्ञता पर तरस खाते हुए प्रस्तुत 'नागदमन' की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया तथा साथ ही इस कृति का सुन्दर ढंग से सम्पादन करके प्रकाशित करवाने की आवश्यकता भी प्रकट की और इसके सम्पादन का काय मुझे सौंपा ।

'नागदमन' इंगल भक्ति साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति होने के कारण भक्त एवं कवि तो अपने सकलनप्रर्थों (गुटकों) में इसका सकलन करते ही थे पर साथ ही राजस्थान में इस काव्य का उपयोग सपविष नियारणाथ भाट (मन्त्र) के रूप में होने के कारण जन सामान्य भी इस कृति को अपने पास सुरक्षित रखने का प्रयास करता था । राजस्थान प्रांत में नागदमन की शताधिक प्रतियों का उपलब्ध होना इस बात का प्रबल प्रमाण है ।

प्रस्तुत सम्पादन का काय प्रारम्भ करने पर मुझे 'नागदमन' की लगभग तीस प्रतियों के अषलोकन का सौभाग्य प्राप्त हुआ । यद्यपि ये प्रतियां स० १७१० वि० से लगा कर स० १९९० वि० तक की प्रलम्ब अवधि में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखित एवं सुरक्षित थीं, फिर भी उन प्रतियों में पर्याप्त रूप से पाठ साम्य दृष्टिगोचर हुआ । यदि उनमें कोई अन्तर था, वह या तो प्रतिलिपिकार द्वारा अपने मानबद्ध द्वारा विनिर्मित श्लो के कारण प्रतीत हुआ या फिर बुद्धोद्भ गव्यों के स्थान पर सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण । अत उक्त सभी उपलब्ध प्रतियों के पाठान्तर बेकर पृष्ठमार एवं समय के बुरूपयोग से बचने के लिए उनमें से केवल छह प्रतियों को मूल-पाठ एवं पाठ-मेव की दृष्टि से चुना गया । ये छहों

प्रतियों उपयुक्त सभी प्रतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं । इनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

● 'क' प्रति हस्तलिखित

प्राप्ति स्थान—श्री बद्धमान ज्ञान मण्डार, बीकानेर ।

अनुलिपिकार—बोहरा रामचंद्र ।

अनु लिपि काल—स० १७१७ वि० भाद्रपद कृष्णा ८ शनि ।

अनुलिपि स्थान—अज्ञात

● 'ख' प्रति हस्तलिखित

प्राप्तिस्थान—श्री भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर ।

अनुलिपिकार—मधेन कुशला

अनुलिपिकाल—स० १७५२ वि० द्वितीय आषाढ शुक्ला १२

अनुलिपिस्थान—बीकानेर (अनु०)

● 'ग' प्रति हस्तलिखित

प्राप्ति स्थान—श्री खजांची कला भवन पुस्तकालय, बीकानेर ।

अनुलिपिकार—अज्ञात

अनुलिपिकाल—स० १८०९ वि० पौष कृष्णा ७ गुरु

अनुलिपि स्थान—अज्ञात

● 'घ' प्रति हस्तलिखित

प्राप्ति स्थान—श्री अभय जैन प्र.यालय, बीकानेर ।

अनुलिपिकार—प० गुणसेन गणि तत्त्विय प० यशोलाम मुनि

अनुलिपिकाल—स० १७१० वि० मागशीव शुक्ला ५ सोम

अनुलिपिस्थान—श्री येगलमेर (जसलमेर)

● 'ङ' प्रति मुद्रित

प्राप्तिस्थान—राज्य कवि लखमीरामज हम्मीरवान, पालणपुर ।

सम्पादक—मोतीशर कुलोत्पन्न श्री हमीरवान

मुद्रणकाल—१८ वीं शताब्दी की तीन प्रतियों के आधार पर स० १९८९

वि० में मुद्रित

● 'च' प्रति हस्तलिखित

प्राप्ति स्थान—श्री अभय जैन प्र.यालय, बीकानेर ।

अनुलिपिकार—अज्ञात

अनुलिपिकाल—१९ वीं शताब्दी का पूर्वार्ध (अनु०)

अनुलिपि स्थान—अज्ञात

मूल-पाठ की प्रति

सम्पादनाथ निर्वाचित छह प्रतिियों में क' प्रति प्राचीन एष लक्षण की दृष्टि से शुद्ध होने के कारण इस प्रति का मूलपाठ में उपयोग किया गया है। यद्यपि प्रतिलिपि क कालक्रम से घ' प्रति सभी प्रतिियों से प्राचीन है, पर तु जादि भाग के चौबीस छ' द नुदित होने के कारण इसको मूल पाठ का आधार नहीं बनाया जा सका।

पाठ भेद की प्रतिया

पाठ भेद के लिए निर्वाचित प्रतिियों की प्रतिलिपि के कालक्रमा नुसार न रखाकर पाठ की निम्नतम स्थिति के अनुसार रखा गया है।

पाठ भेद अवन

पाठ भेद के रूप में प्रतिलिपिकारों के श्लोगत विभेद को अंकित नहीं किया गया है। जबल उहीं पाठों को पाठ भेद के रूप में स्वीकार किया गया है जिनके द्वारा या तो मूल शब्द के स्वरूप की पुष्टि होती हो या जिनके द्वारा अलगत विशेषता प्रगट होनी हो। उक्त छहों प्रतिियों में से जिन प्रतिियां में कम या अधिक छ' द उपलब्ध होते हैं उन्हें यथास्थान 'नहीं है' व 'अ० पा०' के संकेत द्वारा दिखाया गया है।

श्लोगत विषमताओं का परिहार

(अ) राजस्थान के प्रतिलिपिकारों के द्वारा सपुक्त या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त 'इकार' या 'ईका' को सर्वत्र दीर्घ लिखने की परम्परा रही है इसी प्रकार सपुक्त या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त 'उकार' या 'ऊकार' को लृप्त लिखा गया है। परंतु मूलपाठ में उक्त दोनों स्वरों का छ' द अथवा ध्याकरण क अनुसार जिस स्थान पर जसा रूप होना चाहिए, कर दिया है।

(आ) राजस्थान के कई प्रतिलिपिकारों ने 'ऊ' के स्थान पर 'बु' लिखा है परंतु मूलपाठ में उसे 'ऊ' ही स्वीकार किया है। यथा—'ऊमो' क स्थान पर 'बुमो' न लिखकर उसे 'ऊमो' ही लिखा गया है।

(इ) राजस्थान के प्रायः प्रतिलिपिकारों ने 'ड' या 'ढ' के स्थान पर सबत्र 'ड' ही लिखा है, इसी प्रकार 'ल' या 'ळ' के स्थान पर सर्वत्र 'ल' ही लिखा है। परंतु मूलपाठ में उसे ध्वनि के अनुसार 'ड' एवं 'ळ' कर दिया गया है।

(ई) राजस्थान के सभी प्रतिलिपिकारों ने सामानासिक ध्वनि एष

अनुस्वार को प्रकट करने के लिए सवत्र शिरोबिन्दु (मस्ते) का प्रयोग किया है। अतः मूलपाठ में जो उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया है।

(उ) राजस्थान के कई प्रतिलिपिकारों द्वारा अनुनासिक यणों से पूर्वके वण पर शिरोबिन्दु (मस्ते) का प्रयोग दृष्णोच्चर होता है। परन्तु मूलपाठ में उसे स्वीकार नहीं किया गया है। यथा—‘मुण’ या ‘राणी’ को ‘मु णै’ या ‘राणी’ न लिखकर ‘मुणै’ या ‘राणी’ ही लिखा गया है।

(ऊ) नागवमरा की कई प्रतियों में ‘ओ’ के स्थान पर ‘अउ’ एवं ‘ऐ’ के स्थान पर ‘अइ’ का प्रयोग भी देखने में आया है, जो छद विधान के अनुसार उपयुक्त नहीं है। अतः मूलपाठ में उक्त दोनों स्वर्गों को यदि वे शब्द के अंत में प्रयुक्त हुए हैं (केवल सवोचन या तिरस्कारवाची शब्दों को छोड़कर) तो उनको सवत्र ‘ओ’ या ‘ऐ’ लिखा गया है और यदि वे शब्द के मध्य में प्रयुक्त हुए हैं तो उन्हें यथा स्थिति ‘ओ’ या ‘औ’ एवं ‘ए’ या ‘ऐ’ लिखा गया है।

आलोचनात्मक अध्ययन

आलोचनात्मक अध्ययन में जिन जिन सदभद्रों एवं जिन जिन महानुभावों के अमिमत का उपयोग किया गया है उन सब का यथास्थान पाठ टिप्पणियों में उल्लेख कर दिया गया है।

हिन्दी भाषा

हिन्दी भाषा लिखते समय मूल शब्दों के निकटतम ध्वनित अक्षर पर ही अधिक बल दिया गया है तथा अपनी ओर से कल्पित शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया गया है। यदि किसी स्थल पर शब्दावली ठीक होने पर भी कोई भाव अस्पष्ट रह गया है तो वहाँ उसे ‘अर्थात्’ करके सुस्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

आवरण पृष्ठ का चित्र

आवरण पृष्ठ पर अंकित चित्रों में से मध्य भाग का चित्र मडोवर से प्राप्त एवं जोधपुर के सरदार म्पूजिपन में सुरक्षित गुप्तकालीन स्तूप, इसके बाहिने भागवाला चित्र मद्रास में प्राप्त छाठवीं शताब्दी की वास्तव्य भूति एवं बायें भागवाला चित्र आधुनिक लीला भवन की, सरल रेखानुवृत्तियाँ हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति को अधिक से अधिक उपादेय एवं बोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया गया है। इसे सफल बनाने में शोध प्रतिष्ठान के वरमान सचालक श्रीमान् सत्यनारायणजी पारीक एम ए के

निर्देशन, श्री नरोत्तागदास जी स्वामी एम ए , श्री उदयरामजी उज्वल, श्री चन्द्र दानजी घारण एम ए , श्री बट्टीप्रसादजी साकरिया श्री सूर्यशंकरजी पारीक और श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया के सुझावों एवं श्री अमय जन प्रयालय, बीकानेर के सचालक श्री अजरब दजी नाहुटा, श्री लजा जी कलामवन पुस्तकालय, बीकानेर के सचालक श्री मोतीचंदजी खजाची, श्री अनूप सश्रुत पुस्तकालय, बीकानेर के श्री बाबूरामजी सक्सेना और प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के उपसचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा के सहयोग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । एतदर्थ में उन सभी महानुभावों का आभारी हूँ । जत से मैं राजस्थान वालभारती के प्रिंसिपल श्री रामेश्वरप्रसाद जी पांडिया एम ए का विनोद रूप से कृतज्ञ हूँ, जि होने समयमात्र की स्थिति से भी समय निहालकर प्रस्तुत ग्रंथ की विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखने का कष्ट किया है ।

—मूलचन्द 'प्राणश

भूमिका

साया भूजा कृत 'नाग दमण' १७वीं शताब्दी में लिखी डिगल साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं में से एक है। साया झूल' चारण कवि थे। आपको ईडर राज्य में राज्याश्रय प्राप्त था। बाल्यकाल में ही आपको रचित भगवद्भक्ति में जागृत हो चुकी थी। अवस्था के साथ साथ इसका विकास होता गया। आपको अपनी प्रत्युत्पन्नमति तथा शक्ति भावना के कारण तत्कालीन चारण तथा राज समाज बड़े सम्मान की दृष्टि से देखता था। चारण कवि श्री साया जी के लिखे जो 'प्रथम जल्प' हुए हैं—'रथमणी हरण' और दूसरा 'नाग दमण', नाग दमण की रचना रथमणी हरण के पदचातु हुई है। कवि ने इसको अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में लिखा है। अतः इसमें भाषा प्राञ्जल्य एवं भाव प्रौढ़ता का होना स्वाभाविक ही है।

भारतीय साहित्य एवं जन जीवन में राम और कृष्ण इन दो प्रसिद्ध अवतारों का बड़ा महत्व है। निराशा और भगवान् हिंदू जनता के जीवन में आना एवं उस्ताह का संचार करने हेतु मनीषी भगवद्भक्त कवियों ने इन दोनों अवतारों के जीवन की लोक रजन एवं लोक मंगल कारी विविध लीलाओं का चित्रण अपने काव्य में किया है। कृष्ण की लीलाओं में नाग दमण, नाग लीला, कालीय बह लीला अथवा कमल लीला का विशेष महत्व है। इसका वर्णन भागवत पुराण, विष्णु पुराण, पद्म पुराण, हरिवंश पुराण एवं ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी प्राप्त होता है। कवि की दृष्टि विलक्षण होती है। इन विभिन्न स्थलों से प्राप्त कथामामयों को ग्रहण कर वह अपने युग के आलोक में उसको अभिव्यक्त करता है। जिसे वे सब प्रथम कालिंद दमन लीला की अवतारणा कृष्ण लीला के अमर गायक महाकवि सूरदास के गीतों में हुई। नाग दमण लीला से हिंदी तथा गुजराती के अनेक कवि प्रभावित हुए और इन्होंने मुक्तकंठ से इन कथा प्रसंग को लेकर अनेक गीत गाए। नरसी मेहता सूरदास के समकालीन कवि थे। उन्होंने भी इस लीला का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। शताब्दियों अतीत के श्रधकार में विलीन हो गई, किंतु नरसी कृत नाग-दमण के गीत आज भी लोगों की जवान पर सुने जाते हैं। साया जी कृष्णव भक्ति धारा से सरसित गुजरात के ही संपुत थे। उनकी नाग दमण

रचना आज भी वहाँ के लोक कठों में समायी हुई है ।

नाग दमण की गणना छड काव्य के अंतर्गत आती है । प्रथम काव्य अवयव छड काव्य के प्रारम्भ में मगलाचरण एक काव्य परम्परा रही है । मगलाचरण तीन प्रकार के होते हैं । (१) नमस्कारात्मक (२) आशीर्वादात्मक एवं (३) वस्तुनिर्देशात्मक । इस काव्य का प्रारम्भ भी निम्नलिखित पक्तियों से होता है—

बळ वो सादर वरणवू, सारद करी पसाय ।

पवाडो पानगा सिर, जदुपति कीधी जाय ॥

कवि मगलाचरण की प्रथम पक्ति में बुद्धि की अधिष्ठात्री मातेश्वरी शारदा से कृपारूप आशीर्वाद की याचना करता है ताकि वह कालिय नाग के सिर पर घड़कर कृष्ण द्वारा किए गए युद्ध चरित्र का गान कर सके । दूसरी पक्ति कथा वस्तु की ओर निर्देश करती है । इसमें आशीर्वादात्मकता के साथ वस्तु निर्देशन भी है । अतः इस मगलाचरण की आशीर्वादात्मक वस्तु निर्देशक मगलाचरण कहना ही उचित होगा ।

‘नाग दमण’ का कथानक पौराणिक है । इस पौराणिक कथा के माध्यम से कवि अपनी युगानुकूल भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है । साँया झूला मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे । इतिहासकारों ने अकबर के शासनकाल की उत्तम बताने में कोई सकोच नहीं किया है । ऊपर की दृष्टि से अकबर का शासन चाहे भय एवं शानदार रहा हो, परन्तु सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से उत्तम नहीं कहा जा सकता । समाज गरीबी एवं बंध का शिकार था । तुलसीदास जी की पश्तियाँ भी यही बताती हैं—‘मिखारी को न भीख, न धाकर को चाकरी ।’ दीन-इलाही धर्म की स्थापना के साथ साथ हिन्दू संस्कृति का लोप होना प्रारम्भ हो गया था । मुगल बादशाहों द्वारा हिन्दू संस्कृति एवं समाज पर गहन शन होने वाले इस पदाघात की ओर भक्त कवियों का ध्यान गया और उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से संस्कृति उद्धार एवं समाज कल्याण के गीत सुनाने प्रारम्भ किए ।

भारतीय ग्रामीण समाज में पशु धन का बड़ा महत्व है । पशु धन में भी गौ धन का विशिष्ट स्थान है । समाज की संपन्नता तथा विपन्नता का मापवण्ड पशुओं की सख्या ही है । मुगल शासनकाल में गौ हत्या का प्रचलन था । उदार मुगल बादशाहों के गौ हत्या निषेधाज्ञाओं की अवहेलना मुगल सामंतों द्वारा होती रहती थी । साँया-झूला ने नाग दमण में गौ महत्ता के प्रसंग की काल्पनिक सृष्टि कर इस पशु धन की रक्षा का स्पष्ट संकेत किया है । नागराजों को स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं कि—

चव मास, भ्राता वि है धेा चागी, वहै आज ते नागणी मूक्ष वारी ।
सुरमी तणी नागणी ऊच सेवा, गळै अध्व वाधा गुरी नेह गेवा ॥

अध विनागिनी मोक्ष दायिनी गौ व सांस्कृतिक स्वरण को बताने के पदचातु कवि कृष्ण से इस पशु के आधिक महत्व पर भी प्रकाश डलवाता है । गौ रस से क्या नहीं बनना ? अनेक तरह के खाद्य पदार्थ तैयार किये जाते हैं । ब्रज के पेड़े मिथी मावा तो यान भी प्रसिद्ध है ।
दही दूध रावा ची आ सुसदाई, मठा घोळिया खाड खोहा मळाई ।

औद्योगिक विकास का आकाशी आज एा भारत यत्र युग मे
इवाप्त ले रहा है, पर तु कवि के समय का भारत गोबर युग में था ।
सत्कालीन सारे आधिक समाज का दावा कृषि पर ही निर्भर था ।
हलकृषण का मुख्य साधन बल ही थे । इस सारी भारत रूपी पृथ्वी का
मार बल के कर्षों पर ही था । कवि गौ के आधिक महत्व की चर्चा करते
हुए बलों की उपयोगिता पर प्रकाश डालना है ।
अवनी तणो भारि ले कव आयी, जुवो नागणी ते हुतो गवु जायो ।
खळा हळा नागळा पाण खेती, अम नागणी हाय मे आय एती ॥

इस महत्वपूर्ण गौधन को चराने की चारी श्रीकृष्ण की है और
इसकी रक्षा करना ये अपना परमधर्म समझते हैं । कालिय नाग ने यमुना
के सारे जल को विषाक्त कर दिया है । इस जल का पाव करने से गौ
बछड़े सब मर जाते हैं । गौ हयारे इस कालिय को मार कर गौओं को
बचाना ही कृष्ण अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं । इस काव्य के माध्यम
से कवि परोक्ष रूपेण यही कहना चाहता है कि अत्याचारियों द्वारा मारी
जाने वाली गौ या पशु धन का संरक्षण करना हर भारतीय कृष्ण का प्रथम
कर्तव्य है ।

इसके अतिरिक्त कवि कृष्णव भक्त है । इस कथा के माध्यम से
वह अपनी भक्ति भावना का प्रवागम करता है । कृष्ण जीवन की इस माधुर्य
भरी ओजस्वी सीला का गान करना ही कवि का लक्ष्य है ।

प्राचीन आचार्यों ने शास्त्रीय दृष्टि से काव्य के अनेक भेद किए
हैं । मुख्य भेद प्रबध और मुक्तक हैं । कथा यथ की दृष्टि से प्रबध
काव्य को भी दो भागों में बाटा गया है । महाकाव्य और खड काव्य ।
नाग-दमन की रचना कृष्ण जीवन की एक विशिष्ट कालिय दमन की घटना
को लेकर हुई है । अत इसकी गणना खड काव्य में ही करना समीचीन
है । घोरगाथा काल में रस प्रधान कथा काव्य को 'रासो' नाम से
अनिहित किया जाता था । मराठी और इंगल साहित्य मे एक 'पवादा'
नामक काव्य का प्रकार भी पाया जाता है । पवादा उस काव्य को कहते

हैं जिसमें युद्ध चरित्र का गान हो । 'नाग दमन' रचना को भी पवाडा की सजा दी जा सकती है । कवि ने भी प्रारम्भ में इस चरित्र को पवाडा सजा से अभिहित किया है—

पवाडो पनगा सिरै, जदुपति कीघी जाय ।

पवाडा वीर रस प्रधान काव्य होता है । वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है । कवि की भक्ति भावनाएँ इस काव्य में स्थान स्थान पर प्रकट हुई हैं । काव्य में भक्ति भावना के प्राचुर्य एवं प्राथम्य को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि पवाडा' शायक अपने मशहूर कवि को नहीं दबा सका है । भक्ति में शान्त रस रहता है । इस काव्य कथा की समाप्ति कालिय की व्रज घोषिकाओं में घुमाकर, नद के आंगन में फिराने के साथ होती है—ताकि वहाँ की रजस्पर्श से उसकी देह धिता दूर हो जावे— अर्थात् उसकी भक्ति मिले । इस प्रकार इस लघु कथा काव्य का पयवसान शांत भाव के साथ होता है ।

प्राचीन आचार्यों ने काव्य की परिभाषा करते हुए रस को ही काव्य की आत्मा बताया है । नाग दमन भक्ति भावना से पुरित होते हुए भी वीर रस प्रधान काव्य है । प्रथम के प्रारम्भ में भगलाचरण करने के पश्चात् कवि दूसरे ही छंद में कृष्ण क साहसपूर्ण कार्यों को याद करता है ।

प्रभू घणा चा पाडिया, दैत्य वडा चा दत्त ।

के पालण पोडिया, के पय पान करत ॥

अतः इस काव्य को भक्ति भावना से प्रेरित पवाडा काव्य कहें तो कोई अनुचित नहीं होगा ।

काव्य की कथा का प्रारम्भ माता यशोदा द्वारा सोमे कृष्ण का गो चारण के लिए जगाने से होता है । कृष्ण और बाल-बाल हर्षित होकर जंगल में जाते हैं । यमुना के किनारे गौए घास चर रही हैं । सारा गोप समाज खेल खेलने को आतुर है । कृष्ण इस टोली के नायक हैं । चारों तरफ उत्साह और उमंग का मातावरण है । देखते ही देखते दही-नोडिये का खेल प्रारम्भ हो जाता है । उत्साह में आकर खिलाडी ने जोर से टोरा (hit) लगाया और गेँद यमुना में जा पड़ी । यमुना में महा पराक्रमी कालिय नाग का निवास है । गेँद उसके आवास में पड़ गई । वहाँ से गेँद लेकर आना साधारण काम नहीं । सारा बाल समाज स्तब्ध एवं बेचन है । कृष्ण के हृदय में वीरत्व जागृत हुआ । गौ-हरियारे कालिय की भारने का उपयुक्त अवसर जानकर वे यमुना के नाग कुंड में कूद पड़े । यहाँ से दही-नोडिये खेल की समाप्ति तथा दूसरा खेल कृष्ण कालिय-

पुत्र प्रारम्भ होता है ।

कृष्ण के नाग-कुण्ड में डूबते हा वातावरण में परिवर्तन आता है । बाल-मुलम क्रीडा से उत्पन्न हर्षोत्साह का वातावरण विदाद और भय में बदल जाता है । इस घटना से ग्वाल बाल तथा नगर निपातियों में जो एलबसी मधी उसका प्रभावपूर्ण घणन निम्नांकित पक्तियों में देखिए ।
जदूनाथ काळी समी वाय जोडे, घणी भोम चाली चढी वात घोडे ।
ऊभा गाय गोवाळ भूरत आर, हा हा कार हक्कार ससार सारै ॥

यह दुखद समाचार माता यशोदा के बानों में भी पडा । इसे सुनते ही माँ के ममता भरे हृदय पर आघात पहुँचा । उसका दिल टूट गया, शारीरिक शक्ति नष्ट हो गई । वह धम्म से गिर पडी । चतुर सखियाँ घटनास्थल पर माता यशोदा को ले गई । यशोदा में अधिक चयने की शक्ति अब कहाँ थी ? वह तो रास्ते में ही थक गई । कवि ने पुत्र-शोक से विह्वल माता यशोदा के विलाप का घटा ही मार्मिक घणन किया है ।

सुप्यो वात आघात माता सनेही, जसोदा ढळी बढळी खभ जेही ।
सबाहै सखी लार हाली सयाणी, रहावी विचाले थकी नद राणी ॥

× × ×

विहू लोचन नीर धारा बहती, कनयो कनैयो यशोदा कहती ।
कालिंदी तणी आई लोटत काठ, गयो जाणि चिंतामणि रक गाठे ॥

विप्रसन्न या वियोग का वाक्य में बड़ा महत्व है । कवियों की आत्मा वियोग घणन में खूब रमी है । मक्त कवियों में सूर और जायसी तो अपना सानो नहीं रखते । आधुनिक कवि सुमित्रानन्दन पंत भी 'वियोगी होगा पहिला कवि' कह कर वियोग का महत्व बताते हैं । वियोग घणन एव ऐसा शंवाल जात है कि उसमें उलझने के बाद उससे निकलना मुश्किल होता है । साधा मूला सिद्धहरत कवि हैं । उन्होंने नागवमण रचना में वियोग घणन में दो तीन पद ही लिखे हैं । वियोग-घणन इस काव्य में चाहे थोडा हो, परंतु जो है वह बहुत ही प्रभावोत्पाक है । कवि की कुशलता इसी में है कि वह वियोग के अज्ञान में अधिक न फस कर कथा को धडे स्वामा-विक ढग से आगे बढ़ाता है । वह यमुना के कछार में लडे मय सतस माता यशोदा एव गोप समाज से पाठक का ध्यान तुरन्त हटाकर यमुना में नाग कुण्ड की ओर आते श्रीकृष्ण की ओर खींच लेता है । कृष्ण यमुना मचन करते हुए नागराज के महल की ओर आते दिखाई देते हैं । यह देखकर

शारा गोप समाज घबरा जाता है । कृष्ण के माता पिता तथा सभी सगा सौट भाते की प्रायमा करते हैं, परन्तु अत्याचारी जातिय की मारने की उत्कट इच्छा रखने वाले कृष्ण एक भी नहीं गुनते । वे गहरे पानी में बैठ कर नागराज के महल में पहुँच जाते हैं । महल में नागराज सोया हुआ है । नागरानियाँ अपने कंधा में बठी हैं । कृष्ण को वहाँ बेस उसके कमलावहय पर मुग्य हो जाती हैं । कृष्ण के तोहरजनकारी रूप चित्रण का इस दृश्य में विगिष्ट स्थान है । नाग परिवर्णा कृष्ण रूप वणन करती हुई कहती हैं कि सुन्दर सलीने इयामल रूपवारी कृष्ण के जान मुक्ता जटित कर्णामुषण से गुणोमित हैं । शरीर पर मगाचित पीताम्बर ओढ़े हैं । गले में मुक्ताहार, गु कमाल तथा बेहरि नल बहुत ही सुन्दर लगते हैं । बाहुओं में यद्य मणि युक्त बाजूबद तथा सुन्दर बीमती रत्ना से जटित मणिबद नागरानियों की हृष्टि घोर लते हैं । हाथ की अगुली में पहिनी मूत्रिका उनके चित्ताकषण का विशेष केन्द्र है । नागरानियों के मुह से आमुषण वणन तरबालीन सामाजिक बमज एव नारी सुलभ आमुषण प्रथ का परिघायक है । आमुषण सौन्दर्य वृद्धि का साधन है । वास्तविक सौन्दर्य तो मनुष्य की आकृति एव मानसिक गुणों पर निर्भर करता है । कृष्ण धीरोत्त एव विरोधित गुणों से तो युक्त हैं ही उनके शारीरिक सौन्दर्य का चित्रण निम्नांकित पक्तियों में देखिए ।

इल नासिका सिध्व दीपक ऐरी, कली चप जाण लळी लप केरी ।
 नवा नेह दीरघ्य पक्कज नेत्र सोभा मीन खजन मुगा सहेत्र ॥

कृष्ण के इयाम सलीने रूप पर मुग्य नागरानियाँ कृष्ण की चपरिपति से विरमित हैं । कृष्ण के प्रति उनके हृदय में सहानुभूति जागृत होती है । वे पूछती हैं—अरे तू यहाँ कहाँ से आ गया, यहाँ क्या काम है ? क्या तू रास्ता भूलकर सप के घर आ गया है ? हाथ हाथ आज यह बकरी बाघ की गुफा से कहाँ से चली आई ? इस प्रकार नागरानियाँ बहुत समझाती हैं, डराती हैं परन्तु कृष्ण बिल्कुल ही वय विचलित नहीं होते । बड़े आत्मविश्वास के साथ वह कहते हैं— मैं सबसे प्रतीक्षा में खड़ा हूँ । हे नागिन ! तुम जाओ और जल्दी ही नागराज को जगादो । आज हम यही अन्वाटा रचेंगे । युद्ध में हार जीत तो भगवान के हाथ हैं ।

युद्ध वणन हिन्दी के आदि साहित्य की एक बहुत बड़ी विशेषता है । युद्धों का सजीव एव सांगोपांग चित्रण वीरगाथा काल का अत्यन्त मिलना सुलभ है । मक्त कवि साँया जी ने प्रस्तुत रचना से युद्ध वणन को

स्थान दिया है। युद्ध में विजय के महत्त्व का अनुभव कराने हेतु विजित के शौर्य और पराक्रम का दिग्दर्शन कराना नितांत आवश्यक है। नाग दमण में युद्ध कृष्ण एव नागराज के बीच हुआ है। कवि ने नागराज के शौर्य का वर्णन नागरानियों के मुह से ही करवाया है—

इसो आज ते कौण भूलोक आछ, काळी नागसू जुध सग्राम काछ ।
 चढ़ै कृष्ण काळी तणी सीम चाप, काळी नाग हू आज ही कस काप ॥

अपने युग के महापराक्रमी योद्धा कस को कषा देने वाले कालिय नाग को भीषणता का वर्णन तो अत्यंत दशनीय है।

जाळ त्रिख्य नीला वहै विख्य जाला, वदन्न सहस्सै वध व्योम व्याला ।
 वडा शृंग सीतंग हेमंग वाळा, जिरी फूक आगी भरै टूक फाळा ॥

इस बुद्धय भयानक नागराज को कौन जगावे ? कैसे जगावे ? यह गभीर प्रश्न सभी के सामने खड़ा हो गया। आखिर नागरानी के अनुरोध पर स्वयं कृष्ण ने मुरलीवादन शुरू किया। मुरली का स्वर सप्त पाताल भेदी था, उसका स्वर स्वयं देवताओं को भी सुनाई पड़ा। इस महानाद को सुनकर दुष्टों का हृदय कषायमान हो उठा। अज्ञ निवासी इस स्वर से अमृत पान करने लगे। इस महा भयानक सिंधु राग को सुनकर अत्यंत क्रोधित, समस्त फणों को ऊंचा उठाए, फुकार करते हुए नागराज अपने दरबार में आया और उसने कृष्ण को अपनी पूछ के परकोटे में घेर लिया। डक डक करते कालिय ने कृष्ण पर प्रहार करने प्रारम्भ किये। कृष्ण के हाथ कालिय नाग को गदन के पास थे। वह एक गारुड़ी की तरह दिखलाई देते थे। इस द्वंद्व युद्ध की देखने सारा नाग समाज एकत्रित हो गया। नागरानियां भी वहाँ उपस्थित थीं। कोई भी भारतीय नारी अपने सामने किसी अन्य पुरुष द्वारा पति को अपमानित होते तथा पीटे जाते हुए नहीं देख सकती। किसी पुरुष को उसकी पत्नी के सामने अपमानित करना उस नारी का निरादर करना है। इसी कारण कृष्ण कालिय को उसके दरबार से बाहर निकालकर यमुना के गहरे पानी में लें गए। वहाँ धीकृष्ण ने अपने प्रहारों से नाग को बुरी तरह घायल किया—

मच मूठ मारा शरै श्रेण शारा, फणारा घणारा कर फूत्रकारा ॥

इस जबरदस्त मार को सहने की शक्ति कालिय में न रही। वह आतंताद कर उठा। धीकृष्ण के प्रहारों से वह बेहोश हो गया और छोटी नाव की तरह पानी में तैरने लगा। कालिय एक अत्याचारी नाग था। अत्याचारी के मरने पर सुर, नर आदि सभी को खुशी होती है।

धीकृष्ण के हाथ में कालिय नाग का सिर बेलखर बंधगण भी अपने रथों को
रोक कर लड़े हो गए ।

वीर काव्य में युद्ध सामग्री का भी बड़ा महत्त्व है । कवि ने कृष्ण, नाग
रानी सथाव में समरोचित सामग्री का भी वणन किया है। तत्कालीन युद्ध में
हथ-बल पहल, हस्तीबल आदि का होना आवश्यक था । इसके अतिरिक्त
शरीर रसाय धातुबद्ध तथा बहतर का भी महत्त्व था । अनेकानेक शस्त्रों
का प्रयोग उस समय किया जाता था । नौचे की पत्तियों में कवि ने युद्ध
सामग्री में अनेक शस्त्रास्त्र एव वाद्यों के नाम बताये हैं ।
फिर डबरी सैय नहीं फरस्सी कड चोल कट्टार कस्सी न कस्सी ।
टकारी न भारी न अडारटाकी, पापण न बाण न कमाण बाकी ॥
नफेरी न भेरी न निस्साण-नद्दा, रिणतूर बाज न गाज रवद्दा ।

अत उपयुक्त वणन के आधार पर यह तो निस्सकोच कहा
जा सकता है कि कवि को युद्ध एव युद्धोचित सामग्री का ज्ञान था । इसके
साथ साथ यह कहने में भी सकोच अनुभव नहीं करना चाहिए कि कवि
की धारणा कृष्ण कालिय दृढ़ युद्ध चित्रण में अधिक नहीं रमी है । इसका
मूल कारण समभवत कवि का भवत होना है । भवत कवि इस युद्ध में एक
क्षण के लिए भी अपने धाराध्यवय की बचट में बेसना नहीं चाहता ।
इसीलिए कालिय के प्रहार कृष्ण की मूल छडी की तरह भावूम हो रहे हैं ।

साया भूला प्रधानत भवत कवि हैं । यद्यपि इन्होंने प्रयारम से
ही उरसाहूण वातावरण में बालकृष्ण के शीघ्र एव पराक्रमपूर्ण कार्यों
का चित्रण किया है फिर भी समग्र प्रथ का सम्यक अवलोकन करने के बाव
इसी निष्कण्ड पर पहुँचते हैं कि शीघ्र गान गायक कवि भवत हृदय पर
विजय नहीं पा सका । भवत कवि ने इस प्रथ में स्थान स्थान पर बाल
कृष्ण पर देवत्व का आरोप किया है । प्रथ के प्रारम्भ में ही कृष्ण को
प्रभु कहकर संबोधित किया गया है वह दूसरों को जीवन भरण के
बधन से मुक्त कराने वाला है । अदनी मार उतारवा जायो एण जुगति'
कहकर कवि ने प्रथ के प्रारम्भ में ही कृष्ण को भवतार मान लिया है ।
कवि सामान्यत बालक कृष्ण का वणन करते हुए पाठक को एक उस्ताही
पराक्रमी तथा वाक् धतुर बालक का परिचय देता है । यह परिचय बते
बते कवि के अन्तमन में सोयी सक्ति भावना जागृत होती है और अनेक
प्रसंगों की सृष्टि कर बाल-कृष्ण के ईश्वरत्व की ओर संकेत करता है ।
कृष्ण के बाल रूप पर मुग्ध होकर नागरानियों ने सहानुभूतिवण कालिय
से बघाने के लिए बाल कृष्ण को अपने महलों में छिपाने के लिए कहा तो

स्वयं श्रीकृष्ण ने निम्नांकित पक्तियों में अपने आपको विराट् बताया है ।

रहा तो घरे दाव दूज रहावू, भोरो घाट वैराट एथे न मावू ।

कृष्ण पार्थिव रूप में तो मथुरा में रहते हैं परन्तु वास्तव में उनका निवास तो मत्स्य के हृदय में है—‘अमारा भगता तथां एह ओरा’ पक्तियों द्वारा गीता के इस प्रसिद्ध कथन को घाव दिलाई है—‘नाऽह वसामिबकुठे भक्त हृदये वसाम्यहम् ।’ इसी प्रकार नागरानी सवाद, नागरानियों द्वारा कृष्ण पूजा नारद द्वारा स्तुति गान आदि अनेक ऐसे प्रसङ्ग कृष्ण के देवत्व की ओर संकेत करते हैं । सारा का सारा प्रथम कवि की भक्ति भावना से भरा पडा है ।

प्रकृति चित्रण का काव्य में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है । कविगण हमेशा से ही प्रकृति की गोद में बसकर उससे प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं । प्रातः, संध्या, सूर्य, चंद्र, नदी, जंगल, पर्वत आदि अनेक प्राकृतिक उपकरणों के साथ अपना रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कर उनके विभिन्न स्वरूपों की प्रवतारणा काव्यात्मकता के वद्धन में सहायक होती है । प्रस्तुत रचना नाग-दमन में कवि के सामने अनेक ऐसे अवसर आये हैं जहाँ वह प्रकृति चित्रण कर सक्ता था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ । प्रातः गोचारण की जाते समय ऋषा काल एवं उगते सूर्य का ग्वाल बाल के खेनते समय जंगल का संध्या समुना नदी का थोडा बहुत चित्रण हो जाता तो अच्छा था । ऐसा प्रतीत होता है कि कवि के हृदय में प्राकृतिक सुषमा के प्रति कोई आकर्षण नहीं है । कवि युद्ध सामग्री की परिगणना का अवसर तो नागरानी कृष्ण सवाद की रचनाकर प्राप्त कर लेता है, परन्तु प्रकृति चित्रण का सहज स्वाभाविक ढंग से अवसर प्राप्त होते हुए भी काव्य के इस पक्ष की ओर ध्यान नहीं देता ।

भाषा प्रौढ़ता का निकटतम उदाहरण सश्लिष्ट स्वरूप है । थोड़े से शब्दों में भावों को बाँधकर रखना भाषा पर पूर्ण अधिकार रखने वाले कवियों का ही काम है । नागदमनकार का भाषा पर पूर्ण अधिकार है । इसी कारण इस काव्य में सवाद सौष्ठव्य एवं शब्द चित्रों की योजना बड़ी सफलता से साथ बन पड़ी है । ‘असोदा दूता कदली खम जेही’ में माता पशोदा की कृपता एवं गिरने का बड़ा सफल चित्रण है । ‘लिपां लच्छोडी कप ऊमा हुलास’ की शब्दावली पढ़ने से आँखों के सामने खेलने की आतुर लिलाचियों का चित्र तो लिखता ही है, परन्तु हुलास शब्द का प्रयोग उनकी मन स्थिति का भी परिचायक है । सूक्ष्म को स्थूल रूप देना आधुनिक युग के छायावादी कवियों की एक विशेषता रही है, परन्तु १७वीं शताब्दी

में मांगवमणहार ने इसका बिलनी कुणसता के साथ प्रयोग किया है, यह द्रष्टव्य है—'दली मोम वाली चढ़ी बात छोड़' में बात की प्रसरण गति का चित्रता लड़ा ही जाता है। 'तो प्रकार 'पढ़ी होतबी आम ही साथ पा' में कृष्ण की गुणुमारता तथा जातिप नाग की मयानकता का चित्रण है। 'तारी गाठियों घूठ दूजी ग साथो' में भा. व्यंग्यारमक भाषों की चढे कुणसता के साथ सांधा गया है। 'हरी हो हरी हो हरी धन हाँ' में गोआ को हाँकने का हृष्य उपस्थित करने में तो कवि ने कमास दिखाया है। इससे अतिरिक्त सवाद रचना में भी कवि को बड़ी सफलता मिली है। नीचे की पंक्तियों में नागरानी और कृष्ण के बीच प्रश्नोत्तर की भट्टी बतिए—

बठा हैत आयो अठ बाज वेहा, ग्रहा भूलियो वापरी गाप गेहा ।

कृष्ण उत्तर बते हैं—

भली नागणी नावियो राह भूली, देवो आपरी लाज लीधो दहूली ॥

आगे फिर कृष्ण कहते हैं—

खट्टकै मु है नागणी बोल सारी, प्रभू जागसी मूझ पाछा पधारी ।

नागिन फिर कृष्ण को समझाती हैं—

वाळी नाग सू लीजिए वेगि कानी, पढ्यो तात सोझै चढे मात पानी ।

इस प्रकार छंद स० ३० से लेकर छंद स० १३ तक में सबारों की छटा मरो पढी है। एक ही पद में प्रश्न, उत्तर, प्रत्युत्तर का समा-सा बंध जाता है। यह सब नापा पर अमित अधिकार होने से ही सम्भव हो सकता है।

चित्रोपमता भी इस काव्य की अपनी विशेषता है। इस काव्य का प्रारम्भ भी मंगलाचरण के पश्चात् गधचित्र से ही होता है। नीचे की पंक्तियों में माता यशोदा द्वारा कृष्ण को जगाने दधिमधन करने, तथा मधुखन मांगने जसी अनेक क्रियाओं का चित्रण देखने योग्य है।

विहारू नवी नाथ जागो वहेला, हुयो दोहिवा धेनु गोवाळ हेला ।
जगाड जसोदा यदुनाथ जागो, मही माट घूम, नवनीत मागी ॥

अपने घर से प्रातःकाल गौओं को निकालकर चौगान में लाना और उनको चराकर लाने के लिए ग्वाले को सौंप देना ग्राम्य जीवन की दैनिक प्रक्रिया है। कवि ने इसका बहुत ही सजीव एवं मनोरम चित्र खींचा है।

हरी हाँ हरी हो हरी धेन हाकै, झरूखा चढी नदकुमार झाकै ।
अहिराणिया अक्वला भूल आव, भगवान न धेन गोप्या भळावै ॥

इकी-वेवटी चोवटे आय ऊभी, सभाली लियो श्याम मोरी सुरभी ।
हुई नद री घेन सू घेन हेला, भिल्ले वालवा जाणि श्री गग भेला ॥

नाग-दमण डिगल भाषा की रचना है । इटली के सुप्रसिद्ध भाषा-वैज्ञानिक राजस्थानी भाषा के अन्वय प्रेमो डॉ० तस्तिनोरी ने इस भाषा को अनियमित, गवारू तथा साहित्यशास्त्र का अनुसरण न करी वाली भाषा कहा था । नाग-दमण में डिगल के इस स्वरूप को दखने से उपयुक्त सभी श्रुतियों का निवारण होता है । विद्वान सम्पादक ने इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में इस भाषा का व्याकरण भी दिया है । प्रस्तुत रचना में डिगल भाषा का स्वरूप बहुत ही प्रौढ़, नियमित, शिष्ट एवं व्याकरण शास्त्र-सम्मत है ।

भुजग प्रयात छद का प्रयोग संस्कृत काव्य में बड़ी प्रचुरता के साथ मिलता है । हिन्दी कविता ने इस छन्द की वहीँ से प्राप्त किया है । डिगल भाषा के कवियों ने संस्कृत के सभी वण वृत्तों को अपनाया है किन्तु भी उनका सर्वाधिक शुकव भुजगप्रयात की ओर ही रहा है । इसका कारण इस छन्द का गति वगिट्य है । साधा जी ने इस छन्द का प्रयोग अपने इस ग्रंथ में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक बड़ी कुशलता के साथ किया है ।

डिगल के प्रसिद्ध अलंकार वयणसगाई का निर्वाह करना कोई सरल काम नहीं है । यह तो सिद्धहस्त कवियों से ही सम्भव हो सकता है । क्योंकि इसमें भाषा, छन्द, अलंकार तीनों पर समाप्त रूप से अधिकार होना चाहिए । नागदमण में इसका सुन्दर निर्वाह हुआ है । उदाहरणार्थ निर्माकित पद को देखिए—

मडघो दूसरो खेल खेलत माथ हिव ऊनरी वात गोवाळ हाथ ।
करे तीन खडो नमतेय काना, जोव घेन घट्टीक काठ जम्ना ।

उपयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में प्रथम शब्द तथा अन्तिम शब्द का प्रारम्भ एक ही वण से होता है । इस वण-मन्त्री की ही डिगल कवि वयण सगाई कहते हैं । देखने से यह अनुप्रास का ही एक भेद मान्य होता है । इसके अतिरिक्त उपमा, उपप्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग भी बड़े सुन्दर ढंग से किया है ।

सारंगत नागदमण की संरक्षण का संदेश याहूँ, भाषा सारल्य, सगिलष्ट भाषा शली, चित्रोपमता मधुर मगीताःक छटा एव नाड-सौंदर्य से विभूषित डिगल भाषा का अक्षि भावना से पूरित एक सरस पवाड़ा काव्य है ।

हिन्दी भाषा में साहित्य सृजन का प्रारम्भ स० ७०० से शुरू हो

भूला सायाजी
कृत
नागदमण

झूला सायाजी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राजस्थानी कृष्ण भक्ति साहित्य में झूला सायाजी का विनिष्ट स्थान है। ये शफल कवि होने के साथ-साथ भगवान कृष्ण के अन्वय भक्त भी थे। इसी कारण से इनकी कृतियों में आत्म प्रचार भावना का सबंध अभाव पाया जाता है। अतः साश्य के आधार पर केवल स्वयं के नाम^१ तथा स्वयं के गुरुवच श्री गोविन्ददासजी के नाम^२ के अतिरिक्त जीवन संबंधी कुछ भी सामग्री नहीं मिलती। यह साश्यस्वरूप सम्बन्धित ऐतिहासिक प्रश्नों में अथवा प्रचलित अनुष्ठितियां से कुछ सामग्री उपलब्ध होती है, उसी के आधार पर निम्नांकित पंक्तियों में भक्त कवि की जीवन शक्ति प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

जन्म और वंश-परिचय

भक्तवर झूला सायाजी का जन्म चारण कुल की झूला नामक शाखा के अन्तर्गत वि० स० १६३२ भाद्रपद कृष्णा ९मी के दिन लीलछा नामक ग्राम में हुआ।^३ इनके पिता का नाम झूला स्वामीदासजी था। स्वामीदासजी लीलछा नामक ग्राम के जागीरदार थे। यह ग्राम गुजरेश्वर सोलकी राजा सिद्धराज जयसिंहजी की ओर से इनके पूर्वजों को मिला था।^४

^१ (अ) समवाद कालीतणो यह सारा,

भवे दासदामानु सायो चितारो।—नागदमण, छ० १२१

(आ) कण लीधो जिनी तिमोदु सो हठ करी,

सांडे राखिवो त्याग ब्रज सुन्दरी।—रुक्मिणी हरण छ० २०३

^२ गोविन्ददामरै आसरै जस्स गायो।—नागदमण छ० १०१

^३ लीलछा नामक ग्राम गुजरात प्रांत के प्रसिद्ध नगर ईडर से १२ मील पूव की ओर इन्द्रासी नामक नदी के तट पर स्थित है।

^४ श्री हमीरदान —नागदमण (सायाजी की जीवनी) पृ० १

बाल्यकाल एवं भक्ति संस्कार

सांयाजी बाल्यकाल से ही होनहार प्रतीत होते थे। इनके पिता गव थे इसी कारण से ये भी नित्य प्रति भुवनेश्वर महादेव व बगनाथ जाते थे और भगवान भोतेनाथ की पूजा-अर्घा किया करते थे। अनुष्ठीति है कि—भगवान महादेव ने इनकी धृष्टा एवं भक्ति से प्रवित होकर योगी के रूप में सांयाजी को दान दिया था।

विद्याध्ययन—अभिरचि तथा गुरु

पिता की मृत्यु व उपरोक्त सांयाजी ने ईडर जाकर विद्याध्ययन करने का संकल्प किया। एक दिन जब वे ईडर की ओर जा रहे थे तब सीमाण से इनकी भेंट मुलेमान नामक मुसलमान जमादार से हो गई। वह सांयाजी के व्यक्तित्व से बहुत ही प्रभावित हुआ तथा अपने साथ इन्हें ईडर ले गया और एक ब्राह्मण के घर इनके खाने पीने एवं रहने का प्रबंध कर दिया।

महात्मा हरिदासजी व गणप महात्मा गोविंददासजी इन दिनों ईडर में निवास करते थे। इनकी ख्याति में प्रभावित होकर सांयाजी ने गोविंददासजी का शिष्यत्व ग्रहण करने का निश्चय किया। एक दिन अवसर दलकर इन्होंने म० गोविंददासजी के समक्ष अपना विचार प्रकट किया। इन्होंने सांयाजी की उत्कट अभिलाषा को देखकर ब्रह्मण्य विधि से दीक्षा प्रदान की एवं नियमित रूप से गार्होप्य प्रार्थों के साथ साथ धी मञ्जागवदादि पुराणों का अभ्यास करवाने लगे।

राज्याश्रय एवं राज्यसम्मान

इन दिनों ईडर पर राठीर राव बीरमदेवजी (१६३५-१६५३ वि०) का शासन था।^१ राव बीरमदेवजी प्रत्येक पूर्णिमा की रात्रि में स्वयं से सम्बन्धित कीर्ति काण्ड सुनाने वाले को लाक्षपसाव^२ दिया करते थे। एक समय आलोजी नामक चारण ईडर आये हुए थे। राव बीरमदेवजी ने सत्ता की भांति लाक्षपसाव की तयारी करके आलोजी को बुलवाया। आलोजी तथा राव बीरमदेवजी के परस्पर तबत्तार हो जाने के कारण आलोजी को लाख

^१ ईडर राज्यको इतिहास पृ० १६८

^२ राज्यमान में शासकों की ओर से कवि तथा याचकों को लाक्षपसाव, करोड़ पसाव और अक्षपसाव के रूप में द्रमश उतनी ही सम्पत्ति भेंट करने का प्रचलन था परन्तु बाद में इन पसावों का एक बंधी बंधाई परिषाटी के अनुसार भरण (पूर्ति) कर दिया जाता था।

पसाव नहीं दिया जा सका। राव वीरमदेवजी ने तत्काल किसी अथ कवि को सामे का आदेश दिया। जभादार सुलेमान उचित जवसर देखकर सायाजी को बुला लाया। सायाजी की विलम्ब प्रतिभा देखकर राव वीरमदेवजी आश्चर्यावित हुए तथा उक्त लाखपसाव के साथ साथ रेहडा नामक ग्राम देकर विशेष सम्मानित किया। साथ ही ईडर में इनका तम्बू बंधवा कर राज्याश्रय भी प्रदान किया। राव वीरमदेवजी इहे समय-समय पर और भी अनेक प्रकार के दान देकर सम्मारते सम्मानित रहते थे जिनमे चवालीस हजार के मूल्य का झालाहर नामक घोडा तथा रायपुर से लौटते समय एक हाथी और लाखपसाव का दिया जाना अधिक प्रसिद्ध है।¹

राव वीरमदेवजी की मृत्यु के उपरांत इनके लघु भ्राता राव कल्याण-मलजी ईडर के शासक बने। ये भी राव वीरमदेवजी की तरह भक्तवर सायाजी को अपार श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। एक बार राव कल्याणमलजी स्वयं छोटी सवारी से लोलछा पघारे थे।² इन्होंने भी राव वीरमदेवजी की तरह वि० स० १६६१ में झूला सायाजी को लाखपसाव तथा कुबावा नामक ग्राम शासन में देकर विनोय सम्मानित किया था।

भक्तवर झूला सायाजी का भी राव कल्याणमलजी के प्रति अपार स्नेह था। उनके ब्रजवास्त के समय रावजी को लिखे गये गीतात्मक पत्र के द्वारा ऐसा स्पष्ट ध्वनित होता है। यथा —

गीत सायाजी भूला रो कह्योडो

॥ प्रथम दूहो ॥

मन धारै मळवाह, एचै आवायें नही।

आडा ईडरियाह, काकड घणा कित्याणमल ॥१॥

॥ गीत ॥

आखँ सूर हो सदेश अमीणो,

ब्रज आया किम बळिय।

साम तिया सेहर सामळिया,

मळ तो मधुरा मळिय ॥१॥

¹ फार्से कृत रासमाला का गुजराती अनुवाद पृ० ६६६

² राजम्यान के शासक जन किसी व्यक्ति का विशेष रूप से सम्मानित करके दरबार में बुलाते थे तब वे स्वयं सम्मानित व्यक्ति से छोटी सवारी (वाहन) पर बैठ कर उसके पीछे पीछे चलते थे जिसे छोटी सवारी कहा जाता था।

अकल नहीं अठ कोई अणगम,
 दकल नहीं कोई दरियो ।
 भोनें रव मेळ राव मारु,
 एकारु ईडरियो ॥२॥

रयण समाभ्रम (सरस अठ रव)
 प्रथवी अकल पयाणो ।
 धर भेटवा तणी गोवरधन,
 कहजो करे किल्याणा ॥३॥

शोध प्रतिष्ठान—स्फुट साहित्य संग्रह पृ० १५३

इस गीतात्मक पत्र के प्राप्त होते ही राव कल्याणमलजी ने अबिलम्ब ईडर से मथुरा की ओर प्रस्थान कर दिया था, परन्तु मथुरा पहुँचने से पूर्व ही सायाजी के गोलोकगमन की दुखद सूचना इहाँ मिल जाने के कारण वे आगे न जाकर ईडर लौट आये ।¹ यह घटना वि० स० १७०३ के श्रावण सुदी २ के प्रातःकाल में घटित हुई मानी जाती है ।-

रासमाला में उक्त घटना का काशी से एक पड़ाव की दूरी पर घटित होना बताया गया है² जिसका आधार सम्भवतः गीतात्मक पत्र के द्वितीय द्वाले का अशुद्ध पाठ रहा है । जिसमें—“गग-सनान करण गाढागुर, आव जो ईडरियो” पाठ से गगा का काशी में होना सम्भावित मानकर उक्त घटना का काशी के निकट होना मान लिया गया है । परन्तु भा० वि० म० शोध प्रतिष्ठान द्वारा सकलित हस्तलिखित सामग्री के अंतर्गत जो गीतात्मक पत्र प्राप्त हुआ है उसमें उक्त पाठ नहीं है तथा होना भी नहीं चाहिए । क्योंकि डिगल के छोटे साणोर गीत की यह एक विशेषता रही है कि—प्रथम द्वाले में वर्णित भाव को ही अग्रिम द्वाले में शब्द भेद से परिपुष्ट किया जाता है । प्रतिष्ठान के सकलन द्वारा प्राप्त गीत में यह विशेषता उपलब्ध है अतः इसका पाठ अधिक विश्वास करने योग्य है । इस गीतात्मक पत्र में कवि सायाजी ने राव ^{अशुद्ध पाठ} ~~वेस्मदेवजी~~ को मथुरा ही बुलवाया है । क्योंकि वज्रवास करने के उपरांत किस प्रकार अद्य स्थान की जाया जाय ? इसलिए गोवधनधारी की घर पर भेटने के लिए ही मारु राव से प्रार्थना की गई है ।

¹ श्री हमीरदान — नागदमण (सायाजी की जीवनी) पृ० ४६

² श्री मोतीलाल मनारिया — राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७५-१७६

³ फार्बर्स इन रासमाला (गुजराती अनुवाद) पृ० ६७७

अतः काशी के पास उक्त घटना के घटित होने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

जनमानस पर सायाजी का प्रभाव

मक्त कवि झूला सायाजी सवगृहस्य होते हुए भी अपने जीवन काल में चमत्कारी सत माने जाते थे । इनके द्वारा गाय पर भ्रष्टते हुए घाघ को स्थापित करके गधा बना देना, ईडर के सरोवर पर स्नान करते समय एक भगर की अजुलिदान द्वारा यक्ष का स्वरूप प्रदान कर देना, द्वारिका स्थित रणछोड जी के वस्त्रों में लगी हुई अग्नि को ईडर के दरवार में बठे बठे बुसा देना इत्यादि चमत्कारपूर्ण अनुभूतियां उनकी लोकप्रियता के प्रबल प्रमाण हैं । इतना ही नहीं एक डिगस कवि तो झूला सायाजी को भगवान से भी बढ कर मानता है तथा उनकी पूजा-अर्चा में ही अपना कल्याण मानता है । यथा —

गीत साया भूलारो

पावन मन तिसो भगता पण,
अेहडो सकव थये उदार ।
साइयो एकण वार साभळ,
हर साभळ वार हजार ॥१॥

साया मोह न लागो जे मन,
गढवी तुझ लगो हर ग्यान ।
लीवा भायावत चै (?) लाधै,
सहस नाम फळ एक समान ॥२॥

झूला राव इसो नित झीलै,
किसन गगजळ समोकरि ।
वर दीघो एहवो लिखमीवर,
भगत सहुवै साख भरि ॥३॥

तू गोकळ धर रह निरतर,
रिदै तूझ चरण हू रीत ।
गायस तू गढवी त्रभुवण गुण,
गायस हू थारा गुण गीत ॥४॥

गोध प्रतिष्ठान— स्फुट साहित्य संग्रह पृ० १५२

झूला सायाजी की रचनाए

झूला सायाजी की दो चार स्फुट पद्य रचनाओं के अतिरिक्त केवल

वो काव्य मध्य उपलब्ध है—नागदमण और रुक्मिणीहरण । उक्त दोनों काव्य मगधान कृष्ण की पाया लीला से संबंधित हैं । माय माया और शली-गत सभी विशेषताओं का रहते हुए भी रचनाकाल के उत्तेज का अभाव लटबता है । पालणपुर निवासी राज्य कवि लणघोरामण हमीरदानजी ने स्वसम्पादित नागदमण में रुक्मिणीहरण और नागदमण का रचनाकाल राय घोरमदेव जी का देहावसान का उपरान्त राय कल्याणमल जी के द्वारा प्रदत्त साक्ष्यपत्राव से पुत्र माना है ।^१ राय घोरमदेव जी का देहावसान विप्रसी सवत १६५३ मं हुआ था और राय कल्याणमल जी द्वारा सायाजी की वि०स० १६६१ म साल पसाय दि० जाने की मायता है ।^२ इस मायता के आधार पर [१६५३ स १६६१ वि० तक] घाठ वय का कवनकाल ठहरता है । रुक्मिणीहरण की भाषा शली की देखते हुए तो उक्त काल की ठीक कहा जा सकता है, पर नागदमण को शलीगत प्रौढ़ता देखते हुए, उचित प्रतीत नहीं होता । कारण कि उक्त कवनकाल के समय झुला सायाजी की आयु [ज म १६३२ वि०] कवल २१ वय की थी । इतनी अल्प वय में नागदमण जसी प्रौढ़ रचना का रचा जाना संदेहास्पद है तथा आगे के जीवनकाल [मरगु १७०३ वि०] में हाय पर हाय धरे बठे रहना कम आश्चर्यजनक नहीं है । नागदमण का सजनकाल रुक्मिणीहरण के साथ मानने के पीछे उसको अकबर के दरबार में प्रस्तुत करने की प्रहृष्टि रही हो तो भी कोई अस्पृक्ति न होगी । प्राचीन शास्त्रकार परीक्षा^३ के अनुसृत मध्य युग के कवियों में यह भावना पाई जाती है कि—वे भी अपनी रचनाओं को तत्कालीन शासक के सम्मुख प्रस्तुत करके उस पर सम्मति प्राप्त करें ।

साहित्य जगत में प्रचलित यह प्रवाद—यह [रुक्मिणीहरण] और बेलि दोनों प्रय एक साथ बादशाह अकबर को निरीक्षणार्थ भेजे गये । बादशाह ने पहले बेलि को सुन कर हरण को सुना । अंत में हरण की रचना को श्रेष्ठतर निर्णय करके इत्येय और ध्यम्य में पृथ्वीराज से कहा—“पृथ्वीराज सुम्हारो बेलि को चारण बाबा की हरिणिया घर गई ।”^४ भी परीक्षणार्थ है ।

^१ श्री हमीरदान—नागदमण [सायाजी की जीवनी] पृ० २५

^२ श्री माधेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७७

^३ भ्रूयते च पाठलि पुने शास्त्रकार परीक्षा । अत्रोपवर्ष वषाविट पाणिनि पिंगला—विह याडि वरकन्नि पतंजली इह परीक्षितारयातिमु जग्मु ।

राजशेखर—काव्य सीमासा

^४ डा० आनन्दप्रकाश दीक्षित—बेलि किसन रुक्मिणी री भूमिका पृ० ३५

बादशाह अकबर का जीवनकाल १६२२ वि० तक माना गया है। वेतिके रचयिता राठौर पथ्वीराज जी १६५७ वि० में वकुण्ठवासी हुए। उक्त प्रवाद में बादशाह अकबर वेतिकार की उपस्थिति में अपना निणय देते हैं। इस से सिद्ध होता है कि—उक्त घटना १६५७ वि० से पूर्व की है। झूला सायाजी [जन्म १६३२] की आयु २१-२५ वर्ष और राठौर पथ्वीराज [जन्म १६०६] की आयु ५१ वर्ष ठहरती है। बादशाह अकबर ऐसा साहित्यमग्न एवं व्यवहारकुशल नासक एक प्रतिष्ठित प्रौढ रचयिता एवं अंतरंग मित्र की तुलना में एक उद्विग्न युवा कवि की धाना रचयिता बने, यह कुछ जटपटा सा लगता है, जबकि झूला सायाजी सायासी न हो कर एक सदगृहस्थ युवक थे।

झूला सायाजी कृत रविमणीहरण का काव्यसौष्ठव भी एक विवादात्मक प्रश्न है। राजस्थानी साहित्य के ममज्ञ प० श्री मोतीलाल जी मेनारिया तथा श्री सीताराम जो लालस नागदमण की तुलना में रविमणीहरण को एक साधारण श्रेणी का वर्णनात्मक ग्रंथ मानते हैं, जिसमें काव्यत्व का कहीं पता भी नहीं है।^१ इधर श्री पुरपोत्तमजी मेनारिया रवसपादित रविमणीहरण की प्रस्तावना में—ग्रंथ भण्डारों में सायाजी कृत रविमणीहरण की प्रतिधा बहुत कम मिलती हैं अत आलोचकों की धारणाएँ स्पष्ट न हो सकीं—कारण बताते हुए “कवि को दोनों कृतियों में समान रूप से सफलता प्राप्त हुई है” मानते हैं।^२ वस्तुतः स्थिति ऐसी नहीं है। रविमणीहरण कवि के युवाकाल की सर्वप्रथम रचना है तथा नागदमण प्रौढकाल की। अतएव यदि रविमणीहरण में नागदमण की सी सजीव एवं परिपुष्ट गली का अभाव पाया जाता है तो वह उपक्षणीय नहीं, उचित ही है।

नागदमण की सजीव—चित्ताक्षर गली ने परवर्ती कवियों को भी पर्याप्त मात्रा में प्रभावित किया है। अनेक चारण तथा चारणतर जन इत्यादि कवियों ने अपने काव्य प्रयों में नागदमण के छंदों को थोड़े बहुत हेर फेर के साथ अपना लिया है। सब से बड़ी लोकप्रियता का उदाहरण तो कवि कल्याणदास का नागदमण है।^३ इस ग्रंथ में कवि, झूला सायाजी कृत

^१[अ] श्री मन्ती लाल मेनारिया—रा० भा० आर साहित्य पृ० १३३

[आ] श्री सीताराम लालस—राजस्थानी-संस्कृत-नाम भाग १ भूमिका

^२प्रकाशक—प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जाधपुर

^३श्री मानदान बारठ, ग्रामनगरी द्वार हरिदस क साथ प्रकाशित

नागदमन के विगिष्ट कसारमय शम्भु वि यासों को स्वीकार करते हुए उसी छद्म और उसी परिमाण का काव्य अपने नाम से प्रचारित करने का सोम सघरण नहीं कर सक्ता है । उदाहरणार्थ कतिपय छन्दों का अवलोकन कीजिए —

सक्ष चद्रिका चद्रिका सीस ताम,
जरी को दुपट्टी झलकन थगारु ।
जडो लालर मूदडी रूप पुजा,
गल दूल्लडी तिल्लडी हार गुजा ॥४॥

मिलाइये छ० स० २६

हका किलकना ग्वाल हल्ले बहला,
हुव मात गादावरी गग हला ॥

× × ×

भले नदर धेनवा बाग टोळा,
हले सिंधु ज्यो नीर लेती हिलोळा ॥१०-११॥

मिलाइये छ० स० ६७

उतसी छटा रूप वसी अधारो,
प्रभू फूटरा स्याम पाछा पधारो ।
अडे अतरी पत हूता अरोडो,
जदनाय थारे किसी नाग जोडो ॥३२॥

मिलाइये छ० स० ३४-४०

इत्यादि

द्वितीय अध्याय

नागदमन का कथा-स्रोत तथा कवि की मौलिक उद्भावना

नागदमन भगवान श्रीकृष्ण की बाललीला से सम्बंधित एक चरित्र काव्य है। कालिय दमन का वृत्तान्त—महाभारत (सभा ३८), हरिवंश (२१२), ब्रह्म पुराण (१८५), श्री मदभागवत (१० १६) आदि पौराणिक ग्रंथों में उपलब्ध है। इन सब में 'श्री मदभागवतमहापुराणोत्त कालिय दमन लीला सुविस्तृत रूप से वर्णित है। यही प्रस्तुत नागदमन का कथा स्रोत है। इसी बहू प्रचलित कथा को झूला सायाजी ने अपनी काव्य प्रतिभा का सफुट दे कर मौलिक स्वरूप प्रदान किया है। भगवान श्रीकृष्ण तथा कालिय नाग इस आख्यान के विनिष्ट पात्र हैं। अपेक्षित विवेचन से पूव इन दोनों पर संक्षिप्त प्रकाश डालना अप्रासंगिक न होगा।

भगवान श्रीकृष्ण

भारतीय साहित्य में कृष्ण का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कृष्ण के चरित्र का विस्तारक्षेत्र व्यापक है।^१ यद्यपि वेदों में वामुदेव कृष्ण की चर्चा नहीं है, पर भवतारो में सब से पहले उ ही की पूजा होने लगी थी।^२ ईसा से कम से कम चार सौ वर्ष पहले वामुदेव की पूजा चल पड़ी थी। धीरे धीरे वामुदेव और नारायण को एक ही समझा जाने लगा था।^३ सनातन नारायण के चार अवतारों में एक अवतार कृष्ण भी प्रमुख है।^४

विद्वान लोग कृष्ण के स्वरूप की प्राचीनता और व्यापकता में सदेह प्रकट करते हैं। विद्वानों के सलाहकार कृष्ण पौराणिक कृष्ण, गीता के उपदेशक कृष्ण को विभिन्न व्यक्ति मानते हैं। भारतीय विचारधारा

^१ श्रीमती पाट— हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० ८

^२ श्री चारण— अलक्षिया सम्प्रदाय पृ० ७

^३ श्री द्विवेदी— सूर साहित्य पृ० १

^४ महाभारत— १२ ३२१, प १०

पाश्चात्य विद्वानों के इस तथेह को महत्त्व नहीं देती। इस विचारधारा के अनुसार कृष्ण के अनेक स्वरूपों का समावेश एक कृष्ण में हुआ है। प्रारम्भिक पुराणों में कृष्ण का अशावतार, उत्तर कालीन पुराणों में सोलह कला से युक्त पूर्णावतार हो गया है। कृष्ण चरित्र के विभिन्न स्वरूपों का सम्बन्ध ही उत्तर काल में उनके पूर्णावतार को जन्म देता है।¹

नागदमण का सम्बन्ध बालकृष्ण या गोपालकृष्ण से है। गोपालकृष्ण सबंधी कथाओं का घणन हरिवंश और वायुपुराण में उपलब्ध होता है। भागवत पुराण में कंस वध, पूतना तथा अंध राक्षसों का वध आदि कथाओं का विस्तृत घणन है। इनमें कंसारि कृष्ण और गोपालकृष्ण को अभिन्न समझा गया है। इन प्रयोगों के चलने के समय निश्चय ही गोपालकृष्ण की कथा खूब प्रचारित हो गई होगी। महाभारत के ही समाप्य (अ०४१) में शिशुपाल के मुह से ऐसी बातें कहलाई गई हैं जिनमें कृष्ण की गोकुल वाली कथा का आभास पाया जाता है।² डा० मण्डारकर का अभिमत इससे भिन्न है। उनके अनुसार कृष्ण आभीर नामक एक घुमक्कड़ जाति के बाल देवता हैं। वे (आभीर) ही सम्भवत बाल देवता की जन्मकथा और पूजा तथा उनके प्रख्यात पिता का उनके विषय में यह अज्ञान कि वह उनके पिता हैं, और निरपराधों के वध की कथा अपने साथ ले आये।³ यह बालकृष्ण की कथा ईसामसीह की कथा का (ही) भारतीय रूप है।⁴ केनेडी, प्रियसन, वेबर आदि विद्वान भी मण्डारकर के अभिमत से सहमत हैं।

डा० मण्डारकर, केनेडी तथा वेबर का मत समीचीन नहीं प्रतीत होता। बालकृष्ण की भक्ति भारत के लिए विदग्धी वस्तु नहीं है। रे चौधरी सुब्रह्म वेदों के अंतर्गत विष्णु के नटखट स्वरूप में बालकृष्ण के बीज की उपस्थिति बतलाते हैं।⁵ कीच ने भी बालकृष्ण की कथा को ईस्वी सन से पूर्व का होना सम्भव बताया है।⁶ आभीर इसी देश की पुरानी जाति हो सकती है, उनके अपने बाल देवता भी हो सकते हैं। श्री कुमारस्वामी ने कहा है कि—आभीर शब्द द्रविड भाषा का है जिसका अर्थ होता है गो पाल। यह कहा जा सकता है और कहा

¹ श्रीमती पाट—हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० १२१३

² श्री द्विवेदी—सूर साहित्य पृ० ४

³ वैष्णवि म शैवि म एण्ड मादर रैलिनम सिस्टमस प० ३२ ३७

⁴ वनी पृ० ३८ ३६

⁵ श्रीमती पाट—हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० १३

⁶ ज० रा० ए० सी० सन् १६०७

भी गया है कि—आमोरी (अहीर, जाट, और गूजरों) की मुखाकृति, शरीर गठन आदि, द्रविड नहीं बल्कि सीधियन है। केनेडी इन्हें सीधियन मानते भी हैं। पर इससे उक्त अनुमान में कोई बाधा नहीं पड़ती। हो सकता है कि—आमोरी नाम की कोई द्रविड जाति जिसका धर्म भक्ति प्रधान हो और देवता बालकृष्ण हों, पहले से ही इस देश में रहती हो, बाद को ये सीधियन जातियाँ आकर इनका धर्म ग्रहण करके अपने को आमोरी कहने लगी हों। आमोरी शब्द का द्रविड होना और देवता कृष्ण (काला) होना इस अनुमान का सहायक होना बताया जा सकता है। यह बात ऐतिहासिकों के अहापोह का विषय बनी हुई है कि बाहर से आई हुई कितनी ही जातियाँ ब्राह्मण धर्म में शरण न पा सकी थीं।¹

नारद पंचरत्न में बालकृष्ण की महिमा का उल्लेख मिलता है। ज्ञानामृत सार संहिता के अनुसार नारद कृष्ण माहात्म्य सुनने के लिए कलाश पर शिव के पास जाते हैं, वहाँ उनके महल के सात फाटकों पर—यमुना, कवच पर श्रीकृष्ण वस्त्र हरण, मग्न गोपिकाएँ आदि लीलाएँ चित्रित थीं। इस कथा के अनुसार चित्रित एक स्तम्भ जोधपुर के निकट मण्डोवर ग्राम में पाया गया है।² मण्डारकर के कथनानुसार इस का काल ईस्वी सन की चौथी शताब्दी के पहले नहीं हो सकता।³ फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि चौथी शताब्दी तक कृष्ण की लीलाएँ भारत में खूब प्रख्यात हो गई थीं।

कालिय नाग

भगवान् श्रीकृष्ण के प्रतिद्वंदी कालिय का चित्रण एक भयंकर सप के रूप में हुआ है। कालिय क्रुद्ध होकर अपने सहस्र पत्नों द्वारा भगवान् पर आक्रमण करता है तथा पूछ की लपेट से उन्हें घेर लेता है। भगवान् श्रीकृष्ण अपने पराक्रम से नागपाश से मुक्त होकर प्रत्याक्रमण स्वरूप उसके फनों पर चढ़ कर उन्हें कुचल दते हैं। वह हजार फनों द्वारा रक्त घमन करने लगता है। नागपत्नियाँ उसकी मुक्ति के लिए भगवान् की स्तुति करती हैं। कालिय के लिए—महाकाल, पद्म, भुजग, सप, अहि, अहिराव, मणिधर इत्यादि सजाएँ विशेषणों का व्यवहार हुआ है।

कुछ विद्वान् उपर्युक्त घटना का प्रतीकात्मक अर्थ करते हैं। नाग

¹ श्री द्विवेदी—सूर माहित्य पृ० ६

² आर्कैलाजिकल मन् ऑफ़ इंडिया, वार्षिक विवरण १९०५

³ वैष्णव-म, श्रीनिवास एण्ड माइना रैलिजम सिग्नम २० १४ ४०

को काल का प्रतीक माना गया है।¹ गति और स्थिति, जानेच्छा क्रियारमक विभु की क्रिया-गति के दो प्रधान रूप हैं। गद्यारमक गति का नाम काल है। यह स्वयं गति-शील रहता है और सृष्टि में किसी को स्थिर नहीं रहने देता। सब को विनाश द्वारा, परिणित या परिपक्ववावस्था में पहुँचा कर उन्हें समेट लेता है। इसकी क्रिया का यही स्वभाव है। इसलिए सारी सृष्टि विषम हो कर इसके बल में पड़ी हुई है और इसकी निरपेक्ष क्रिया-शीलता से प्रसन्न रहती है। क्योंकि अपनी अघाघगति में यह छोटे बड़े और अच्छे बुरे का विचार नहीं करता। इसके चक्कर में या लपेट में सारी सृष्टि पड़ी हुई है।² समस्त गतियों का उदगम और आश्रय परमात्मा है। नगवान कृष्ण उसी परमात्मा के पूण अवतार माने जाते हैं। अतएव काल सामान्य जीवारमाओं की तरह ही नगवान कृष्ण को वेष्टित करता है, परन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाता, पराजित हो जाता है।

कालिय के प्रतीकारमक पक्ष के अतिरिक्त व्यावहारिक पक्ष भी उल्लेखनीय है। इस पक्ष के अनुसार कालिय नागराज है। उसके पत्नियाँ, दास, दासिया तथा प्रजा है। वह एक महल में निवास करता है। इन सब पर ध्यान देने से नाग संस्कृति की ओर दृष्टि जाती है। आर्यों के आगमन से पूर्व भारत में नाग और सुपन इत्यादि आर्षेतर जातियों की प्रबलता रही है। नाग जाति में अनेक ने वैदिक काल में ब्राह्मण जीर ऋषि का पद प्राप्त किया था।

नाग काश्यप हैं। नागों की माता का नाम विनता था। कद्रु सभों की जननी है। सप और नाग भाई भाई हैं। काश्यप गण्ड से इनकी गन्तुता रही है। यक्ष और नागों को अमृत—सोम का रक्षक कहा गया है।³ पवत में कुबेर के स्वर्ण तथा धन की रक्षा करने में नाग भी नियत था।⁴ शल, जटी नागों को रावण ने जीता था। नाग सुन्दरिया को बंदी बना लिया था। नागाह्वय नगर में धम चक्र का प्रवर्तन हुआ था। परवर्तीकाल में नागाह्वय

¹लिंग पुरुष इत्युक्ती योनिस्तु प्रवृत्ति स्मृता।

नाग काल समाट्यात सम्बन्धस्तु तयो द्वयो ॥

—प्राधानिह रहस्य की टीका में सुबनेश्वरी संहिता से उद्धृत

²भारतीय प्रतीक विद्या पृ० १७

³यक्ष २ पृ० ३१

⁴वैदिक मायमालाजी पृ० २७

हस्तिनापुर को कहते थे ।¹

भोगवती नागों की राजधानी थी । वहाँ का राजा शेष था ।² कुरुओं का प्रारम्भ क्या नाग जाति से जोड़ा जा सकता है ? क्रिषि=क्रिमि, और यह नाग का नाम है । पचाल सम्भवतः पाँच नाग जातियाँ हैं । घृतराष्ट्र, ऐरावत, धनञ्जय, चदिक नाग हैं । नाग विवाद करता है । वामुकि उत्तर देता है । मुख्य नाग ये हैं—ककौटक [सप], वामुकि [भुजग], कच्छप, कुड, तक्षक [महोरग] । एक भोगवती सर्पों का देवी प्रामुरी सम्बन्ध है ।³

नाग लोग प्रधानतः शिव के उपासक थे और सुपण लोग विष्णु के । गरुड विष्णु के वाहन हैं और नाग शिव के भूषण ।⁴ कहीं कहीं नागों को बरुणोपासक बताया है । आप भी इन्हें नीच नहीं समझते थे । राजतरंगिणी के अनुसार नागकन्या चन्द्रलेखा का विवाह एक ब्राह्मण से हुआ था । ऐसे विवाह उन दिनों समीप से बंध समझे जाते थे । पांडव अर्जुन का विवाह नागकन्या उल्लूपी से हुआ था ।⁵ सोमधर्या नागकन्या गभश्मभूत महातपस्वी हुए हैं, इन्होंने जनमेजय के यज्ञ में पौरहित्य किया था ।⁶ जरत्कारु महातपा, उध्वरेता तपस्वी थे । नि सतान होने के कारण इनके पूज्य अघोगति में जा रहे थे । जरत्कारु की प्रायना पर नागराज वामुकि ने अपनी बहिन का सम्बन्ध इनके साथ कर दिया ।⁷ इससे उत्पन्न सतान ने जरत्कारु के पितृ पितामहों का अघोगति से उद्धार किया था । जनमेजय को नाग यज्ञ से विरत कराने वाले तपस्वी आस्तिक का मातृकुल नाग था ।⁸ इत्यादि प्रमाणों से स्पष्ट रूप से सिद्ध है कि—नाग यहा जन्तुवाचक शब्द नहीं है ।

वालिप नाग गरुड के मय से रमणीक द्वीप छोड़ कर (वाली) वह में आकर बसा था ।⁹ गरुडनागों के प्रबल शत्रु थे, यह पहले बताया जा चुका है । खूब समव है इन दोनों (नाग और सुपण) जातियों के साँछन

¹वही पृ० ८१

²वही पृ० ३२

³श्री रामायण — प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास पृ० ८८

⁴श्रीतेन — संस्कृति सम पृ० २६

⁵महामागन — समापर्व

⁶ " आदिपर्व पौष्य ११ अ०

⁷ " आदि० ४६ अ०

⁸ " आदि० ४६ अ०

⁹श्रीमद्भागवत—१० अ० १६ श्लो० ६०

(टोटेम) ये दोनों (तप और पशु) जन्तु थे ।¹ मडोवर से प्राप्त गुप्तकालीन स्तूप के अंकन से भी यही प्रमाणित होता है ।²

नागदमण कथा का प्रयोजन

नागदमण के रचयिता तथा श्रीमदभागवतकार का मुख्य उद्देश्य, भगवान् श्रीकृष्ण की अलौकिक सीलाओं का परिचय देना होते हुए भी, दोनों की वृत्त 'श्री' 'श्री' है । नागदमण का कथा सगठन वास्तविक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए किया गया प्रतीत होता है और श्रीमदभागवत का इतिवृत्तारम्भ दृष्टि से । यथा —

नागदमण की कथा सक्षिप्ति

माता यमोदाजी के प्रयोगन में सवेत होकर भगवान् श्रीकृष्ण प्रातः कालीन भोजन से निवृत्त होकर गो चारणाय घर से प्रस्थान करते हैं । सबको गोप बालक तथा बछड़े उनके साथ हैं । गोपिकाएँ अपने-अपने घरों पर चडा हुई भगवान् श्रीकृष्ण की घाट दल रही हैं । कई गोपिकाएँ भगवान् श्रीकृष्ण की गोएँ सम्भला रही हैं । वे समस्त गो घन को एकत्रित करके वन की ओर प्रस्थान करते हैं । यमुना तट पर पहुँचने के उपरान्त गोप बालकों के प्रस्ताव में कबुक् सीढा प्रारम्भ की जाती है । दोनों पक्षों में अपार गोप-बालक हैं । भगवान् श्रीकृष्ण उनके मध्य खेल रहे हैं । दोनों पक्षा के परस्पर संधय से गेंद उछल कर यमुना के गभीर जल में जा गिरती है । भगवान् श्रीकृष्ण गेंद जाने एक कालिय के दुष्प्रभाव को सदा के लिए समाप्त करने के निमित्त —तरकाल कदम्ब की टहनो पकड़ कर यमुना में कूद जाते हैं । यह घृतांत तीव्र वेग से समस्त विन्ध्य में 'याप्त' हो जाता है । माता यमोदाजी तो इस घात रूपी आघात से कदली स्तम्भ की तरह गिर पड़ती हैं । समस्त वज्रमण्डल के निवासी गोवाकुल होकर यमुना तट पर पहुँचते हैं । भगवान् श्रीकृष्ण को वहाँ न देखकर सबके सब आसनाद करते हुए विलाप करते हैं । गाय बल, बछड़े सभी स्तम्भ लडे हैं । इधर भगवान् श्रीकृष्ण कालिय के दरवार में पहुँचते हैं । कालिय सो रहा है । नागपत्निय भगवान् के बालसुलभ सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो जाती हैं । समस्त नागलोकावासी उन्हें देखने के लिए कालिय के दरवार में एकत्रित हो गए हैं । नागपत्निय भगवान् श्रीकृष्ण से परिचय पूछनी हुई आश्रय करती हैं—लाला, पशु म' 'नी' 'हीं' मूल गए हो यह साँप का घर है ? आप कालिय के सोते सोते, '—' जाइए । भगवान् श्रीकृष्ण प्रत्युत्तर में अपनी गेंद जो नाग

1, 2 — मरुति सगम पृ० २८

-दश ० सध्या १३ पादपिण्ड तथा चित्र

पत्नियों ने छुपा रखी है, देने की मांग करते हैं। नागपत्नियाँ पुन कालिय को मय करता का वणन करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण को कालिय के दुष्कर्य स्मरण हो आते हैं। वे कालिय के साथ युद्ध के लिए ब्रह्म जाते हैं। नागपत्निया बालक के भोलेपन पर आश्रय प्रकट करती हैं। कालिय से बड़े बड़े राजा तक कांपते हैं, जिनके पास अपार सेना है। तुम्हारे पास तो शस्त्रास्त्र के नाम पर केवल एक मुरली है। भगवान श्रीकृष्ण कालिय को भी अपने समान निरस्त्र बताते हैं। हम दोनों अस्त्रविहीन हैं। नाग और हमारा बाहु युद्ध होगा। हार भी भगवान के हाथ है। लाग ममज्ञान पर भी जब भगवान श्रीकृष्ण अपने हठ को नहीं छोड़ते हैं तब नागपत्निया ध्वज प्रयोग करती हैं। यमुनाजी भगवान के महत्व का वणन करती हुई कहती हैं—यह बालक और कोई नहीं, स्वयं भगवान हैं। नागपत्नियाँ भगवान से हार जाती हैं। भगवान श्रीकृष्ण मधुर तथा उच्च स्वर से वेलुवादन करते हैं। मधुर स्वर समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त हो जाता है। ब्रह्म निवासियों की लस चेतना पुन जाग्रत हो जाती है। उच्च स्वर से कालिय की तंद्रा भंग होनी है और वह अपने दरवार में भगवान कृष्ण को देखकर फुफकारता हुआ उन पर आरूपण करता है। भगवान पर इस का कोई प्रभाव नहीं होता। दोनों योद्धा मल्ल युद्ध में प्रवृत्त होकर बह में आ जाते हैं। यमुना का जल उनके सघन से मथा जा रहा है। भगवान के सबल हाथ कालिय की ग्रीवा पर पड़ते हैं। जिस प्रकार गाखी साप के साथ खेल करता है उसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण कालिय से खेल रहे हैं। कालिय जोर जोर से फुफकार रहा है। भगवान श्रीकृष्ण हाथों और पैरों से निरंतर प्रहार कर रहे हैं। समस्त लोक कपायमान हैं। इस दृश्य को देखने के लिए देवता अपने-अपने विमानों में बस कर आ गए हैं। भगवान श्रीकृष्ण के प्रहारों से कालिय का गात्र भंग हो जाता है। वे उठे हुए हाथ में उठा लेते हैं तथा दूसरे हाथ से उसकी दृष्टाए तोड़ते हैं। वह अपने सहस्र फनों से रक्त घमन कर रहा है। मुह से फेन गिर रहे हैं। इवास नासा सगुट में उलझ गया है। इस प्रकार कालिय विवश होकर गिर पड़ता है। भगवान श्रीकृष्ण तत्काल क्रोध कर उसके सिर पर चढ़ जाने हैं तथा नृत्य करने लगते हैं। नागपत्निया अपने पति की दुःशा देखकर भगवान श्रीकृष्ण से उसे छोड़ देने के लिए विनय करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण उसे यथांगीघ्न छोड़ देने का वचन देते हैं। नागपत्निया भगवान की पूजा अर्चा करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण कमल की नाल से कालिय के नकेल डालते हैं तथा उसकी पीठ पर सवार होकर उसे ब्रह्म की गलियों एवं नद के आगम में घुमाते हैं। इस प्रकार कालिय का मानमदन करके तथा उसे दह से निगल कर भगवान श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथ जोड़े हुए माता यशोदा जी की ओर आ रहे हैं।

भागवत कथा सङ्क्षिप्त

भगवान् श्रीकृष्ण यह समझ कर वि—कालिय नाग ने यमुना का जल दूषित कर दिया है, उसके शुद्ध यथ यमुना में बूढ़ पड़े और अतुल बल वाले मत्स्यराज के समान कालिय वह का जल उछालने लगे। कालिय नाग को अपने निवासस्थान का इस प्रकार से तिरस्कार सहन न हुआ। वह चिढ़ कर भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख आया। भगवान् श्रीकृष्ण को विषाक्त जल में निभय और निडर हो कर क्रीडा करते देख कर वह और भी क्रोधित हो गया। उसने भगवान् श्रीकृष्ण के ममस्थानों पर घ्रापात करके अपने शरीर के बधन से जकड़ लिया। भगवान् श्रीकृष्ण नागपाण में आवद्ध होकर निश्चेष्ट हो गए। उनकी यह दशा देख कर उनके प्रिय सखा, गाय, बल, बछिया सभी वातर स्वर से विलाप करने लगे। इधर व्रज में भी पशु, आकाश और शरीरों में भयकर उत्पात होने लगे। नद बाबा आदि गोपों ने पहले तो इन अपशकुनों को देखा फिर यह जाना कि—आज श्रीकृष्ण बिना बलराम के गौए चराने गये हैं तो वे बहुत व्याकुल हुए तथा अपने प्रिय को दू डते दू डते यमुना तट पर पहुँचे। उ होंने दूर से ही भगवान् श्रीकृष्ण को कालिय के बधन में बध हुए तथा कुण्ड के किनारे खान वालों को मूर्छितावस्था में देखा। गोप, बल बछड़ेआत्त स्वर से राग रहे थे। इस प्रकार का दृश्य देख कर वे गोप भी मूर्छित हो गए। माता यशोदाजी तथा नद बाबा तो वह में बूढ़ने तक को उद्यत हो गए, पर भगवान् के पराक्रम को जानने वाले बलरामजी के प्रयत्नों से उनके जीवन की रक्षा हुई। मुहुत्त तक साप के बधन भर रहने के उपरांत भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने शरीर की वृद्धि करना प्रारम्भ किया। परिणामस्वरूप साप का शरीर टूटने लगा और उसने अपना पाश छोड़ दिया तथा भगवान् के सम्मुख क्रोधित हो कर फुफकारने लगा। भगवान् श्रीकृष्ण पतरे बदल बदल कर उसके प्रत्येक आक्रमण को विफल कर रहे थे। ऐसा करते करते कालिय का बल क्षीण हो गया तब भगवान् श्रीकृष्ण उछलकर उसके गिर पर सवार हो गये तथा कलापूण नृत्य करने लगे। भगवान् श्रीकृष्ण के भक्त गधव, देवता, चारण एवं देवागनाए बड़े प्रेम से वाद्य यंत्र बजाने लगे। कालिय नाग के सौ सिर थे। जिस सिर को यह नहीं झुकाता था उसे भगवान् अपने पद तल प्रहार से कुचल देते। इस प्रकार कालिय की जीवनशक्तिगन इन क्षीण होने लगी। वह नयुनों तथा मुह से खून उगल रहा था। कालिय, मन ही मन भगवान् श्रीकृष्ण की शरण में गया। अपने पति की वृद्धा देखकर नागपत्नियाँ भी भगवान् की शरण में आई और स्तुति करने लगीं। भगवान् ने दया करके उस

छिन भिन शरीर वाले कालिय को छोड़ दिया। शनं शन कालिय में चेतना गति का संचार हुआ। उसने बड़ी दीनता से भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति की। भगवान ने उसे गरुड़ों से अमय करते हुए तत्काल यमुना को छोड़ कर समुद्र में जाने का आदेश दिया। उनका आदेश प्राप्त करने के पश्चात्-कालिय नाम एष उसकी पत्नियों ने विध्य वस्त्र, पुष्प माला, मणि, जाम्बूवण, निव्य गध, चंदन और उत्तम कमलों की माला से भगवान श्रीकृष्ण का पूजन अर्चन किया। तत्पश्चात् सपरिवार भगवान को बदना परिक्रमा करके रमणक द्वीप की ओर प्रस्थान किया।

नागदमण कथा में भूला सायाजी की मौलिकता

उपयुक्त दोनों कथा सगठनों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर नागदमण का कथा सगठन अधिक विज्ञानसम्मत एवं मौलिक प्रतीत होता है। भागवत में भगवान श्रीकृष्ण एक बालक होते हुए भी एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वरूप में चित्रित हुए हैं। नागदमण में उनके बालस्वरूप का निर्वाह कवि की विशेषता है। यमुना तट पर गोप बालकों की क दुकू क्रीडा सायाजी की मौलिक उदभावना है और सगत भी। वतमान में भी बाले यह खेल खेलते गेले जाते हैं तथा गंद को दुगम से दुगम स्थान पर से साने का यत्न करते हैं।

भागवत में श्रीकृष्ण यमुना में कूदते ही जल का विलोडन करके कालिय को क्रोधित होने का अवसर देते हैं। नागदमण का कालिय स्वभाव से ही क्रूर है वह बालक बद्ध के भेद को नहीं समझता है खा जाता है। कालिय दरगार तथा नागपत्नियों के काय बलाप स्वरूप मौलिक प्रसंग जोड़ कर कवि ने कथा प्रवाह को अधुण रखा है। भगवान श्रीकृष्ण के बाल सुलभ माधुय तथा वाणो के द्वारा उत्पन्न एक मोक्षुगधवारी हृदय पर कवि स्वयं मुग्ध है "मुण्यो रूप वेद सु पेदयो सर्व ही बडा भागरी नागरी नारी वेही" कह कर नागपत्नियों के भाग्य की सराहना करता है। भगवान श्रीकृष्ण का कालिय के साथ युद्ध करने का हठ भी बालसुलभ वृत्ति का परिचायक है। बालक कृष्ण निर्भीक हैं। गौ महत्ता का प्रसंग नागदमणकार की अपनी कल्पना है। भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा बारी है। अतः सरक्षित सम्पत्ति की रक्षा करना उनका धर्म है। नेति नेति प्रक्रिया से नागपत्नियों द्वारा सत्य एवं गस्त्रास्त्र वणन कवि की वीर भावना का परिचायक है। कालिय के साथ भगवान श्रीकृष्ण का सघष किसी भी वीर काय के सघष वणन से कम नहीं है।

नागदमणकार कवि होने के साथ साथ भक्त भी हैं। उन्हें अपने इष्टदेव के प्रभाव पर रचमान भी आज्ञा आना पसंद नहीं है। भागवतकार को मूर्खता भर नागपाश में जकड़े हुए निश्चेष्ट कृष्ण की चिंता नहीं है पर नागदमणकार

इस प्रसंग को आप डग से प्रस्तुत करते हैं। कातिय मूढ़ होकर आक्रमण करता है, प्रहार करता है, पर भगवान पर ये पुण्य परतुण्डियों के प्रहार के समान असर करते हैं। पुण्य साक्षाराय हमेशा घड़ते ही हैं।

नागवतकार कातिय के परामय के पश्चात् उसे सीधे यमुना से ही समुद्र में धसे जाने का आदेश भगवान श्रीकृष्ण ने दिलवा दत है। नागरमणकार इसे पर्वत नहीं समझते हैं। वे इसके उपरान्त भी भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा कमलनाल से कातिय के नखेल डसवाते हैं। नखेल के द्वारा मयकर से मयकर बसगाली जसु स्वयंग हो जाते हैं यह सत्य है। बुष्ट मानर्या क भी नखेल डाल कर घुमाना प्रसिद्ध है। स्वयंग करक मय-तत्र घुमाना प्रतिद्वेषी की हीनता का भी द्योतक है।

मयकर कातिय को परास्त करके पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण विनय सहित अपने दोनों हाथ जोड़े हुए माता यगोवात्री के सम्मुख उपस्थित होते हैं। इस प्रकार नागरमण की कथा में भगवान श्रीकृष्ण के बालस्वरूप का आदि से अत तक निर्वाह हुआ है। अनुक्रम से उरयापन मगला, अज्ञार, राजभोग आदि शाक्तियों का घर्णन कवि का बल्लभदुल सभप्रदायानुयायी होना प्रमाणित करता है।

तृतीय अध्याय

नागदमण की भाषा और व्याकरण

भाषा

नागदमण की भाषा राजस्थान के अतपत सत्रहवीं शताब्दी की प्रचलित साहित्यिक भाषा—डिंगल है।¹ डिंगल शब्द की व्युत्पत्ति की तरह भाषा के सम्बन्ध में (भी) विद्वानों में अद्यावधि पर्याप्त भ्रम फैला हुआ है। अधिकांश विद्वान साधारणतया डिंगल को राजस्थानी का एक रूप मानते हैं। अतएव इस प्रसंग में, राजस्थानी की वास्तविक स्थिति क्या है इस ओर नौ सकेत कर देना अनुपयुक्त न होगा।

“राजस्थानी भाषा” शब्द “हिंदी भाषा” के समान ही भ्रमात्मक है। जिस प्रकार वस्तुतः हिंदी—अनेक विभाषाओं का एक सामूहिक नाम है, ठीक वही परिस्थिति राजस्थानी भाषा के साथ है, जो कि हिंदी की एक विभाषा के रूप में मान्य है।²

राजस्थानी—राजस्थान प्रांत की भाषा है। राजस्थान केवल आधुनिक राजपूताना प्रांत तक ही परिमित नहीं है, किंतु मालवा और हिसार का भी बहुत-सा भाग राजस्थान के ही अंतर्गत समझा जाना चाहिए। राजस्थानी इस समस्त भू-खंड की भाषा है³ जिसमें मारवाड़ी (जिसके अंतर्गत मेवाड़ी भी), दुवाड़ी (जिसके अंतर्गत हाडोती भी), मालवी और बागड़ी उपभाषाएँ (बोनिया) प्रमुख हैं।

राजस्थानी की समस्त बोलियों में मारवाड़ी प्रमुख है। मुख्यतया लिखित रूप में वर्तमान साहित्य, जो कि एक प्रकार से इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि—मारवाड़ी राजस्थानी की प्रतिमित अथवा परिनिष्ठित (Standard) भाषा है। यह प्रतिमित मारवाड़ी ही वस्तुतः डिंगल है जिसे मद्र भाषा राजपूतानी,

¹ श्री मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७६

² डा० जगदीशप्रसाद—डिंगल साहित्य पृ० २६१

³ श्री स्वामी—डोला मारू रा दूहा पृ० १०७ [प्रस्तावना]

पश्चिमी राजस्थानी आदि नामों से अभिहित किया गया है।¹ इससे एक महत्वपूर्ण बात यह भी सिद्ध होती है कि—प्रारम्भ में डिगल बोल चाल में अंतर हो गया बाद में बोल चाल की भाषा और साहित्यिक भाषा के लिए होने लगा² और डिगल और डिगल का प्रयोग साहित्य की भाषा के लिए होने लगा² और डिगल साहित्य राजपूताना के चारणों तथा भाटों द्वारा विनोद समझ हो उठा।³

श्री मेनारिया जो ने नागदमण की चर्चा करते हुए इसकी भाषा पर किंचित गुजराती या प्रभाव स्वीकार किया है तथा कवि का काठियावाड़ी होना इसका कारण माना है,⁴ परन्तु यह तो निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि—गुजरात तथा मारवाड़ अथवा पश्चिमी राजस्थान की भाषा सोलहवीं शताब्दी ईस्वी तक एक थी,⁵ तब इसी अवधि में जासपास की रचना पर गुजराती का प्रभाव का प्रश्न ही नहीं उठता है। हा, प्रकाशित ग्रंथ में भाषा के गुजरातीकरण की प्रवृत्ति लक्षित होती है,⁶ यह दूसरी बात है।

शब्द-समूह

नागदमण की भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी चार प्रकार के शब्द उपलब्ध होते हैं जिन में तद्भव और देशज शब्दों का बाहुल्य है।

व्याकरण

किसी भाषा के ज्ञान अथवा दूसरे शब्दों में शुद्ध लिखने, पढ़ने और बोलने के लिए उसके व्याकरण की जानकारी नितांत आवश्यक होती है।⁷ अतएव डिगल भाषा के व्याकरण को ध्यान में रखते हुए नागदमण का संक्षिप्त व्याकरण दिया जा रहा है।

1(अ) डा० जगदीशप्रसाद—डिगल साहित्य पृ० २६२

(आ) डिगल उपनाम कडुंका मरुचानी हु विवेक ।

अपभ्रंश जामे अचिन्त, सदा नीर रस श्रेय ॥

—महाकवि सूर्यमल-वशमास्त्र प्र मा पृ० १७७

2 डा० माहेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० ६

3 डा० चटर्जी—भारत की भाषाएँ और भाषा सम्बन्धी सम्मेलन पृ० ५१

4 श्री मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७६

5 डा० चटर्जी—राजस्थानी भाषा पृ० ३६

6 डा० माहेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७७

7 डा० जगदीशप्रसाद—डिगल साहित्य पृ० २६२

ध्वनि समूह

१ स्वर—नागदमण मे प्रयुक्त अे, अ, ओ, औ के ह्रस्वरूपों को छोड़ कर बाकी स्वर हिन्दी के समान ही हैं। यथा—

अ —मध्य, अथ विवृत, ह्रस्व ।

आ —अग्र, यिष्ट, दीघ ।

आ —यह 'आ' का ह्रस्व रूप है । दमण मे प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग 'अ' के समान ही होता है—

१ माहो माह आणद दाख मुरक्की । छद ३२

२ आया औद्रक सुरमा ऐणि आर । „ ४९

३ जाळै दिख्य नीला वहे दिख्य झाळा । „ ५३

इ —अग्र, सवृत, ह्रस्व ।

ई —अग्र, सवृत, दीघ ।

उ —पश्च अथ-सवृत, ह्रस्व ।

ऊ —पश्च, अथ सवृत, दीघ ।

कहाँ-कहाँ छद की सुविधानुसार इसका भी ह्रस्व उच्चारण पाया जाता है—

१ दूजे नवर घेन नोल्लख दू णी । छद ७१

२ ऊभौ भूरळी आप लीधं अपूर । „ ९४

अे —अग्र, अथ विवृत, दीघ ।

अे —अग्र, अथ सवृत, ह्रस्व ।

इस ध्वनि के लिए कोई स्वतंत्र लिपि विद्ध नहीं है । दमण मे प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग 'इ' के समान होता है—

१ देवो आपरी लाज लीधो दहू लो । छद ३३

२ खेलीजे रमीज पिता मातु खोळा । „ ३९

३ घेर्यो नद रो घोट अहिकोट अेही । „ ९९

अै —अग्र-मध्य, अर्ध विवृत, दीघ ।

अ —यह ध्वनि 'अ' का ह्रस्व रूप है । इसका उच्चारण लगभग अ+इ की तरह पाया जाता है ।

१ अरै कू ण लाज पखी भाव ओरी । छद ८१

२ पैसारा उसारा खरा दाइकारा । „ १०२

ओ —पञ्च, अघ-सवत, दीर्घ ।

औ —पञ्च, अघ सवत ह्रस्व ।

इस ध्वनि के लिए भी स्वतंत्र लिपि चिह्न नहीं है । दमण में प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग ह्रस्व 'उ' की तरह होता है—

- | | | |
|---|--------------------------------|--------|
| १ | बोलाव मळ नाथ नांखी भुरक्की । | छंद ३५ |
| २ | मोरे नद बावी जसोमती माई । | , ५८ |
| ३ | जोवो नदर प्रेह खत्रकट्ट जागी । | , ७५ |
| ४ | गोपीनाथ रा हाय आया गहुद । | , १०० |
- इत्यादि

ओ —पञ्च मध्य, अघ सवत, दीर्घ ।

औ —यह 'ओ' का ह्रस्व रूप है । इस ध्वनि के लिए भी स्वतंत्र लिपि चिह्न नहीं है । दमण में प्रयुक्त इस ध्वनि का लगभग 'अ+उ' उच्चारण होता है—

- | | | |
|---|------------------------------|--------|
| १ | आया औद्रके सूरमा ऐणि आर । | छंद ४९ |
| २ | नौळी घाटते सामठी शाट नांखी । | , ९९ |
- अ —अनुस्वार ।

२ व्यजन—नागदमण में प्रयुक्त व्यजन ल, व, य, ङ, ण, य को छोड़ कर शेष हिंदी की तरह ही होते हैं । यथा—

स्वरा (स्पृष्ट प्रयत्न)

क—कण्ठ्य, अल्पप्राण, अघोष

ख—कण्ठ्य, महाप्राण, अघोष

ग—कण्ठ्य, अल्पप्राण, सघोष

घ—कण्ठ्य, महाप्राण, सघोष

ङ—कण्ठ्य, अल्पप्राण, सानुनासिक

च—घर्त्स्य, अल्पप्राण, अघोष

छ—घर्त्स्य, महाप्राण, अघोष

ज—घर्त्स्य, अल्पप्राण, सघोष

झ—घर्त्स्य, महाप्राण, सघोष

ञ—घर्त्स्य, अल्पप्राण, सानुनासिक

ट—मूष-य, अल्पप्राण, अघोष

ठ—मूष-य, महाप्राण, अघोष

- ङ—मूध-य, अल्पप्राण, सघोष
 ढ—मूध-य, महाप्राण, सघोष
 ण—मूध-य, अल्पप्राण, सघोष, सानुनासिक
 त—द-त्य, अल्पप्राण, अघोष
 थ—द-त्य महाप्राण, अघोष
 द—द-त्य, अल्पप्राण, सघोष
 ध—द-त्य, महाप्राण, सघोष
 न—द-त्य, अल्पप्राण, सघोष सानुनासिक
 प—ओच्छ्रय, अल्पप्राण, अघोष
 फ—ओच्छ्रय, महाप्राण, अघोष
 ब—ओच्छ्रय, अल्पप्राण, सघोष
 म—ओच्छ्रय, महाप्राण, सघोष
 ञ—ओच्छ्रय, अल्पप्राण, सघोष

अत स्थ

- य—यत्स्थ, अल्पप्राण, ईषद्विवृत
 र—मूध-य, अल्पप्राण, ईषद्विवृत घषित
 लृ—द-त्य, अल्पप्राण, ईषद्विवृत, पार्श्विक
 व—द-तोष्ठय, अल्पप्राण, ईषद्विवृत

ऊम

- स—द-त्य, तालव्य, महाप्राण, अघोष
 ह—कण्ठ्य, महाप्राण, सघोष

अन्य

- ङ—मूध-य, अल्पप्राण, सघोष, उर्ध्वक्ष
 ढ—द-त्य, महाप्राण, सघोष, उर्ध्वक्ष
 ण—राजस्थानी व । इसका उच्चारण संस्कृत के 'व' से भिन्न होता है ।
 ञ—मूध-य सघोष, [उत्क्षिप्त]

कारक

नागदमन की भाषा में—सज्ञा, सबनाग और क्रिया सूचक गंधों का प्रयोग हिन्दी भाषा के समान ही दो लिंग तथा दो वचन से हुआ है । नपुंसकलिंग के रूप भी उपलब्ध हैं परन्तु नपुंसकलिंग एवं पुल्लिंग में विशेष भेद नहीं है । कारकों के लिए विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है तथा कहीं कहीं

विवक्ति प्रत्ययविहीन शब्दों के मूल तथा विकारी रूपों से काम चलाया गया है। यथा—

कारक	प्रत्यय	उदाहरण		
कर्त्ता	×	पहल जसोदा जिम चक्रवाणी ।	छंद	२
	×	जुव धन घधीक कांठ जमसा ।	"	१४
	भा	भगवानन धेन गाप्या भळाव ।	"	५
कर्म	—	कपूरी प्रहै यान बोडा ब्रसन ।	"	७
	×	जाषो नागणी नाग बगो जगाडो ।	"	३७
	×	बिया सारपा लोक बेहू किनारी ।	"	९
	नु	काळीनागनु आणियो काहू कूड ।	"	१०१
	"	जसोदा तोई राजनु पुत्र जाण ।	"	११५
करण	न	भगवानन धेन गोप्या भळाव ।	"	५
	"	अहिरावन डाव कोई न सूझयो ।	"	१९९
	×	गळ अघ्य ओषा खुरी-खेह प्रेवा ।	"	६१
	अ	घडू गेडिय बेंद मवान घेरी ।	"	१०
	"	न बीठो कवीय नेत्र निहाळी ।	"	३८
	"	कान ही तपो सांभळ यो नागकाळी ।	"	३८
	सू	नवा नेहसू त गोपी निहाळ ।	"	४
	"	हुई नवरी धेनसू धन हेला ।	"	६
	हू	काळीनागहू आज ही कस कांप ।	"	५२
	—	जय जागसी नाग राखा जतन ।	"	३०
सम्प्रदान	×	इसा वाळ देवी इया मू झ भाव ।	"	३५
	नु	वाळीनागनु जागकु तेण कीध ।	"	६७
	—	वधा दस बीज विप्र वेद बोल ।	"	६२
अपादान	अ	हिव उत्तरी ब्रात गोवाळ हाथ ।	"	१४
	"	गयो जाणि कितामणि रक गांठ ।	"	१८
	हत	बटाहुत आयो अठ काज केहा ।	"	३३
	सू	इसो छोडी ते मानसू बात आडो ।	"	६८
	"	अहिनारिसू नारी नाल अनेरी ।	"	६६
सम्बन्ध	×	तत्रो बहका कस रयस खासो ।	"	७४
	"	रही घामडी देव दाण्य राणी ।	"	७२
	घो	घव नागणी बद्रिका मारची ही ।	"	२८
	"	दही दुध रावाचो भा सुवदाई ।	"	६३

चौ	उतारवा ए भोमचौ मार आयो ।	छद	९१
च	भलो हक बलभद्रच गाम भाई ।	"	५८
रा	काळीनागरा कान समाळ केवा ।	"	१३
र	पहूच प्रभुरे लटक प्रहूची ।	"	२४
रो	अमा नागणीपत्यरो जूळ आछ ।	"	५१
री	घर कसर तानरी टाट घुट्टी ।	"	७४
तणा	महामद्र जाति तणा कान मोती ।	"	२२
तणी	हुई दुह मटला तणी हेल हाथ ।	"	१२
तण	जमुना तण नाखियो नीर जाड ।	"	१२
तणो	तणो केसरी कसतूरी तिलक ।	"	२७
"	अवत्री तणो मारि ले कध आयो ।	"	६५
हू	दोहू भ्रुटो कोरहू देखि द्रूहै ।	"	२७
ओ	पडीछा नहींछी प्रिया राज पायो ।	"	११६
अधिकरण ×	इमो आज ते कोण भूलोक आछ ।	"	५२
"	मडायामथुरा धरा वास मोरा ।	"	५८
अ	सुण्यो रूप वेदै सु पेटयो सवेही ।	"	३२
"	पहूच प्रभुर लटक प्रहूची ।	"	२४
अ	हिंडोळ घलाड वर हलरायो ।	"	२९
माहै	पियूस दुवाबहि माहंपरेवा ।	"	६५
	मणि नग हीरातणी ज्योत माहै ।	"	२४
मां	जणणीतणी जूण मा ए न आयो ।	"	९१
सबोधन ×	प्रभू आपरा जाणि अचत पायो ।	"	९७
"	कहै कीजिय काहू भीरु विभाग ।	"	९

सामान्य टिप्पणिया

- स्वर से आरम्भ होने वाले प्रत्यय का प्रयोग करने पर पूर्व ण-द के अंतिम स्वर या प्राथ लोप कर दिया गया है ।
- तणी, माहै आदि प्रत्ययों का प्रयोग शब्द से पूर्व भी हुआ है ।
- सम्बन्ध कारक के प्रत्ययों में परस्पर शब्द के लिए लिंग वचन के अनुसार लिंग वचन का परिवर्तन हुआ है ।
- करण व सम्बन्ध कारक का 'आ' प्रत्यय केवल बहुवचन याची ण-द के आगे प्रयुक्त हुआ है ।
- बहुवचन में अकारात् ण-द के प्रत्यय लगने के पूर्व अंतिम 'अ'

विवक्ति प्रत्ययविहीन शब्दों के मूल तथा विकारी रूपों से काम चलाया गया है। यथा—

कारक	प्रत्यय	उदाहरण		
कर्त्ता	×	पशुस जसादा जिम चरुपाणी ।	छव	२
	×	जुव घेन घषीक काठ जमरा ।	"	१४
	भा	भगव्वानम घेन गोप्या भळाव ।	"	५
कर्म	—	बपुरी ग्रहे पान बाटा जसने ।	"	२
	×	जावा नागणी नाग वगो जगादा ।	"	३७
	×	बिया सारला लोक बेह विनारो ।	"	९
	नू	काळीनागनू भाणियो काग्ह कूड ।	"	१०१
	"	जसोदा तोई राजनू पुत्र जाणो ।	"	११५
	न	भगवानने धन गोप्या भळाव ।	"	५
करण	"	अहिरावने डाव कोई न सुझो ।	"	१९९
	×	गळ अघ्य ओषां सुरी-खेह पेवा ।	"	६१
	अ	घट्टू गेडिय गेद मदान घेरी ।	"	१०
	"	न बोठी कदीप नत्र निहाळी ।	"	३८
	"	कार्ने ही नयो सामळ भौ नागकाळी ।	"	३८
	सू	नवा नेहसू ते गोपी निहाळ ।	"	४
	"	हुई नदरी घेनसू घेन हेला ।	"	६
	ह	वाळीनागहू भाज ही कस काप ।	"	५२
	—	अज जागती गग राती जतत ।	"	३०
	सम्प्रदान	×	इतो वाळ बेरो दपो मू झ आव ।	"
नू		काळीनागनू जागणू तेण करीप ।	"	६७
—		बधा देस बीज विप्र वेद बोन ।	"	६२
अपादान	अ	हिव जतरी घात गोवाळ हाथ ।	"	१४
	"	गयो जाणि चिंतामणि रक गाठ ।	"	१८
	हुत	वटाहुत आयो अठ काज केहा ।	"	३३
	पू	इतो छोबी ले मानसू बात आङी ।	"	६८
	"	अहिनारिमू नारी मात अनेरी ।	"	६६
सम्बन्ध	×	तत्री बहका कस रंयत खाती ।	"	७४
	"	रही कामडी देव दाणव्व राणी ।	"	७२
	षी	घव नागणी चरित्रा मारची ही ।	"	२८
	"	बही दूध रावाची भा सुन्दई ।	"	६३

को	उतारेवा ए भोग तो नार आयो ।	७४	९१
घ	मलो हव बलभद्रच नाम भाई ।	"	५८
रा	वाळीनागरा बान सनाळ बवा ।	"	११
र	पहच प्रभुर लटव प्रतूषी ।	"	२४
रो	भमा नागणीपत्यरो जूत थाछ ।	"	५१
री	घर बत्तर तानरी टाट पुट्टी ।	"	७४
तणा	महानद्र जाति तणा बान मोती ।	"	२२
तणी	हुई दुद्र मल्ला तणी हत हाप ।	"	१२
तण	जमुगा तण माणियो न र जाड ।	"	१२
तणी	तणा बसरी बसनूरी तितवक ।	"	२७
"	अवप्री तणा मारि ते बध आयो ।	"	६५
ह	दोह भ्रष्टुगे वारह बेसि दूरी ।	"	२७
धो	पढीछा नहोछी प्रिया राज पाया ।	"	११६
अधिकरण ×	इमो भाग ते कोण भूलोक आछ ।	"	५२
"	महावा मथुरा घरा वात मोरा ।	"	५८
अ	सुण्यो रूप वेदै सु पेटयो सघेरी ।	"	३२
"	पहच प्रनुर लटवक प्रतूषा ।	"	२४
अं	हिडोळ घलाड घर हुतरायो ।	"	२९
माहे	पिपूत दुवायहि माहेपरेवा ।	"	६५
	मणि नग हीरांतणी ज्योत माहे ।	"	२४
मां	जणणीतणी जूण मा ए न आयो ।	"	९१
सवोपन ×	प्रभू आपरा जाणि घचन पायो ।	"	९७
"	बहे कोत्रिय वान्ह नीरु विभाग ।	"	९

सामान्य टिप्पणिया

- १ स्वर से जास्मन हाने वाले प्रत्यय का प्रयोग करने पर पूव ग-के अंतिम स्वर का प्राथ लोप कर दिया गया है ।
- २ तणी, माहे आदि प्रत्ययों का प्रयोग दाब से पूव भी हुआ है ।
- ३ सम्बन्ध कारक के प्रत्यय में परस्पर गन्द व लिंग लिए लिंग घचन के अनुसार लिंग घचन का परिवर्तन हुआ है ।
- ४ कारण व सम्बन्ध कारक का 'अं' प्रत्यय केवल बहुवचन वाली गन्द के आगे प्रयुक्त हुआ है ।
- ५ बहुवचन में अक्षरांत गन्द के प्रत्यय लगने के पूव अंतिम 'अ'

का प्राय 'आ' ही गता है।

- ६ ओकारांत वाच्य षट्पञ्चम वं उकारांत हो गये हैं।
- ७ द्विती क आकारांत " : [रागा, गग की लोड़ कर] रात्रापात्री वं आकारांत हो गये हैं।
- ८ ईकारांत व उकारांत गग के भागे षट्पञ्चम वं 'आ' वा 'या' जोड़ कर अंतिम स्वर को तुल्य कर दिया गया है।
- ९ इकारांत व उकारांत गगों क षट्पञ्चम ब्राले सामम उनरे ब्रागे 'आ' वा 'या' जोड़ दिया गया है।
- १० द्विती ओर सप्तत सप्त के मध्य आने वाले रेफ को स्वामीतरित करके गगों को विकृत कर दिया गया है। यथा—धम—प्रम, कम—कम इत्यादि।
- ११ जिन सग्वों म रेफ नहीं हाना है उनमे रेफ का आगम कर लिया गया है।

सर्वनाम

सागवमण मे सापनामों का जिन जिन रूपों में प्रयोग हुआ है। उनका विवरण इस प्रकार है —

अमा (हमारा रे)	अमा यय तांटा तणी पार भाप ।	छ ७३
	अमा नागणी परवरो जूझ आछ ।	॥ ५१
	अम्हा सामुणे हे ताणे लिज्जत भाव ।	॥ ८०
	तमा देव मोटा अमा मत्त पोटी ।	॥ ११२
अमारा रो (हमारा)	अमारा भगत्ता तणा एह गीरा ।	॥ ५८
	अन्णे घणो स्याम सुठो अमारो ।	॥ ५४
अमासू (हमारे से)	घापा भाज ते माप कोज अमासू ।	॥ ११३
अम (हमारे)	अमे हाय मे नागणी जाय एती ।	॥ ६६
आ (यह उमर्षालगी है)	वही दूधधी आ सुयदाई ।	॥ ६३
	पडोए चिऊ नीमड आ जघावो ।	॥ ७८
आप (स्वम)	ठगेया गयी आप आप ठगाण्यो ।	॥ ९२
	किमो आपसू आप आजीज काहे ।	॥ १०१
	सया- घना आप आप अरुच ।	॥ ११८
	प्रसू आपरा जाणि अघत पायो ।	॥ ९७
	दयो आपरी लाज लोधो दडुलो ।	॥ ३३
	किसू आपगे सोल आप कराव ।	॥ ८०
	सुणी नागणी आपणी हद्द माहीं ।	॥ ८६

	असदगार हुवौ अ।पं अप्पलाणी ।	छंद ११८
इसा (ऐसे)	रडीज इसा मात आग रडाळा ।	" २७
इसो (ऐसा)	इसो बाल देवी दया भू म आवं ।	" ३५
	इसो छोट ल मातमू बात भाडो ।	" ६८
उवं (उसने)	अवीराज मारा उवं कीष आरा ।	" १०३
अे (यह)	जणणी तणी जूणमां ए न आयो ।	" ९१
	उतारेवा ए मोमचो मार आयो ।	" ९१
अेण (इस प्रकार की)	जाण्यो अेण जुगति ।	" ४
अेनं (इसकी)	सखी बाळ अेनं त्रिभुषम सूत ।	" ८८
अेह (यह)	लला लू नहीं एह कू दत सुणी ।	" ७१
	लम एह भूषया पछ छांट लाग ।	" ७३
	अहीराव न डावडो एह भाडां ।	" ८४
	बिठ त्रिजरी एह उच्छाहू बाळी ।	" १२१
अेहरी (इसकी)	अठ एहरी गम्म एहां अवेसा ।	" ८७
अैरी (इसकी)	अैरी जोवान देखी चलन हेरी ।	" ८६
अै (ये)	अवीज नहीं बोल अ काळ चाळा ।	" ३०
अैरै (इसके)	अैरै कू ण लाज पखी आव ओरो ।	" ८१
अैसी (ऐसी)	अैमी भागणी कू ण जे कूल आयो ।	" २९
अौ (यह)	पड लातरी धेन औ नीर नीर पीध ।	" ६७
	त्रिलोरी न प्राप्तइ योहा औ न बू म ।	" ८७
	गितो डावडो औ वळो देख जाण्यो ।	" ९२
	मारया ही पप घाव सू औ न मान ।	" १०८
काही (कोई)	कही सू पडो बपडो तीर काही ।	" ६६
किसै (कौन से)	सड सो त्रिमै मूळ पूछा लडाई ।	" ५०
किही (किसी ने)	किही कोर अपी रही मा बकाव ।	" ३५
कू ण (कौन)	असी भागणी कू ण जे कूल आयो ।	" २९
	अड कू ण बाळी तणी सीम चाप ।	" ५२
	अळ दूसरो ताहर कू ण वीरो ।	" ५७
	अर कू ण ताज परी आव ओरो ।	" ८१
केण (कौन से)	सूतो साप जगाडीज केण कोड ।	" ६८
कौण (कौन)	इसो आज ते कीण भूलोक आछ ।	" ५२
जिव (जो)	त्रिभाव जिकै भावता भोग जाणी ।	" २
जिरी (जिसकी)	जिरी पृ क आग मर दू क काला ।	" ५३

जे (जिसकी)	असी मागणी कून जे कूर आयो ।	छद २९
जेही (जिस)	जसोदा बटो बटो वम जेही ।	" १५
जेही (जिसों की)	सामी रोय महेम जेही न सून ।	, ११६
तमा (तुम-आप)	तमा देय मोटा अमां मस घोरी ।	" ११२
	तुशारा रेकारा जिशारा तमासू ।	" ११३
ता (बह)	बई बासटो सिगटो नाववा ता ।	, ७८
ताहरी (तुम्हारी)	तव ताहरी बेप एमवट्टू प्रूटो ।	" ६४
तियं (बे)	न सम तियं नागणी घोस घू दो ।	" ६४
तिसो (बसा)	तिसो नागणी मशुरोवन टोको ।	, १२
तुना (तुम्हें)	मज नव तोई तुना पुत्र भावं ।	" १५६
	तुनं देतावू घाज बगा तमासा ।	" ५
तू (तु)	जुडेया जू तू नाग काळी जगव ।	" ४०
	पछा पोवरा नागणी तू विछाण ।	" ६९
	लछा तू नहीं एह पूवत सुणी ।	" ७१
	ग्रहिनारी तू एह नेठाह आण ।	" ७२
	बह नागणी सुण तू रोप कान ।	" ७६
	मजाण वाळ तू धकूचाळ मापी ।	" ९२
तूझ (तुम्हारे)	बटवरा अटवकी नहीं तूझ केडे ।	" ४१
	दियो वास दूरतर तिको तूझ दाड ।	" १२०
तूही (तुम्हो)	खरो हेक तूही बिया खव खोटा ।	" ११३
ते (बह)	रम्यो स्यांम ते ठाम जोवत रामा ।	" १९
	जुधो नागणी ते हुतो मव्यु जायो ।	" ६५
	ते धवण मुण्ण अहिराव तणां ।	" १२२
	आया आज ते माफ कीज अमासू ।	" ११३
तेण (उस)	काळीनागू जागवू तेण कीध ।	" ६७
तेह (उसे)	मया नेहसू तेह गोपी निहाळ ।	" ४
तोनु (तुम्हें)	पले ततला आज तोनु पसाय ।	, ८२
तोन (तुम्हें आपको)	जुड रूप तोन प्रणावत जेहा ।	" ११४
तोसू (तुम्हारे से आपसे)	हिव जोडि तोसू वातां याद हारी ।	" ८१
थारा (तुम्हारा आपके)	खम आज थारा भुज सेप भारा ।	" १०५
थारी (तुम्हारी-आपकी)	जुन बस थारी परस्ते सनेहो ।	" ४०
थार (तुम्हारे)	काळीनु न नासू तो थार कमावू ।	" ७७
	विस मोरळो हेक थार दुगुजता ।	" ४९

	पत लोहवी लोह रिछवा न थारै । छव ४९
	वधारया न थारै अज धाळ बाळा । „ ३९
धारो (तुम्हारा)	नहीं नागणी नाग थारो निवार । „ ७७
	प्रिया तातन गोत्र थारो पिछाणया । „ ६७
मूहै (मुझे)	एटवरु मुहै नागणी बोल खारो । „ ३४
मूझ (मेरा)	प्रभू जागसी मूझ पाछा पधारो । „ ३४
मूझ (मुझे)	इसो धाळ देवी दया मूझ आव । „ ३५
मूझ (मेरे)	मण्या नागपत्नी जिता मूझ भीर । „ ५७
	मोरे कस मामो रहे मूझ मूळ । „ ५९
	वह आज ते नागणी मूझ धारो । „ ६१
	वृया वंण जाण रख मूझ धाळा । „ ७२
मो (मेरे)	जप मो दिसी जेम काळी जगाडो । „ ६८
मोरा (मेरा)	मडाया मयुरा धरा धास मोरा । „ ५८
मोर (मेरे)	मोर नद बाबो जमुमति माई । „ ५९
	मोरे कस मामो रहे मूझ मूळ । „ ५९
	मोर देख आहीर ख गाम मांह । „ ७३
मोरी (मेरा)	मोरो घाट वराट एथ न भावू । „ ३१
	मोरो एह पकालियो द्रोहमाणी । „ ५५
	मोरो जागसी स्वाम धाय मधूरं । „ ९४
राज (आपके)	पडीछा नहीं छी प्रिया राज पायो । „ ११६
राजनू (आपकी)	जसोदा सोई राजनू पुत्र जाण । „ ११५
रावळो (आपका)	वळो रावळो वणिओ देखि बाईं । „ ९३
वा (उसने)	रड दाढ काढ कियो वा न रीसा । „ १०७
वो (वह)	बळ वो सादर धरणवू । „ १
वेही (वे)	वडा भागरी नागरी नारी वेही । „ ३२
सोई (वे)	प्रभू अग लागी सोही फूल पाखी । „ ९९
हू (मैं)	इता बीहवो हू हृतो उप्पवासी । „ ६०
विशेषण	

नागदमण मे विनेयणों का प्रयोग हि दी की तरह ही हुआ है तथा उनके लिए और धचन विनेयणानुवर्ती होते हैं । गुणवाचक विनेयणों मे कुछ डिगल भाषा के मौलिक विनेयणों का प्रयोग भी हुआ है । सख्यावाचक विशेषणों मे योगिक सख्याओं के द्वारा बने प्रयोग विनिष्ट कहे जा सकते हैं ।

गुणवाचक

अहीनो	अहीनो न लोके विरापात् लभः ।	४१
अत्रया	अत्रया कृते धीम जेया अत्रया ।	८२
अमूढो	अमूढो मूर्खो मर्षं काञ्च भावो ।	९३
अमूढा	अमूढो अमूढो मर्षं काञ्च भावो ।	९३
आवया	आवया गती भावः सून भावः ।	४१
आवय	दृष्टो दारुणो भावः भाव भावो ।	५४
आवरो	भावो भावरो भावितो भाव भावो ।	११
आ ही	भवे चोर वारण मूढ अमूढः ।	९८
ऊ ष	गुरुष्ठी लघु भावनी ऊ ष भेदा ।	६१
ऊषी	अत्रिपरी जग्य लई भोग ऊषी ।	२४
ऊषो	विजिग मभोगे षण ऊषी मभापो ।	९७
ओछो	मधरीर तांता मिता मधरी मारी ।	९५
वाञ्चता	षवनें मही भोग अ ताञ्चता ।	१७
वाञ्चो	वाञ्चो भावितो ऊरर वाञ्चता ।	१११
वारता	वाहारा वारता लघु ह्यम वारता ।	१०३
वारो	लटकक मूढ भावनी धीम वारो ।	३४
वचनता	मभाण वाञ्च लू वाञ्चता भापो ।	९२
मूढा	अमूढो मर्षो मर्षो मूढो अमारो ।	५४
म्वरी	वित् दधरी लघु मारी वरस्ती ।	४५
दताञ्च	दताञ्च पदाञ्च दताञ्च न हापी ।	४२
दुमल्ला	दुरगा दुमहा दुमल्ला दुमल्ला ।	४१
दुवाहा	दुरगा दुवाहा दुमल्ला दुमल्ला ।	४१
दुरगा	दुरगा दुमहा दुमल्ला दुमल्ला ।	४१
दुहल्ला	दुरगा दुवाहा दुमल्ला दुमल्ला ।	४१
धीठ	नमो धीठ धोटा षय भावनापी ।	८१
तवा	नवा नेह मू तेह गोपी विहाळ ।	४
	तवा नेह वीर्य्य पत्रम मत्र ।	६२
नवो	विहाणु नवो तय तामो धरेसा ।	१
नव	तय विहाण नति ।	४
नामजहा	जुवेवा न वी उम्परा तामजहा ।	४२
नीवो	मरां छेह लाम रह देह नीवो ।	६२
नीला	भाळ विर्य्य नीला वह विर्य्य भाळा	५३

पटाळा	हटाळा पटाळा दताळा न हाथी ।	छद	४२
पाघोर	बोत घादतो कोर पाघोर बोल ।	"	७८
भल्ला	भडारा नहीं आवसा झूल भल्ला ।	"	४१
भल्ली	भल्ली गगणी नावियो राह मूली ।	"	३३
भल	भट्टो अट्टो भल काज जायो ।	"	९३
भलो	भलो हक बलमद्र च नाम भाई ।	"	५८
भुजाळा	सचाळा भुजाळा लकाळा न साथी ।	"	४२
भौळा	भरीज नही आभणू वाथ भौळा ।	"	३९
बडा	दत बडा चा दत	"	२
बटा	बटा भागरी गगरी नारि वे ही ।	"	३२
	बटा शृ ग सीतग हेमग वाळा ।	"	५३
	बडा गोपरी पुत्र आयी विहाण्यां ।	"	६७
	बडा नीच मूवाळ केकाण वाळा ।	"	८४
	बडा जोपसी जुड बाह बडाई ।	"	९६
वाकी	पपाण न बाण ग फम्माण वाकी ।	"	४५
मथारा	थभेरी न हूका लहका मथारा ।	"	२०
मधूर	मोरो जागसी स्याम वाय मधूर ।	"	९३
रगराती	रमै सग गोवाळिया रगराती ।	"	११
रगी विरगी	बधी घोळमा रग रगीविरगी ।	"	२८
रुडी	वईकु ठ रै नाथ रुडी विचारी ।	"	९
लकाळा	सचाळा भुजाळा लकाळा न साथी ।	"	४२
सचाळा	सचाळा भुजाळा लकाळा न साथी ।	"	४२
सयाणी	सवाहे सखी लार हाली सयाणी	"	१६
सीतग	बडा शृ ग सीतग हेमग वाळा ।	"	५३
सुचगी	सुहै उपरा पाग लागी सुचगी ।	"	२८
हटाळा	हटाळा पटाळा दताळा न हाथी ।	"	४२
परिमाणवाचक			
ऊड	उभ जू ग जेथी फिर नीर ऊ टै ।	"	१०१
घणा	प्रभू घणा चा पाडिया ।	"	२
	घणा दीह री मू कियो नेन घात ।	"	६०
घणी	घणी घूमर डबर घेर घेरी ।	"	१०
	घणी भोम चाली चढी वात घोड ।	"	१५
	महम्मा घणी प्राणण घेन माही ।	"	६६
घणू	घडाव घणू साकड तीर घाटै ।	"	१२

घणै	घणै उच्चय इयाहिय घेट प्रेवा ।	६५
घणौ	धरठो घणौ साम झूठी धमारो ।	" ५४
	घणौ घातियो सांभड ह्याम घेरो ।	" ९८
जाडे	जमूनां तण नातियो नीर जाडे ।	" १२
घड	घड घेहड हह माती न पट्ट ।	" ४८
सयी	मिल छोट सांभी सयी बोट माय ।	" १२
सबै	सय भ्रामला सामला प्रत्यसदा ।	" ८
	रमवा सयै साय स हेक राग ।	" ९
सामट्टी	धाम नागणी भेट सामट्टी आण ।	" ११७
सारै	हाटाकार हक्कार ससार सारै ।	" १५
सखेप	प्रगाचार नारव सखेप गाई ।	" ९६
सरयावाचक	रमवा सब साय स हेक राग ।	" ९
हेक	मिल आवता ऊलट हेक भेर ।	" ११
	खड थापड हेक हेका खघोळा ।	" १७
	ऊनी घू ट हेको करी जात आरा ।	" २०
	मिळो नागणी हेक हेका मिलाव ।	" २१
	दिस मोरली हेक धार दुभुजा ।	" ४९
	सु ह जोड होसी घडी हेक मांहे ।	" ५६
	मलो हेक बलमद्र घ नाम भाई ।	" ५८
	जणणी किणीं हेक स ही ज जायो ।	" ८३
	सरो हेक तू हो बिया सब रोटा ।	" ११३
इकी वेवटी	इकी वेवटी चौबट आय ऊनी ।	" ६
एकणी	पुणू एकणी धार इक्कीस पाळां ।	" ७२
एको	नहीं सेन सनाधि एको सजाई ।	" ५७
उभै	पचास उभै खट्ट दो पट्टराणी ।	" ९०
	इख्यासी उभ सौ दस धापि जाठ ।	" ९१
	उभ ज ग जेयो फिर नीर ऊ डै ।	" १०१
	दिस मोरली हेक धार दु भुजा ।	" ४९
	दुह भुज कर काळी वमण ।	" १२२
	नारां गाठियो सू ट दूजी न खायो ।	" ८३
	वळ दूसरो ताहर कूण धोरो ।	" ५०
	पचासा उभ पट्ट दो पट्टराणी ।	" ९०
	पचवार पिडार या दोह पास ।	" १०

उ
 दुह
 दूजी
 दूसरो
 दो
 दोह
 ६४

विऊ	घडीए विऊ नीमड भा जपायो ।	७८
विहू	विहू लोवन नीर पारा यहती ।	" १८
विहै	चव मात, भ्राता विहै धेन चारी ।	" ६१
विया	उरो हेव तू ही विया खव छोटा ।	" ११३
वेहू	विपा सारणा लोक वेहू विनारी ।	" ९
	यठ मांडसां आज वेहू थपाडो ।	" ३७
त्रि	सपी बाळ ऐन त्रिभुवन सूक्ष ।	" ८८
त्रिहू	पल त्रिहू पोटी मानो सीख मोरी ।	" ८१
त्रीन	एर त्रीन एडो नमस्तेय काहा ।	" १४
त्रीजं	तर भायिनी जागसी जाम त्रीजं ।	" ६९
पचा	पचा अग्रत दव इच्छ पलाळा ।	" ६३
एठ	पचासां उभ खट्ट दो पट्ट राणी ।	" ९०
आठ	इठ्यासी उभ सौ दस याधि आठ ।	" ९१
नी	दूज नदर धन नी लएण दूणी ।	" ७१
दमै	इठ्यासी उभ सौ दमै याधि आठ ।	" ९१
सोळ	जळाबोळ माटै बळा सोळ जहो ।	" ९९
	सहसां लिखी सोळ भर सयाणी ।	" ९०
वीसा	यदम्रं व्है शोण पचास वीसा ।	" १०७
इक्कीस	पुणू एकणी वार इक्कीस पाळा ।	" ७२
	अह्मांड इक्कीमा देलाची विहाण ।	" ११५
पचामा	पचासा उभ खट्ट दो पट्टराणी ।	" ९४
पचास	यदम्रं व्है शोण पचास घोसा ।	" १०७
साठ	ताली देल बेटा लिख्या सरल साठ ।	" ९१
इठ्यासी	इठ्यासी उभ सौ दस याधि आठ ।	" ९१
सौ	इठ्यासी उभ सौ दमै याधि आठ ।	" ९१
सहस्सा	सहस्सा लिखी सोळ भर सयाणी ।	" ९०
सहस्सै	यदम्रं सहस्सै वध श्योम ध्याळा ।	" ५३
हजारा	हजारा भुसां जागसी नाग हेम ।	" ३६
हजार	हिच एव ही गांठ पेर हजारै ।	" ७७
एरख	सपी देण बेटा लिख्या लएण साठ ।	" ९१
कोड	खणी बात साका बधी कोड पाजा ।	" ९८
	गिणां घाद जोता केई कोड गाडा ।	" ८४

साधनामिक

पुण्यपापक तथा निजवाचक साधनामों को छोड़ कर अन्य साधनामों

का प्रयोग विनोदन की भाँति हुआ है। उदाहरण के लिए देखिए तर्जनाम ।
 क्रिया

भाषा में क्रिया का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भाषासमन्य में साहित्य
 प्राप्त तथा वज्ञान प्राप्तियों के विविध विधाएँ प्रयुक्त हुई हैं। काव्य का
 संव्यवहारक काली में ही के कारण बतमानवातिर क्रिया कर्तों की प्रचुरता
 है। त्रिधा बहु प्रयुक्त प्रत्यय 'अं' है। 'उ' व 'है' बहुत कम प्रयुक्त हुए हैं।
 भूतवातिर क्रियाएँ बहुधा भोजारंग हैं। मध्यम्यवृत्तान्त ज, ती, ताँ मो, ऊ
 प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है। कतिपय उदाहरण दृश्य हैं—

रम राग गोवातिरां रग रागी ।	४४	११
यहै ताँमळो बज तेरी बिनाळी ।		४
गया नेहपू तेह गोपी तिगळी ।		४
भाया ओद्रा गुरमां एगि भार ।		४९
इतो भाज त बोन भूतके आछ ।		५२
रगा तारसी है तलो घण रेसा ।		९०
पर भूरळी गाव टाडो बग्टाई ।		९५
विठ ताँग ताँमळो गुर घापी ।		१०१
बाळी नागपू लोजिए घनि बानो ।		३४
किही बोर घपो रही मां यनाय ।		३५
जमना जल्पई नागणो छोटि जोरा ।		५५
घरवाळ न मुह मां चाटि घाई ।		७९
देवो आपरी लाज लोघो बहूलो ।		३४
बटकां भटकां नहीं गूग बेड ।		४१
घळ बो तावर वरणपू ।		१
भूतवालिक् प्रयोग		
पुळी न'र नीसार आवी प्रट्ट ।		" ७
वाई वांतळी तिगळी नादवा तां ।		" ८
घणी मोम चाली घणे घात घोड ।		" १५
जसोवा टळी बहूळी तम जेही ।		" १६
पढीछा नहीं छी प्रिया राज पायो ।		" ११६
माम मोवळी लोजाा बरण मासी ।		" ६०
तव ताहरी बेघ लत्रघट्ट नूटो ।		" ७४
जमूना वही पुर सिदूर वन		" १०८
मह्यांइ इवपीसा वेजावी विहांग		" ११५

किर्णन दीठी का हवो गुण्यो न लीला सप	छंद	३
धवनी भार ऊतारया जाग्यो एण जुगति	"	४
जमूना तण नाखियो नीर जाड	"	१२
बडी लार काहो चढ्यो घछ डालो	"	१३
बलबेव घूइयो दिखाळयो मुदामा	"	१९
न दीठी कबीये न नत्र निहाळी	"	३७
घळो मोकळो माळिय लाडवायो	"	८०
ठगवा गयो आप आप ठगाण्यो	"	९०
बळी राव जेहो छळी एण बाधो	"	९२
पयो मार पांण भयो गात्र भग	"	११०
घळो फेरियो आगण नद वाळ	"	११९
प्रभू घणां चा पाडिया	"	२
तवे नदरे नेस बलमद्र न हृता	"	७५
पखे पार पिडार था दोहू पासै	"	१०
जगाडया जसोदा कदूनाथ जाग	"	१

भविष्यत्कालिक प्रयोग

धमा नागणीपत्यरी जूझ आछे	"	५१
हुसी ठाकरां आकरु आज थारो	"	५४
तुने देखावू आज वेगा तमासा	"	५५
फणीनाथ मे क्षालवू एण पाणी	"	५५
मु ह जोड होसी घडी हेक मांहे	"	५६
फणीपेण न खावसी देखि फोरा	"	५६
तरै आविजो जागसी जाम श्रीजै	"	६९
चवीजै नहीं बोल अै काळचाळा	"	३७
फाळी मू न नाथू तो थारै कमावू	"	७७
मोरो जागसी साम वाय मघूरै	"	९४
बडा जीपसी जुद्ध वाहं बडाई	"	९६
अठै माडसा आज वेहू अखाडो	"	३७
हजारां मुलां जगसो तर हेकां	"	२६
बुलाडो जगाडो जुवो जुद्ध धार्य	"	५१

अव्यय

नागदमण मे क्रियाविशेषण, नामयोगो, सयोजक और केवल प्रयोगी भेद से चार प्रकार के अव्ययों का प्रयोग हुआ है जिनका छंद सख्या सहित अकाराधिक्रम इस प्रकार है —

भवाणक (२१), भज (३९, ४०, ४४) अठ (३३, ३७), आ (६३ ७८)
 आकट रो (५४ ११), भाग (७५), भागो (८३), आज (३, ३७, ५४, ५५, ८२,
 ८३), इसो (१०९), ऊचो (६४), धण (४, ४९, ५५), अट (५५, ७२, ७३, ८४, ९
 २१), जेहरी (८७), जेहा (३५), जेहा (८७), जोछो (९५), ओरी (८१), ओ
 (९२), कठ (३७) कटा (३३), कदि (३७), िणो (८३ ९५), किमू (४१, ८०,
 ८९), को (११५), कूण (५२, ८१), के (२), केई (८४), कण (६८) केमि
 (११४), कहा (११४), को (८२, ९०), गुड (१९), घणां (२), चमकी चमकी
 (३१), घो (९१), ज (५९, ८३), जाण (६, १०, १३, ४८, १००), जाणि (१८,
 ९७), जाण (२७, ११७), जिहू के (५४ ११७) जु (४०), जे (२९ ६९ ७०),
 जेता (८२) जेम (१०५) जेहा (११४) जेही (११५), जेहो (९२) तणी
 तण तणी (५९, ९१ १२०, १२१), तव (७४, ७५), तर (६६) तिक को
 (६४, १२०), त (१९, ५२, ५६, ६१), ताई (११६) तोर (८२) तोर (५०)
 थोथी (११२), तो दिसी (६८ १२०), बुरतर (१२०) धारआण (७३), न
 (चहुप्रयुक्त), नवी (४२), नवी (३८), नमो (८१), नहो (४१ ४३, ५०
 ७७, ७८, ७९, ११६), नाही (४४, ४५) ना (८२, १००), नित (४),
 न (८४, १०१, १०६, १०८) नहो (५९), पछ (७३), पहेला (७८), पाछो
 भागो (८३), पाल (७०), पास (११६) पासा (५५), पासै (१०),
 पुणि (२२), पूर (१०८), बिच (२३), बिचाळ (४), बवा (५५), बारबारा
 (१०३), मल (३०), म (२० ३५ ३९, ७९, ९२) मां (३९, ७९), मामू (३०)
 माहे (२४, ६५ ९९), माहोमाह (३२) मूळ (५०) मूळ (५९), मोकळी (८)
 ळी (९), रसाळी (९६), रीतो (७०), सार (४ १३) यळ (२५, ३१, ५७,
 १११, ११९) विहाण (१, ४ ६९), विहाण्यी (६७), विचाळ (१६, ११९),
 यंगो (३७, ११७) घुषा (७२), सग, समा (१५), सांठ (९८) सामहो
 (८०), सांमो (१२), सार (३), सारा (१०२), सिर (१, ११२), हिव (१४,
 ७६, ७७, ८१), ही (५२), हुबवक (४८), हे (८०), हेवा (३६) ।

चतुर्थ अध्याय

नागदमण का काव्य-सौष्ठव

स्वरूपगत भेद को दृष्टि में रखते हुए प्राचीन संस्कृत आचार्यों ने धर्म्य काव्य को गद्य, पद्य, मिश्र नामक तीन वर्गों में विभाजित किया है एवं पद्य काव्य को भी महाकाव्य, खडकाव्य, मुक्तक काव्य नामक तीन उपवर्गों में बाटा है। इन सब में प्रमुखता महाकाव्य को मिली। महाकाव्य के स्वरूप-गठन का सब प्रथम विवेचन आचार्य नामहू ने अपने पाठ्यालंकार नामक लक्षण-ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् बडो, रुद्रट, हेमचंद्राचार्य इत्यादि विद्वानों ने इसकी सक्षिप्त विवेचना की। महाकाव्य का सबसे सुंदर एवं विस्तृत विवेचन आचार्य विश्वनाथ के साहित्यदपण में उपलब्ध है। खडकाव्य पर विचार करते हुए साहित्यदपणकार ने लिखा है—

खण्डकाव्य भवेत्महाकाव्यस्यकदेगानुसारि च ।

—साहित्यदपण, पृष्ठ परिच्छेद श्लो० ३२९

अर्थात्—महाकाव्य के एक जग का अनुसरण करने वाला खडकाव्य होता है। इस लक्षण के उपरांत भी खडकाव्य की स्वरूपगत विशेषता जानने के लिए महाकाव्य की विशेषताएं जानना शेष रह जाता है। इसके स्वरूप को जाने बिना खडकाव्य और महाकाव्य की सीमाएं निर्धारित करना असंभव है।

साहित्यदपणकार ने महाकाव्य के स्वरूप का विवेचन निम्न रूप में किया है —

- १ महाकाव्य का कथानक सर्गों में विभाजित रहता है।
- २ महाकाव्य का नायक कोई देवता या धीरोदात्त गुणों से समन्वित कोई उच्चबुद्धिमान क्षत्रिय होना चाहिए। एव ही वंश में उत्पन्न अनेक नरेश भी उसके नायक हो सकते हैं।
- ३ शृङ्गार, धीर तथा शांत में से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए।
- ४ उसमें नाटक की समग्र सधियों (मुख, प्रतिमुखा, गव, विमश, उपसंहृति) को स्थान प्राप्त हो।
- ५ महाकाव्य का कथानक या तो ऐतिहासिक होना चाहिए या

सज्जनाधिगता ।

- ६ उसमें चार वर्ग (पम प्रथम वर्ग मो) में से कोई एक पद स्वल्प में होना चाहिए ।
- ७ प्रारम्भ में नमस्कार, आशीर्वाचन अथवा मुद्रा कथा की ओर संकेत के रूप में मंगलाचरण पतमान रहता है ।
- ८ उसमें कहीं कहीं दुष्टों की निंदा और सभ्यता की प्रशंसा होती है ।
- ९ महाकाव्य के सर्गों की संख्या आठ से अधिक होनी चाहिए और इन सर्गों का आकार बहुत बड़ा या बहुत छोटा भी नहीं होना चाहिए । प्रायः प्रत्येक सर्ग में एक ही छंद का प्रयोग होता है और सर्गांत में छंद परिवर्तन अपेक्षित है । कहीं कहीं सर्ग में विविध छंदों का प्रयोग भी हो सकता है । प्रत्येक सर्ग के अंत में आगत कथा की सूचना होनी चाहिए ।
- १० उसमें सध्या, मूय, चंद्र, रात्रि, प्रदोष, अक्षय, दिन, प्रातःकाल, मध्याह्न, मृगया, पवत, ऋतु, वन, समुद्र, सयोग, वियोग, मुनि, स्वयं, नगर, यज्ञ, युद्ध, यात्रा, विवाह, मंत्रणा, पुत्रोत्पत्ति आदि का यथानुसूल सांगोसांग वर्णन होना चाहिए ।
- ११ महाकाव्य का नामकरण कवि, कथावस्तु, नायक अथवा किसी अन्य व्यक्ति के नाम के आधार पर होना चाहिए और सर्गों के नाम सर्गांत कथा के आधार पर होने चाहिए ।

उपयुक्त लक्षणा का ध्यान में रखते हुए विचार किया जाय तो नागदमण में महाकाव्य के अधिकांश गुण उपलब्ध हैं । नागदमण की कथा एक प्रख्यात पौराणिक कथा है । इसके कथानायक श्रीकृष्ण पूणब्रह्म परमेश्वर एक नायकोचित गुणों से सम्पन्न हैं । आरम्भ में मुद्रा कथा की ओर संकेतवित मंगलाचरण विद्यमान है । समस्त काव्य में वीर रस अंगीभूत है वात्सल्य, शांत रस सहायक रूप में प्रयुक्त हुए हैं । काव्यवस्तु— पाचों नाटकीय सधियों में विभक्त है । सज्जन स्तुति एवं खल निंदा का प्रसंग यत्र तत्र जाया है । प्रातःकाल, गो दोहन, गो चारण, कडुका क्रीडा सयोग वियोग, सपवर्णन, युद्ध इत्यादि प्रसंगों का यथानुसूल वर्णन हुआ है । समग्र काव्य में मंगलाचरण तथा बलश को छोड़कर एक ही छंद का प्रयोग हुआ है । इसका नाम कथावस्तु के आधार पर है । पुरुषार्थ चतुष्टय फल के रूप में प्राप्त है जिसे स्वयं नागदमण कार ने यत्र तत्र स्वीकार किया है । इतना सब कुछ होते हुए भी यदि कोई धृष्टि है तो यह है—काव्य की सर्गहीनता और वस्तुसंक्षेप । नागदमण को कथा का सबंध मात्र एक दिन की घटना से है । इसमें समग्र जीवन की व्याख्या समुपस्थित करना कवि के लिए कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी था । फिर भी मूला साया ने अपनी काव्य प्रतिभा के बल से नगवान श्रीकृष्ण के लोकीय

कारक स्वरूप की विप्रमय भाकी उपस्थित करते हुए गोरक्षा का संदेश प्रामुक्त किया है वह किसी भी महाकाव्य से कम नहीं है। परन्तु शास्त्रीय दृष्टिकोण से यह खडकाव्य की ही परिधि में आता है।

नागदमण का रस-निरूपण

रसयुक्त वाक्य ही काव्य है¹—बह कर रसवादियों ने रस की महत्ता प्रस्थापित की है। नागदमण वीर रस प्रधान काव्य है। झूला सोयाजी का भगवान् धीकृष्ण के अनन्य भक्त होते हुए भी वीर रसाचित भगवच्छरित्र का ध्याएषान करना उनकी वंशगत विशेषता है। चारण कुल सदा से ही वीर भाव का विस्तारक रहा है। नागदमण का नेति नेति प्रक्रिया द्वारा चतुर्विध सौम्य तथा गस्त्रास्त्र घणन उक्त परम्परा का सुन्दर निर्वाह है।

विभाव, अनुभाव तथा सचारी भावों के संयोग से परिपुष्ट स्थायी भाव ही रस का स्वरूप ग्रहण करता है।² वीर रस का स्थायी भाव उत्साह माना गया है।³ इसके दान, धर्म, युद्ध और दया यह चार भेद अलंकारिकों ने बताये हैं।⁴ नागदमणमें अगिरस स्वरूप युद्धवीरका वर्णन हुआ है। रसके आश्रय भगवान् धीकृष्ण हैं और आलम्बन है कालिय नाग। नाग का विष प्रभाव से यमुना के जल को दूषित करके गौ तथा गोमाल समाज को हानि पहुंचाना और नागपत्नियों द्वारा भगवान् को केवल साधारण बालक एवं कालिय को एक बहुत बड़ा वीर समझना, उद्दीपन है। कालिय के भयकर आक्रमण के समय भगवान् का निश्चल रह कर उसके प्रहारों को विफल करने की चेष्टाएं अनुभाव के रूप में वर्णित हैं। गव, तक, स्मृति इत्यादि सचारी भावों का यथा स्थान निरूपण हुआ है तथा वात्सल्य, करुण और रौद्र रसों का सहायक रसों के रूप में घणन है।

यद्यपि विषय विषय वस्तु के आधार पर नागदमण एक वीर रसाचित खण्डकाव्य ही निर्णीत होता है। परन्तु कवि का अंतिम लक्ष्य भगवान् धीकृष्ण की सीला शायन द्वारा सात्त्विक दुःखों से विवृत्त होकर मोक्ष प्राप्ति है। इसी कारणसे यह कृति भक्ति रसाचित ही मानी जाएगी।

नागदमण में भक्तिरस

प्राचीन आचार्यों ने भक्ति को स्वतंत्र रूप से रस की संज्ञा नहीं दी है। गीत रस के अंतर्गत भावरूप से इसका वर्णन है। देवता आदि विषयक रस को भाव कहा गया है⁵ रस नहीं परन्तु यह बात कहीं तक उचित है ?

¹ वाक्य रसात्मकं नायम्—विश्वनाथ

² विभावैश्चानुभावैश्चायत् सचारीणा तथा।

रसतामनि इत्यादि स्थायी भाव सचनमाम् ॥—सा० द० परि० ३

³ उत्साह स्थायी भावरूप—बड़ी परि ३

⁴ दान धर्म युद्ध दया आ समाश्रितश्चतुर्धास्थान्—बड़ी परि० ३

⁵ रनिर्देवादि विषया यमिचारी तथाश्रित । भावप्रोक्त ।—काव्य प्रकाश

भगवत्-रस भाग्यत आदि ५ भयः स जो भक्ति रस का अनुभव करते हैं वह उप भाग्य गर्हा । उस रसका आसक्त भगवान्, पुराणादि भयण उद्दीपन, रोमांच आदि अनुभाव तथा हृद्य आदि सघारो हैं । स्वाधी २—भगवत्प्रियवत् प्रेम रूप भक्ति । इसका गति रस म समाधेय नहीं हो सकता । कारण यह कि—प्रम, निर्वेद वा धराय व विच्छ है और धराय ही गति रस का स्वाधी भाव है ।^१

ईश्वर म परम अनुरक्ति को भक्ति कहते हैं ।" यह दो प्रकार की मानी गई है —रागानुगा और यधी । यधी से रागानुगा भक्ति को अर्थ माना गया है । इसका भी दो भाग हैं— वामरूप और सम्बन्धरूप । विषय सम्भोग तृष्णा को वाम कहते हैं । इन्द्रियाभ ही बद्ध जीव का विषय है । इसीलिए पण्डित लोग इसे वाम कहा करते हैं । जिस जगह परमस्वरूप भगवान्, विषय रूप से धरण नियमित हैं, उस जगह विषय सम्भोग तृष्णा को प्रेम कहा जाता है । वाम और प्रम म स्वरूपगत भेद नहीं है, केवल विषयमात्र का भेद है ।^२

प्रेमाभक्ति की दो अवस्थाएँ होती हैं—भाव और प्रेम । अलंकारिक वेदान्ति विषयक रति को भाव कहते हैं रस नहीं यह पहले प्रकट किया जा चुका है । पर यथ्य भक्तों का भाव उगरे मित्र है । जहाँ अलंकारिक कृष्ण सवधी रति को केवल भाव कहने रस नहीं, वहाँ भक्ति गान्धो उसे रस भी कह सकते हैं । भाव शुद्ध रति है । अलंकारिकों की रति से यह रति मित्र प्रकार की है । स्त्री पुत्रादिक के प्रति जो रति है यह बद्ध जीव की जठ विषया रति है । पर धीकृष्ण व प्रति भक्त की रति विद्विषया होती है^३ अर्थात् अलंकारिकों के रस जड़ो मुक्त हैं और भक्तों के रस ईश्वरो मुक्त" यहा दोनों मे भेद है ।

भक्तिरस शास्त्रियों के मतानुसार भक्तिरस व्यापार म निम्नांकित पांच भाव होते हैं— १ स्वाधी भाव, २ विभाव, ३ अनुभाव, ४ सात्त्विक भाव और ५ सचारी भाव । इनकी परिभाषाएँ अलंकारिकों जसो ही होती हैं । स्वाधीभाव नाम प्रसन्न-रति, विभाव अनुभाव सात्त्विक तथा ध्यनिधारी भावा से परिपुष्ट हाकर पाच स्वभावों को ग्रहण करते है तथा उसी के अनुसार रति के पाच भेद होते हैं जसा कि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है—

^१ श्री रामदत्त मिश्र—का व द १९ पृ० २१२

^२ अ—सापरा "अनुरक्ति ईश्वरे । — शांडिल्य सूत्र

आ—सा नु अग्निन् परम प्रेम रूपा । — नारद भक्ति सूत्र

^३ श्री दत्तारीयनाथ द्विवेदी—सूत्र सात्त्विक पृ० ३२

^४ श्री श्रीचन्द्रम सिद्धासूत्र पृ० २१०-१११

^५ डा० रामरत्न मटनागर—हि दी भक्ति साहित्य प० ८८

स्वभाव	शात	दास्य	वात्सल्य	सत्य	शृगार
स्वायो	गातरति	दास्य रति	वारसल्य रति	सत्य रति	मधुरा रति
आलम्बन	परब्रह्मत्व	सर्वेश्वरत्व	सुकुमारत्व	सुजानता	मनहरणत्व
उदीपन	एकतन्त्र्यान	नमस्कार वदन	बाल मुलम चेट्याय	कीडा	वसत श्रुति, वस्त्राभूषण
सात्विक अनु०	सूक्ष्म के अतिरिक्त	स्तम्भादि आठो	स्तम्भादि आठो	स्तम्भादि आठो	स्तम्भादि आठो
संचारी	मति, घति, निर्वेद, रमृति	हृष, गव, चिंता, मति, घति, निर्वेद, तक शया, दीनता तथा चिप्रलम के अन्य संचारी	दास्य की तरह	दास्य को तरह	दास्य की तरह
नागदमन म वणन	आरम्भ तथा अंत की स्तुति एव यमुना द्वारा स्तुति का वणन	नागपत्नियों द्वारा पूजा अर्चा का वणन	गोप पत्नियों के स्वरूप दर्शन एव यथोप- कथन का वणन	गोचारण के समय यमुना तट पर ककु- कीडा का वणन	नागपत्नियों द्वारा स्वरूप दर्शन तथा कथोपकथन का वणन

रामानुगा भक्ति को प्रेम भक्ति की पुष्टिकारिणी समझकर इसे पुष्टिमाग की सता दी गई है। आचाय बल्लभ इसके प्रबल प्रचारक रहे हैं। इ होने विजयनगर के राजा कुण्डेव की सभा में शर्बों को पराजित करने के उपरांत दक्षिण से वृंदावन आकर गोवर्द्धन पर श्रीनायजी के मंदिर की स्थापना की तथा अपने उपास्य बालकृष्ण (श्रीनायजी) के नित्य तथा नभित्तिक आचारों द्वारा सेवा का प्रबंध किया। बल्लभकुल संप्रदाय में वही प्रणाली बतमान तक गृहीत है।

झूठा सांयाजी भी बालकृष्ण (श्रीनायजी) के अनप्य भक्त थे। आचाय बल्लभ द्वारा प्रतिष्ठापित नित्याचार हरिसेवा का यणन इट्टेने नागदमन में बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है—

आचार्य बल्लभ द्वारा प्रतिष्ठापित आठों प्रहर की सेवा तथा नागदमनकार की वृणनमूरर ताजिका—

क्रम	सेवा का नाम	समय	भाव	विशेष नबोतय अणो वरुण इत्यादि
१	मगला	प्रातः ५ से ७ बजे तक	अनुराग के पद, जगने के पद, और दधि मयल के पद	नागदमनकार ता रागा
२	शु गार	७ से ८ बजे तक	बाल रूप सोदिय, वेग नूपा, बाल बीडा क पद	इत्यादि नबोतय अणो वरुण इत्यादि
३	खाल	८ से १० बजे तक	सदयभाव चौगान, गोचरण आदि के पद	नया तार मिलाग गोचर पात्र इत्यादि एर स० १
४	राजमोग	१० से १२ बजे तक	एक क पद	नरयो नांग विरूर मारण पात्र इत्यादि एर स० ३
५	उत्थापन	साय ३ से ४ बजे तक	लीला के पद	जिमाव तिक नायता मोग अंती इत्यादि ए० स० २
६	नांग	साय ५ बजे	दृष्य रूप, गोपीदगा, सुरली, हर माधुरी, गाय गोप आदि के पद	वई वासुन्डी मोगन्दी नाख्या ता इत्यादि ए० स० ८ अ १२ तक
७	सध्या	६३० बजे	गो खाल सहित वन से आगवन, गोरोहन यथा, वास्तव्यभाव से यगोदा का बुलाना आदि के पद	अर्वाणक ऊमो दरवार-जय— इत्यादि एर स० २१ से ११९ तक सभी मावों का वणन है।
८	रायन	७ से ८ बजे तक	अनुराग के पद तथा सयोग शु गार के पद	महाराठ बाऊ तपो नांग मोरो अणोश विली आदियों वणन अणो। ए० स० १२०
				रखी नख राधारमण एर स० १२२ में केवल रहते किया है।

विशेष—नागदमनकार ने राजभोग का घण्टा शृङ्गार तथा ग्वाल से पढ़ने किया है। यह तरकालीन गोप-समाज के त्रियाकलाप का प्रभाव है। वत मान में भी गोप समाज का त्रियाकलाप नागदमनकार के घण्टानुसार ही सम्पादित होना है। यथा (१) प्राप्त बाल उठना, (२) कलेवा, (३) गोचारण सामग्री तथा परिधान, (४) ग्वालों के साथ वन गमना, (५) क्रीडा, (६) मध्याह्न भोजन, (७) सायंकाल में गार्धों सहित धन से आगमन, (८) भोजन गयन।

अलकार

रस या व्यंग्य के पश्चात् यदि वाच्य में किसी और का महत्व है तो अलकारों का। अलम' का अर्थ है भ्रूषण। जो अलकृत कर वह अलकार जिसके द्वारा अलकृत किया जाय इस कारण व्युत्पत्ति से उपमा आदि का ग्रहण हो जाता है।^१

अलकारों का उपयोग सौंदर्य-वृद्धि के लिए किया जाता है। यह सौंदर्य भावों का हो या उनकी अभिव्यक्ति का। भावों को सजाना, उन्हें रमणीयता प्रदान करना अलकारों का काम है और दूसरा काम है भावा की अभिव्यक्ति को प्राञ्जल करना व उसे प्रभावशाली बनाना।^२

रस सिद्ध कवियों को अपनी रचनाओं में अलकारों के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता है। ध्व-यालोक के मतानुसार— निरुप्यमाणरी कठिनाइया की भेदने पर भी प्रतिभाशाली कवियों के समक्ष अलकार प्रथम स्थान ग्रहण करने की अपने आपको हम पहले हम पहले कहते हुए दृष्टे से पड़ते हैं।^३

कविजनोचित सस्कार भूलन वतमान होने के कारण नागदमनकार को अलकारों के लिए प्रयास नहीं करना पड़ा है। नागदमन में डिगल के वयणसगार्ड जैसे विलिख परञ्च अनिवाय गन्तालकार का सत्रय सुवर निर्वाह हुआ है। वयणसगार्ड के सफल प्रयोग से अय समस्त काश्यगत दोषों का परिहार हो जाता है।^४ मय उपमा आदि अर्थालंकार का प्रयोग भी यथा स्थान हुआ है तथा मूला सायाजी की उत्प्रेक्षाएँ तो अलकारों में अपना एक

^१अलकृति अलकार कारण पुपत्या पुन अलरार अन्दोऽयमुपमात्पु वरत
—वामन वनि

^२श्री रामदत्त मिश्र—नाय दर्पण पृ० ३२६

^३अलकारान्तराणि हि निरुप्यमाण दुर्गताद्यपि रग समाप्ति चेतस प्रतिभावन्त
कवे अहर्निश्या परापन्ति —ध्व-यालोक

^४श्रापै इय भाषा अमल, वमणसगार्ड वेग

दग्ध अणु वर दुपण्ण, लोपी रैप लवलैम —अभिपद्य—रतुनाय स्यात गीता रो

विशिष्ट स्थान रखती हैं। डिगल साहित्य के प्रख्यात अलंकार वयणसगाई का आवश्यक समझकर सबप्रथम निरूपण किया जा रहा है।

उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार भेद से वयणसगाई को तीन वर्गों में रखा गया है। उत्तम के नीचे आविमेल, मध्यमेल और अन्तमेल नामक तीन उपभेद माने गए हैं।¹ इनको अधिक अखरोट, राम अखरोट और यून अखरोट भी कहते हैं।² अरुण अखरोट एक चौथा भेद भी वहीं कहीं मिलता है।³ नागदमन में वयणसगाई के सभी भेदोपभेदों का व्यवहार हुआ है। यथा—
आदिमेल—अरुण मे प्रथम वाक्य के आविषण की आवृत्ति उसी अरुण के अन्तिम वाक्य के आदि में होती है।

उदाहरण—

विहाणू, नवो नाथ जागो वहेला,

हुवो बोहिवा धेनु गोवाळ हेला।

जगाळ जसोवा जनुनाथ जाग,

मही माट घूम नवनीत माग ॥ छ० १

विशेष—उक्त उदाहरण में व, ह, ह, ज, ज तथा म, म की आवृत्ति दशमीय है।

मध्यमेल—अरुण के प्रथम वाक्य के आविषण की आवृत्ति उसी अरुण के अन्तिम वाक्य के मध्य में होती है।

उदाहरण—

१ सारद करौ पसाय।

छंद १

२ लियां लवकडी कथ ऊना हुलास।

,, १०

३ रीतो बाहुजू जे अभीर्यो घरान।

,, ७०

४ घडीय बिहू नीमड भा जघावो।

, ७८

५ होहि गोपद अणुहारि।

, १२२

अन्तमेल—अरुण में प्रथम वाक्य के आविषण की आवृत्ति उसी अरुण के अन्तिम वाक्य के अंत में होती है।

उदाहरण— तव नवर नेस बलमद्र न हुता।

छंद ७५

अधमेल—अरुण में प्रथम वाक्य के आविषण की आवृत्ति उसी अरुण के

¹ वयणसगाई तीन विध, आदि मध्य अन्त।

मध्यमेल हरि महमहण, तारण दास आत ॥

आढा किशनाजी—रघुवरजम प्रनाथ ५० १८२

² अरुण मित्त लु अरुण विष कवियण तीन कहत।

आदि अधिक सम मध अवर, यून अक सी अत ॥

कवि मञ्ज—रघुनाथ रूपक ५० ३४

³ अरुण मेल अखरोट इक, चल तुक निष् कवि चाल

कवि मञ्ज—दो ५० २५

मध्य बाष्यों मे होती है ।

उदाहरण—१	बल्ह व बझ्मो दिवाळ यो सुतामा ।	छद	१९
२	हाहाकार ह्फ्वार ससार सार ।	"	१५
३	सत्र सुदरी सुदरी देवि मोही ।	"	२५
४	ढळवृत्तडी ढाल नजा न धग्जा ।	"	४९
५	त्रिलोकी न प्रासई वोहा ओ न पूस ।	"	८८
६	घणी घात साकावधी षोड घाना ।	"	८९

मध्यम कोटि की वयणसगाई मे असमान स्वरों, तथा स्वरों के साथ य, घ, अथवा ह का मेल होता है । यथा—

उदाहरण—१	आप वधाणी ऊपल ।	दूहा	३
२	इकी वेवटी चोवट आय ऊमी ।	छद	६
३	ऊमा गाय गोवाळ क्षूरत आर ।	"	१५
४	इस बाळ गोपाल पामी अचमा ।	"	२१
५	इस नासिका सिध्द दीपक ऐरी ।	"	२६
६	अमारा भगता तणा एह ओरा ।	,	५८
७	उडं डोंगळा पोंगळां रा अगारा ।	"	१०३
८	ऐरी गोवोन देखी चले न हेरी ।	,	८६

अधमकोटि की वयणसगाई में विभिन्न वर्णों जैसे 'ट' वग और 'त'

वग अथवा अल्पप्राण और महाप्राण वर्णों का मेल होता है । यथा—

उदाहरण—१	दडी लार बाहो चखी घृच्छ डाली ।	छद	१३
२	तत्र नदरी लार आहीर टोळा ।	,	१७
३	दरभजार काळी तणी मेल्हि डावो ।	"	३८
४	ढळवृत्तडी ढाल नेजा न धग्जा ।	"	४९
५	जाल घस नीला बहै त्रिएय क्षाळा ।	"	५०
६	फणिनाय न क्षालवू ऐण पाणी ।	"	५५
७	तमा देव मोटा अमा मत्त घोडी ।	,	११२

नागदमण मे उक्त वयणसगाई के अतिरिक्त—छेवानुप्रास, धृत्यनुप्रास, धृत्यनुप्रास, लाटानुप्रास, अध्यानुप्रास, पुनरुक्ति, वक्रोक्ति इत्यादि शब्दालकारों के उदाहरण यत्र तत्र दृष्टिगोचर होते हैं तथा उपमादि अर्थालकारों का व्यवहार भी यथास्थान हुआ है । कतिपय उदाहरण अष्टव्य हैं—

उपमा—	१	सुण्यां घात आघात मागा सनेही, जसोवा ढळी वदळी पम जेही ।	छद	१६
	२	तहीं नागणी बोल एहा निवास घस रस्मण इस्मण विस्मणनास ।	"	३५

रूपक—	१	सुग्धो वात आघात	छव	१६
	२	न खम तिक गगणी बोल बू दी ।	,	६४
	३	उड डोंगळां पींगळारा अगारा ।	"	१०३
	४	समद्रा पार सासार, होहि गोपद अणुहारी ।	"	१२२

उत्प्रेक्षा—	१	हुई नदरी धेन सू धेन हेला, मिल वाळवा जाणि थीगग भेळा ।	"	६
	२	पुळी नैर नीसार आवी प्रहट्टे । त्रिवेणी उल्लट्टीय समद्र तट्टे ।	"	७
	३	कालिंदी तण जाई लौटत काठ, गयी जाणि चिंतामणि रक् गाठ ।	"	१६
	४	इल नासिका सिध्द वीपकर ऐरी, कळी चप जाण लळी लप करी ।	"	२६
	५	अली सकुली जाणि किधी अलक ।	"	२७
	६	घेरो नदरो धोट अहिकोट एहो, जळाबोळ माह कळा सोळ जेहो ।	"	९९
	७	गोपीनाथरा हाथ आया गडद अही गारडो जाणि छाट उडद ।	"	१००
	८	अही मूठ बाज जिहा ना उपाठ भही गारडू जाणि काळी रमाठ ।	"	१०
	९	काळी नागरा काट्ट सामाळ केवा, लघी जाण अट्टयो दधी मच्छ लेवा ।	"	१३
असम—		महा खम्मिया निधि जादम मोटा, खरो हेक तू ही बिया खव खोटा ।	"	११४

अतिशयोक्ति—		जाळ विरल नीला वहे विरल झाळा वदन सहस्री वध व्योम व्याळा । बडा शृङ्ग सीतग हेमग वाळा, जिरी फू क आग भर टू क फाला ॥	,	५३
-------------	--	---	---	----

रूपकातिशयोक्ति—	१	महाकाळ काळी नको बाळ मान, पडी दोतडी आज ही बाघ पाने ।	,	३६
	२	जुड रूप तीन प्रणाव्रत जेहा, कुहाडा प्रणा ऊपरा मार केहा ।	,	११४

व्याजस्तुति—	१	मनासू न मू वड घडी हेव सामी वरं मूर अगा तणी नित्य सामी ।	"	५९
--------------	---	--	---	----

- २ प्रिया तात न गोत्र धारा विछाण्या,
बडा गोपरो पुत्र भायो विहाण्या । छद ६७
- ३ जोवो नवर प्रेह खत्रषट जागो,
हिवे लागया सक् प्री लोक लागी । " ७६

नागदमण मे प्रयुक्त छद

नागदमण काव्य में प्रारम्भ के धार दोहों तथा अंत के एक कलश के अतिरिक्त सबत्र भुजगप्रपात छद का व्यवहार हुआ है । भुजगप्रपात सुप्रसिद्ध समवर्णिक छद है जिसका लक्षण राजस्थानी छदशास्त्र में इस प्रकार दिया गया है—

च्यार यगण पद प्रत चर्वा, छद भुजगप्रपात ।

आटा किशनाजी-रघुवर जम प्रकाश प० १३६

नागदमण के मवाद और उक्ति वैचित्र्य

नागदमण का विनोद महत्त्व उसके षणन और सवादों के कारण है ।
× × × × विनोदतया नागणी और कृष्ण के सवादों मे माधुर्य, वात्सल्य, आश्चर्य, मय, उत्साह आदि भावों का एक साथ सुन्दर सामंजस्य मिलता है । वे बड़े फवते हुए और उपयुक्त हैं । ^१कवि को प्रकृति चित्रण करते हुए काव्य के अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करने में विनोद सफलता मिली है । ^२सफल सवादों का विवरण इस प्रकार है—

- १ नागणी और कृष्ण सवाद— छद ३० ५५
२ नागणी और धमुना सवाद— , ५६
३ नागणी और कृष्ण सवाद— ,, ५७ ६४
४ नागणी और अय स्थी सवाद ,, ८, ९३

उक्त सवादों में तथा षणनों में लोकोत्तियाँ और मुहावरे मणिकांधन योग स्वरूप प्रयुक्त हुए हैं जो भाषा की सजीवता तथा सौंदर्य वृद्धि के मूल उपादान समझे जाते हैं । कतिपय सफल प्रयोग दृष्टव्य हैं—

- १ वईकुठ रै नाथ रुझे विचारी । छद ९
२ रम सग गोवाळियां रगराती । " ११
३ मड्यो दूसरो खेल खेळत माय,
हिय ऊनरी बात गोवाळ हाथ । " १४
४ घणी भोम चाली चढी बात घोठ । " १५
५ लिया जीह दत नहीं लोक लोपी,
गुड माय गोवाळ क्षूरत्य गोपी । " १९

^१श्री मोतीलालजी मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १३३

^२श्री पुरुषोत्तम जी मेनारिया—कविमण्डली रण [प्रस्तावना] पृष्ठ २३

- ६ बुलाव नळ नाप नांसी भुरवकी ।
 ७ काळीनागसू लीजिए वगि कानो पडची तात सोस चड मात पानो ।
 ८ रटीज इसा मात आग रडाळा, घवोज नहीं बोत ज काळचाळा । " ३४
- ९ दरव्वार काळी तपो मेल्हि डायो । " ३७
 १० मरोज नहीं आम सू वाय नोळा । " ३८
 ११ बघारया न घार जज वाळ वाळा । " ३९
 १२ अज मुख प पान रो सोडि आव । " ३९
 १३ हारियां जीवियां करतार हाय । " ४०
 १४ सूतो साप जपाडीज केण कोड । " ४१
 १५ पिता मातरो औघणी पक्कवानो मोत्यारी हुईं पृथरी साच मानो । " ६८
- १६ लला तू नहीं अह कूवत लूणो । " ७०
 १७ अमा पय लाडा तणी घार आग । " ७१
 १८ मिळ कसरा दूत पाणी न माग । " ७३
 १९ मिळ दादुरां मेह तो साच मान । " ७५
 २० रुडीज नहीं जगळा जाट राणो । " ७६
 २१ किस आपरो मोल आपै कराच । " ७९
 २२ नरा नारी को नागणी ना विवाणी, रही बांदाडी देव दाणध्व राणो । " ८२
 २३ नारी गाटियो सू ठ दूजी न लायो जणणी किणी हेक तू ही ज जायो । " ८३
 २४ गिणा बाद जोता केई कोड गाडां । " ८४
 २५ सखी वाळ एन त्रिभुवन सूग । " ८८
 २६ प्रभू अग लागी सोई फूल पाखो । " ९९
 २७ लोकांही विचाळ प्रभू लोक लाग, अहेउा गुण्या साप रा रवि आग । " ११४

नागदमणकार का काव्यगत सदश

भूला सायानो ने प्रस्तुत काव्य मे मगवान थीकृष्ण क सर्वेवर भक्तिवाच के साप साप गो-सरक्षण के महत्त्व को भी प्रतिपादित किया है। भारतवर्ष मे प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक गो सरक्षण को एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में माना गया है। अनेकानेक भारतीय धीरों ने समय समय पर अपने प्राणी

की धाजो लगाकर गो रक्षा के महत्त्व को अभ्युण्ण रखा है। धार्मिकदृष्टि से भी गो रक्षा का महत्त्व कम नहीं है। भारत एक कृषिप्रधान देश है। गाय इस देश की सर्वोपरि राष्ट्रीय निधि है। गायों के द्वारा दूध, दही, घृत इत्यादि अमृतोपम पुष्टिकर आहार तो उपलब्ध होता ही है साथ ही साय कृषि काय के सम्पादनाय बल भी गायों द्वारा ही प्राप्त होते हैं। इस प्रकार की राष्ट्रीय-निधि का दुबल होना, नष्ट होना देश का दुर्भाग्यसूचक लक्षण है। जिस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण गो रक्षा निमित्त महाकालस्वरूप कालिय नाग से लोहा लेने में नहीं हिचकिचाये उसी प्रकार भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि गो संरक्षण के लिए यदि कान से भी टक्कर लेनी पड़ जाय तो उसमें आनाकानी न करे, इसी में राष्ट्र का कल्याण है।

शूला सायाजी
कृत
नागदुमण

मूलपाठ ।
महत्त्वपूर्ण पाठभेद
शब्दार्थ एव भावार्थ

अथ श्री नागदमण लिख्यते

दूहा

वळ^१ वो सादर^२ वरणवू^३ सारद^४ करी पसाय ।
 पवाडौ^५ पत्रगा सिर^६, जदुपति कीधी^७ जाय ॥ १ ॥
 प्रभू घणा^१ चा पाडिया, दत वडा चा दत ।
 के पालण पोडिया, के पय पान करत ॥ २ ॥
 किण न दीठी कानवी^१, सुण्यौ न लीला सध^२ ।
 आप बधाणी^३ ऊखळ, बीजा छोडण बध ॥ ३ ॥
 अबनी भार उतारवा, जाग्यो^१ एण जुगति ।
 नाथि^२ विहाण नित^३ नव नव विहाण नति ॥ ४ ॥

छंद भुजगप्रयात

विहाणू^१ नवो नाथ जागो वहेला"
 हुयो^३ दोहिवा^४ धेनु, गावाळ हला^५ ।
 जगाड^६ जसोदा जदूनाथ जाग^६,
 मही माट धूम, नवनीत^७ मार्गे^८ ॥ १ ॥

१ ^१वळतो [ख ग] वाणी वाज वरणवा [ख], विधि [ड]^२ सारद [ग, ड] ^३वीनवु [ख ग घ ङ] ^४सादर [ग], ^५पवाडु [ख] पुवाडा [ग], ^६सरस्य [ख] सरस [ग], ^७कीनी [ख घ] ।

२ ^१प्रणाय पाडिया [ख] घणाई [ग] ^२पासाण [ड] ।

३ ^१काहूमा [ख], ^२सुध [ग] ^३बधाव [ख] ।

४ ^१नाथो [ग ङ], ^२नाथ [ग ङ ख], ^३नवेनित [ख] ।

१ ^१विहाणे [ड], ^२बहिला [ख] ^३दीयो [ख घ], ^४दूहवा [घ], दोहिवा [ड] ^५हिला [ख], ^६जागो [ख घ ङ], ^७नवेनिटि [ड], ^८मार्गो [ड] ।

अथ श्री नागदमण

दोहे

हे शारदा ! आप मेरे पर अनुग्रह कीजिये जिससे मैं यदुपति श्रीकृष्ण ने कालिय नाग के सिर पर चढ़कर जो पराक्रमपूर्वक युद्ध चरित्र किया, उसका सादर वचन कर सकूँ ।१।

प्रभु श्रीकृष्ण ने अनेक बड़े-बड़े दत्तों के—कइया के पलने से सोते हुए और कइयों के स्तनपान करत हुए, गत उखाड़ डाले (नष्ट कर दिये) ।२।

भगवान् श्रीकृष्ण के लीलायुक्त चरित्र ऐसे हैं जो न तो देखे गये हैं और न सुने गये हैं । दूसरों को बधनमुक्त करने वाले स्वयं ओसली से बधे हैं ।३।

भगवान् श्रीकृष्ण जूमि का नार उतारने के लिए इस रूप में प्रकट हुए हैं कि—नित्य प्रातःकाल में नवीन नवीन उच्छल व्यक्तियों को अपने घस में कर लेते हैं ।४।

भुजगप्रयात छंद

हे नाथ ! प्रातःकाल में गायों को दूहने के लिए ग्वालों की पुकार हो रही है अतः शीघ्र आगिए । इस प्रकार जसोदा के जगाने पर यदुपति श्रीकृष्ण नाग और मटके से दही भयते देख कर भवनीत भागने लगे ।१।

- १ बळ=पराक्रम । बो=बह । सारद=शारदा । पसाय=अनुग्रह । पवाडो=युद्ध चरित्र । पनगां=सप के । सिर=ऊपर । कीधो=किया ।
- २ धलां वा=अनेकों के । पाडिया=उखाड़े । बडां=मोटे । के=कइयों के । पोडियां=सोते हुए । पय=दूध । करत=करते हुए ।
- ३ किणै न=किसी ने भी नहीं । दीठो=देखा । लीला सध=लीला युक्त । बीजां=दूसरों के । बध=पान ।
- ४ भवनी=पृथ्वी । नार=शोक । जाग्गी=प्रकट हुआ । एण=इस प्रकार । जुगति=युक्ति, रूप । नाथि विहाण=निरकुश, उच्छल । नव=नवीन, नमस्कार करते हैं । विहाण=प्रातःकाल नति=घस में कर लेते हैं ।
- १ विहाणू=प्रातःकाल । नवो=नवीन । वहेला=शीघ्र । दोहिवा=दूहने के लिये । हेला=पुकार । जगाड=जगाये । नवनीत=भवजन ।

जिमाव^१ जिा भागा भाग जाणि
 पम्ग जगाग जिम^२ चकपाणी ।
 अरोग अषाय तियो^३ आगमन्,
 कपूरी^४ ग्रह पाा बीपा^५ जगन् ॥ २ ॥

लिया माग^१ मिगाग गागाग नीा,
 रर आज का^२ जम्मुा गट्ट काला ।
 गुण्यो साम आगम्म^३ ऊभा गट्टी,
 हरपा हग्वा हवली टपती ॥ ३ ॥

भरघा^१ माग मिदूर मारग नाळ
 वह सामला प्रज सरी त्रिपळे ।
 वटै शर त्त्वार^२ पिगाग वाळ,
 नया गह सू तेह^३ गोपी निहाळ ॥ ४ ॥

हरीहो^१ हरीहो हरी^२, धन हाग,
 शम्मा सढी नदुम्मार^३ शाक^४ ।
 अहोराणिया अवला^५ गूल आव
 भगव्यान न धन गोप्या भळाव^६ ॥ ५ ॥

इकी^१ वेवटी चोवट^२ आय ऊभी
 सभाली^३ लियो स्याम^४ मोरी^५ गुरम्भी^६ ।
 हुई^७ नदरी धेन सू धेन^८ हला
 भिल्ले^९ वाळना^{१०} जाणि श्रीगग भेळा ॥ ६ ॥

२ ^१ जिमाव [ग] जिमावो [ट], ^२ जम्मी [ड] ^३ किये [ख ग ष]
^४ कपूरे [ख ग ष], ^५ बीधी [ख] ।

३ ^१ लार [ख], ^२ घाजरो [ड], ^३ घाग [घ पा ल] ।

४ ^१ भदि [ख], भरे [ड], ^२ तवार [ड] लवार [ग], ^३ देह [ख ग ड] ।

५ ^१ हरीहे इरीहे [ख ग], ^२ देरी [ख], ^३ कूवार [ग], ^४ भाख
 [ख] ^५ भावलो [ख], भावला [ग], ^६ मुलाव [ग] ।

६ ^१ इकु [ख], एके [ग], ^२ चुवट [ख], ^३ सभाले [ख ग] ^४ नाप
 [ख ग], ^५ गोपी [ग], ^६ सरुगी [ग], ^७ हुष [ख ग], ^८ गोवाळ
 हेसा [ड] । ^९ भेला [ख], ^{१०} बाहुना [ख] ।

श्रीकृष्ण को जो जो व्यजन दचिकर हैं उ हैं ही परोस कर यगोदाजी भोजन करवा रही हैं। तप्त होकर भोजन कर लने के पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण ने आचमन किया और कपूरी पान का बीड़ा ग्रहण किया। २।

भगवान श्रीकृष्ण ने गोचारण क शृङ्गार प्रसाधन कर लिये क्योंकि आज वे यमुना-तट पर कोई खेल करेंगे। उनका आगमन सुन कर गोकुल वालाए प्रत्येक मकान पर उह देखने को लखी हो गई। ३।

*यामल गात्र श्रीकृष्ण व्रज की गली म चल रहे हैं और उनके पीछे दुधमुहे बछड तथा बाल ग्वाल चल रहे हैं जिह माग मे तित्ठूर भरे गोपियां नूतन स्नेह सित्त होकर माग म देख रही हैं। ४।

भगवान श्रीकृष्ण हरी हो ! हरी हो !! कहत हुए गायों को हाक रहे हैं। इधर अहीरनिया झरोखों पर चढ़ी नदकुमार को देख रही हैं। उधर अहारनियो का सु दर समूह तथा गोपिकाए आकर अपनी अपनी गायें श्रीकृष्ण को सम्हला रही हैं। ५।

इकी दुकी गोप बाला घौराहे पर आकर लखी हो गई और भगवान स कहने लगी कि—श्याम ! मेरी गाय को सम्हाल लना। नद के गो समूह के साथ अ प गायें इस प्रवार आ-आ कर मिल रही हैं मानों माल आ आ कर धोगगा मे मिल रहे हा। ६।

- २ भावता=दचिकर। भोग=भोजन सामग्री, व्यजन। निर्मि=छाते हैं। चक्रवाणी=सुदशधारी श्रीकृष्ण। भरोग=भोजन किया। पवाये=तृप्त हुए। आचमन=हाथ धोना, पीना। ग्रह=लिये। ३ लिया सार=हर लिया मन्त्रालकर लिया। विगार=शृङ्गार। गोचार लीला=गोचारण लीला क। का=कोई। तट्ट=किनारे। कीला=खेल। आगम=आना। हरेवा हरेवा=देखने के लिए। ४ भरषां=भरे हुए। मारग=माग। भाळ=देग रही हैं। व्रज सरी=व्रज की गली। विवाळ=मध्य में। लार=पीछे। लश्वार=दुधमुहे बछड। विडार=गोप। तेह=उनकी, सित्त। निहाळ=निहार रही हैं। ५ हरी=भगवान कृष्ण। घेन=गाय। भरुवां=वातायनों। भाकै=देख रही हैं। मध्वना भूग=सु दर समूह। मळाव=सम्हला रही हैं। ६ इकी बवगी=इन्की-दुबकी। घोवटे=घौराहे पर। ऊभी=लखी रह गई, ठहरी। सांन=श्याम। सुरम्भी=गाय। हेला=मन्त्रिसित्त। भिळै=मिलते हैं। बाळवा=माल। काणिए=मानो। भेसा=साथ।

पुढी^१ वर- तीसार थायी^२ प्रट्टट,
 त्रिाणी उज्जटीग^४ ममद्र^३ तट्ट ।
 महागत सीधा^५ तणी सोड^७ माण,
 हरी मजरी^६ तिल्ल वण^८ हाथ ॥ ७ ॥
 वर^१ यासळी विमगळी^२ तारा^३ ता ।
 गज माळ गुजा^४ द्रज पाळ गाना ।
 मय जागला सामला प्र ७ मदा
 जगूता तण ता^५ जाहोर जडा ॥ ८ ॥
 रमवा मय^१ माय म् हंर रग^२,
 तट^३ ताजिय ता^४ ना^५ विभाग^६ ।
 वदुठ ७ पाथ म्ही वितारी^६
 विया मारया लोन वदू^६ तिनारो ॥ ९ ॥
 पण पार^१ पिडार था दाह पास,
 लिया^२ लवजती तव^३ ऊभा हुलाम ।
 घडू- गडिय गेंद मदान घरा^४,
 घणी घूमर उवर घेर घरो^५ ॥ १० ॥
 झिल आवता कट^१ हक येर
 फिरी राम चोटा वही^२ दोट फेर ।
 मनी आवरो^४ मानिया^५ सळ मानी
 रम सग गोवाळिया रगराता ॥ ११ ॥

७ ^१ वरे [ग], ^२ पुरा [प], ^३ परे [ड] - नयर [ख] नगरे[ग] ^४ कीषा [ख ग] ^५ वीधी [च] ^६ फिरउलरा [ख], फिरउलस [ग], ^७ सिधु [ख ग], ^८ सुधा [ख], सुधा [ग], ^९ सोड [ड], ^{१०} मुदही [ग च], ^{११} बीण [ख] ।

८ ^१ वाह [ख ग] ^२ सगजा [ख], सगली [ग] ^३ हेकवार्ता [ख ग], ^४ द्रज बाल गोवान गाती [ख], ^५ घायुना [ख], ^६ नीर [ड] ।

९ ^१ सम [ड], ^२ रगा [ख] ^३ वही [ख], ^४ विमगा [ख] ^५ सारी [ख ग], ^६ विस्तारी [ख], ^७ जोष [ख ग], ^८ दुहें [ख] दोनू [ग] वरे [ड] ।

१० ^१ घाल [क], ^२ दोष [ड], ^३ किया लाकडी कप मेरी कला से [ख ग ड] ^४ गज [ख], ^५ घर [ग] ^६ फेरी [ड] ।

११ ^१ उलटा [ख ग] ^२ दोट [ख ग], ^३ करे [ग ड], तणी (च), ^४ घाकुडे [ग], घाकडो [ड], ^५ खेलते [ग] ।

सारी गायें चल पड़ीं और नगर से निकल कर समतल भूमि में भा गईं जैसे सागरतट पर त्रिवेणी उलट भाई हो । श्रीकृष्ण तिलकयुक्त मस्तक पर हरी तुलसी और सोंधा की सुवासित सुगंध धारण किये तथा हाथों में घासुरी लिये घ्रा रहे हैं । ७।

घासुरी एवं सोंधा के बजने की ध्वनि हुई । ब्रज बालकों के शरीर पर गुजाभा की मालाएँ शोभित हो रही थीं । इधर उधर वाले सारे गोप-बालक घमुना तट पर परस्पर शब्द करने लगे । ८।

खेलने के लिए सब बालकों में एक स्वर से कहा कि—हे कृष्ण ! आप हमारे साथी (भौल) बांट दीजिए । बकुण्ठपति श्रीकृष्ण ने अच्छी तरह विचार करके बराबर के लोम दोनो ओर बांट दिये । ९।

दोनों ओर अपार गोप बालक कर्षों पर लाठियाँ लिये उल्लसित हो रहे थे । इतने में ही गड़े हुए गेडिय से गेँद को मदान के अन्दर घुमाने का प्रदर्शन करते हुए घर लिया । १०।

मुख्य खिलाड़ियों में प्रमुख खिलाड़ी श्रीकृष्ण खेल में मस्त तथा सीन होकर ग्वालों के साथ खेल रहे हैं । वे अघर माग से आती हुई गेँद को एक ही छोट से उलट बते हैं एवं 'राम छोट' कहते हुए उस गेँद को चाल को पलट बते हैं । ११।

७ पृच्छी—चलकर । नगर—नगर । नीसार—निकलकर । प्रहृष्ट—समतल भूमि पर, चौक में । तट—किनारे पर । सोंधा—इत्र, माथे में डालने का सुगन्धित मसाला । सोढि—सुगंधि । माथ—मस्तक पर । मजरी—तुलसी । वेणु—घासुरी । हाथ—हाथ में ।

८ वई—बच्ची । बासळी—बासुरी की । सिगळी—सोंधी की । नादवा—ध्वनि । तां—वहा पर । गातां—शरीर पर । घामभा समला—इधर उधर वाले । प्रत्य सदां—परस्पर शब्द करने वाले । भाहीर जहा—प्रहीर बालक ।

९ रमेवा—खेलने के लिए । हेक—एक । रग—प्रावाज से । विभागें—हिस्सों में बांटना । रुडी—अच्छी । सारखा—समान । वेहूँ—दोनों । किनारी—किनारे, तरफ में ।

१० पखेवार—मवार । कध—कर्षों पर । हुनास—उल्लसित हो रहे हैं । मदान—खेलने का चीगान । घणो—बहुत । घेर—घेरे में ।

११ ऊपट—मोठ देते हैं । भेरें—प्रहार से । फिरि—घूमकर, पुन । दोट—चलती हुई गेँद । मभी—मुख्य । घाकरो—तेज । मातो—मस्त । रम—खेल रहा है । रग राठी—सीन होकर ।

मिन नाट गांगो ^१ गरी ^२ दाट माथे ,
 दुई दुई ^३ मला तणा हउ हाथ ।
 नगण ^४ घणू माण्ट तीर ^५ नाड ^६ ,
 जमूना तण नागिनी तीर जाड ॥१२॥
 दधी ^१ लार वाही नव्यो प्रच्छ ^२ टाळी,
 भरो क्षण ^३ नाळी द्रहे नाग वाळी ^४ ।
 नाळीनाग रा ^५ रा न नभाळ रा
 लवी जाण न्यूयो दधी ^६ मच्छ लवा ॥१३॥
 मडो ^१ दूसरी मेउ मलत माथे,
 हिव ^२ उनरा घात गोवाळ हाथे ।
 कर ^३ श्रीन मउा नमतय ^४ काहा,
 जोय धेन धकीक ^५ काठ जम ना ॥१४॥
 जदुनाथ वाळी समा ^१ वाथ जाड ,
 घणो भोम नाथो चढा वान घोड ।
 ऊभा- गाय गावाळ ^३ झूरन नार,
 हाहाभार हक्कार ससार नार ॥१५॥
 सुण्यो वात आघात माता सगही,
 जसोदा ढळी कदली ^१ खभ जेही ।
 सबाहे ^२ मखी लार हाली सयाणी
 रहावी पिचाळ थकी नदराणी ^३ ॥१६॥

१२ ^१ गांगो [ग], गांगो [ग] ^२ सगो [ड घ] ^३ दूध [ग], दुद्ध [ड],
^४ चडव [ड], ^५ नाट [ख ग], फेर [ड] ^६ चाडे [ट] ।

१३ ^१ दधा [ख ग] दड [ड], ^२ दड [ग] ^३ भाक [ख],
 भाक [ग] ^४ भावी [ख ग ड] ^५ सु [ख ड], ^६ द्रहे
 [ग] ।

१४ ^१ पि [ख] रि [ड] ^२ करत्रिण [ख], ^३ नम देव
 [ख], नमदेव [], ^४ बीदव [ख] धेरीक [ग], धुकार
 [ख] ।

१५ ^१ सरीसो बघ [ग], ^२ ऊभी [ग], ^३ गोचार ।

१६ ^१ कदली [ग] ^२ सबाहे [ग] ^३ शत्र राखी ।

दोनों ओर के पिनाडियों के सम्मिलित हाथों से गेंद की सभी धारों पर धामने सामने प्रहार होने लगे तथा यमुना तट पर अत्यन्त निकट ले जाते हुए गेंद की यमुना के गहरे पानी में डाल दिया । १२।

गेंद के पीछे श्रीकृष्ण वृक्ष की डाल पर चढ़े और जहा पर कालिय नाग का कुण्ड था उसमें छलांग लगाई । श्रीकृष्ण, कालिय नाग का वर स्मरण करके इस प्रकार कूड़े मानो लुम्बक (किलकिला पक्षी) मच्छी प्राप्त करने के लिए समुद्र में डूबा हो । १३।

खेले जा रहे खम के ऊपर अथ खेल रच गया । अथ ग्वालों के हाथ से बात खली गई । श्रीकृष्ण को तानों खड ममस्कार करने लगे और यमुना तट पर खडी हुईं गायें स्तम्भ होकर देखने लगीं । १४।

'यदुपति श्रीकृष्ण कालिय से बाहु युद्ध करेंगे' यह बात घोड़े खडकर (अत्यन्त तीव्र गति से) दूर दूर तक पहुंच गई । गायें पृथ्वी खाल खडे हुए आत्तनाद पुषक विलाप कर रहे थे । सारे विश्व में हाहाकार मध गया । १५।

यह सुनकर स्नेहमयी माता यगोवाजी इस बात के आघात से कदली स्तम्भ की तरह गिर गई । समस्तदार सखियों ने उन्हें सम्हाला और फिर वे उनके पीछे पीछे चलने लगीं, किन्तु चलने चलते वे भाग में ही पर गईं । १६।

१२ षोट=प्रहार । सामी=सामने । सभी=सारी । मल्ला=पिनाडियों । तणी=की । सखि=निकट । नाखियो=डाल दिया । नीर जाई=गहरे पानी में ।

१३ खार=पीछे । ब्रच्छ=वृक्ष । डानी=गाथा । मय=छलांग । काली इहे=कालिय नाग के कुण्ड में । सभाल=स्मरण करके । केवा=वर । लधी=लुम्बक पक्षी (राजस्थान में इसे किलकिला भी कहते हैं) । मच्छ=मच्छी । डधी=समुद्र । लेवा=नेने के लिए ।

१४ खेलत=खेले जाते हुए । मय=ऊपर । द्विष=प्रद । त्रीन=तीन जुष=देवता हैं । धठी=स्तम्भ । कठि=स्मार पर ।

१५ सभी=सामने, से । बाय जोष=बाहु युद्ध करेंगे । गोम=पृथ्वी । ऊमा=खडे हुए । मूरत=विलाप कर रहे थे । धार=घात । सार=समस्त ।

१६ आघात=प्रहार । डडी=गिर पडी । खम=स्तम्भ । सवाहे=सम्हाल करके । हानी=चनी । सयाणी=चतुर । रशवी=राहु के । विचालै=बीच में । पनी=गिचिच हो गई ।

तबे नदरी लार^१ आहीर टोळा
 खड आपड हेक हेका^२ खधोळा^३ ।
 जुवे^४ जोपिता जूय भेळी जसूदा,
 वपैयो^५ हुई, कानह्वो मेघ वू दा ॥१७॥
 विहू^६ लोचने नीर धारा वहती,
 कनेयी^७ कनयी जसूदा वहती^८ ।
 कलदी^९ तण आइ^{१०} लोटत^{११} वाठ,
 गयो जाणि^{१२} चितामणि रव गाठे ॥१८॥
 बलदेव बूझ्यो^१ दिखाळचो^२ सुदामा,
 रम्यो साम ते ठाम जोवत रामा ।
 लिया जीह दते नही लीक^३ लोपी,
 गुड^४ गाय गोपाळ झूरत्य गोपी ॥१९॥
 ऊभी घूट^१ हेको करी^२ जात आरा,
 यभेरी म^३ हूका लहैका मयारा ।
 जसोदान के^४ झप साधी जमना
 पहे लाभियो मान हू जात पना^५ ॥२०॥
 अचाणक ऊभी दरब्यार आव,
 मिळी नागणी हेक हका मिळावे ।
 इस^१ वाल गोपाल पामो अचभा,
 रही दोवळी^२ नागणी देव रभा ॥२१॥

१७ ^१ नारि [ग घ ङ] ^२ हानी [ख], ^३ हलोले [ख घ], गलोले [ग ङ],
^४ जाई जोवती [ख ग], ^५ बावीयो [ग] ।

१८ ^१ बहे [ख ग] ^२ वा हुडो वाहुडो [ग], ^३ करती [ख] ^४ बानी-द्री
 [ख], कुभी-द्री [ग], ^५ मात्रि [ख ग] ^६ झूरति [ख] ^७ नग [ख ग]

१९ ^१ घूम [ख घ] ^२ दितायो [ख] लिखाल [ग घ ख] ^३ नित्र [ख ग]
 सत्रा [घ], ^४ गयो [ख में नहीं ग] ।

२० ^१ घोट [ख ग], छोट [ख] ^२ करिजास [ख घ] करेनास [ग], कर
 जाम [ख], ^३ यभ राम ऊभी [ग घ], यभे ऐम [ख] ^४ यह पचांग
 नहीं है [ख ग घ], ^५ पहलो मरे मात हू तान पना [ख] ।

२१ ^१ वामे [ख ग] ^२ देवटी [ग] ।

तमी नद के पीछे अहीर समूह एक दूसरे के कपों को पकड़ पकड़ कर चलने लगा तथा स्त्री समूह में यगोदाजी चातक के समाग्य मनी हुई क हैया रूपी मेघ बू दों को देख रही थीं । १७।

यगोदाजी कहैया । क हैया ! कहती हुई, दोनों आँसों से अधधारा बहाती हुई यमुना के तट पर लोट रही थीं मानों किसी दीन होन के पास से चित्तमणि रत्न लो गया हो । १८।

यलदेव के पूछने पर सुदामा ने जिस स्थान पर धीकृष्ण खेले थे यह स्थान बताया । उसे यगोदाजी देख रही थीं । पास ही गाँव, भवाल बाल और गोपिकाएँ, दांतों तले जीम दबाये हुए विलाप कर रहे थे । १९।

समस्त गाँव गोप एवं भवालिनियाँ मानसिक पीडा न रुकने के कारण उच्च स्वर से आर्त्तनाद करती हुई घूम बनाए लड़ी थीं । इधर भगवान् धीकृष्ण ने यमुना के अरर छलांग लगाई । उनको पानी के अदर माग मिल गया । वे जल में ऐसे विचरण कर रहे थे मानों सप पानी के अदर विचर रहा हो । २०।

धीकृष्ण की अकस्मात् दरवार में आया देख समस्त नागिनियाँ परस्पर एक दूसरे से मिलीं । बालक योगाल को देखकर त्रिस्मय को प्राप्त हुई तथा उनके आसपास अप्सराओं की तरह एकत्र हो गई । २१ ।

१७ तब=उभी । आहीर टोळ =अहीरों के समूह में । खड =चले । बापड =पकड़े हुए । हेक हेका =एक दूसरे के । खपोल =कपे । जुव = देखती है । जोपित जूप =स्त्री समूह । मेनी =साय । बपयो =चातक पक्षी ।

१८ बिहूँ = दोनों । लोचन =नेत्रों से । बहती =बहाती हुई । कहती = कहती हुई । कलदी =यमुना । तण =क । काठ =किनारे । जाणि =मानो । रक =गीन । गठि =परले से ।

१९ बूझो =पूछा । रम्यो =खेला । ते =वह । ठाम =स्थान । जोवत = देख रही थीं । जोह =जीम । लीक =बकीर । गुड =समीप । मूरतय =विलाप कर रहे थे ।

२० घूट =घूम जत्या । हेको =एक । घारा =घातनाद । यभेरी म =रुक्ती नहीं थी । पूका =मानसिक वेदनाएँ, कसकें । लहेका =दर । मयारा =रूने । पदे =माग । लाभियो =मिला । प ना =सप ।

२१ अचाणक =अकस्मात्, सहसा । इख =देखकर । पामी =पाई । घचमा =प्राश्चय । दावळी =इद विद, आसपास । देबरमा =अप्सरा ।

जपे^१ नागपत्नी^२ खत्री रूप जोती
महाभद्र जाती तणा वान^३ मोती ।
पुणी^४ सामळी गात्र पीळा पिठोरा,
वणा ऊपरा नग ओप कदोरा ॥२२॥
पगा^१ धूधरी रोळ आणद पुजा,
गळ हार मोती रुळ माळ गुजा ।
विच दूळडी हेक चौकी विराज,
जिसी^२ राजवी केहरी तण्य राज ॥२३॥
बिहू^१ बध बाजू तणा नग राहै,
मणी^२ नग हीरा तणी ज्योत मा^३ ।
अहीनारि जप लई^४ माल ऊची,
पहच प्रभूर लटकक प्रहूची ॥२४॥
सव सुदरी मुदरी देख मोही^१
वळ दादिमें दत चौरी विमोही ।
अधूरै^२ अमृत न जाय अघाई
झिगे कु डळा लोळ^३ कपोठ झाई ॥२५॥
इयें नासिका सिध्द^१ दीपक ऐरी,
कळी चप जाण ऱळी^२ लप केरी ।
नवा नेह दीरघ्य परज नेत्र
सोभा मीन यजन मृगा सहेत्र^३ ॥२६॥

२२ ^१ जपि [त] जीव [व] ^२ पुत्री [ँ] ^३ नावय [ख च]
^४ पुण्य [म] पणी [ँ] ।

२३ ^१ पदे [ग] पाण [ख], " मी [ख]

२४ ^१ बाहां [ख] बगी [ग] ^२ बाहुणां [व] ^३ मणि जोत
हीरां ठली मग माहै [म] ^४ नीयां [ख] अही परी रीभै
मुनक बी [ग] ।

२५ ^१ सोने [ग व ँ] ^२ दधर [म] ^३ वान [ख] ।

२६ ^१ विष [ग], त्रालि [व] ^२ लुची [व] ^३ मनेत्र [ग] मनेत्रे [ँ]

वे क्षत्रिय बालक धीवृष्ण के स्वहृदय को देखती हुई कहने लगी कि—अरे ! इनके बानों में तो महामद्र जाति का मोती है तथा श्याम गात्र पर पीताम्बर सुगोमित है एव उसके किनारे पर नगीने और करघनी शोभायमान हो रहे हैं । २२।

परों में आनन्द का समूह, घुघरुओं का गव्व हो रहा है तथा गले में मोतियों का हार एव गुजाओं की माला झूल रही है । साथ ही दो लडवाली सांकल के बीच में एक चौकी गोभा दे रही है । जिस प्रकार का यह राजकुमार है उसके ही अनुरूप यह सिंह नव गोमित हो रहा है । २३।

दोनों बाहों पर बाजूबद बाधे हुए हैं जिनके अन्दर मणि हीरे आदि नगीनों की ज्योति प्रकाशमान हो रही है । एक दूसरी नागिन बोली—अरे देखो ! मगवान के पहुँचे में जो यह पहुँची लटक रही है, यह तो बहुत ही ऊँची कीमत में खरीदी गई है । २४।

सभी सुन्दरिया मुद्रिका को देखते ही मोहित हो गई । फिर सम्माहित करने वाली दाडिम क बीजों के समान दातों का पक्ति थी जो अपराभृत पान से वृत्त ही नहीं हो रही थी, साथ ही कपोल चंचल कुडरों की आभा से प्रकाशमान हो रहे थे । २५।

इनकी नासिका दीपक की ली के समान (तीखी) दिखाई दे रही है यह मानों धूपे की कली एव लाप की मोरु है । नवीन स्नेह का समान सवदनशील बड़े नेत्र, कमल के समान शोभायमान हो रहे हैं । इसप्रकार मानों मीन, खजन एव मृगों की सभी छटा यहाँ एकत्र हो गई है । २६।

२२ जप = कहने लगी । क्षत्री = क्षत्रिय । जोती = देखती हुई, ज्योति । सामळो = श्यामवर्ण का । गात्र = शरीर । पीला पिछोरा = पीले रंग का वस्त्र । कणा ऊरर = किनारे पर । नग = नगीने । घोष = सुगोमित हुआ है ।

२३ रोळ = शब्द । वळ = झूल रहे हैं । बिच = मध्य में । केहरो नखल = घेर का नाखून । राज = फरता है ।

२४ बिहू = दानों । बाहै = भुजाओं में । जोती = ज्योति । माडै = अन्दर जप = बहती है । मोल = कीमत । पहुँची = पहुँचे का आभूषण ।

२५ सुदरी = मुद्रिका प्रगूठी । मोही = मोहित हो गई । वळ = फिर । दाडिमे = दाडिम क बीजों के समान । अघूर = अघूरों के । अघाई = तुति । भिग = प्रकाशमान । लोळ = चयन, कण्ठपालि । भाई = प्रतिविम्ब ।

२६ निष्प = नौ । ऐरो = इनका । चप = चम्पा । लळी = नोक । लप = लाप नामक पान । दोरध = बड़े । पकत्र = कमल ।

शोभा = शोभा ।

दोहू भ्रक्कुटी कोर हु^१ देगि दूहै,^२
 भ्रम^३ भ्रग सूता अली^४ जाण भूहै ।
 अली सकुली जाणि कीधी अलक्क,
 तणों केसरी कस्सतूरी तिलक्क ॥२७॥
 बधी चोळमा^१ रग रगी विरगी,
 सुहै ऊपरा पाघ खागी सुचगी ।
 चवै- नागणी चद्रका मोर ची ही,^३
 ओपे चोप^४ पावस घट्टा अछेही ॥२८॥
 अराहै सराहै कर^१ आवलोक,^२
 हवी नाग लोफा तणी राज लोक ।
 ऐसी^३ भागणी कूण जे बूख^४ आयो
 हिंडोली घलाड^५ घर हुल्लरीयो ॥ २९ ॥
 हुई रूपमयी देव देख^१ हैरान ,
 जप जागमी नाग राखी जतन ।
 अरू^३ दाखव वाळ^४ होसी अवारो,
 पगल्ले पगल्ल महल्ल पधारो ॥ ३० ॥
 रहा तो घर दाव^१ दूज रहावू,
 मोरो घाट वराट एथे न मावू ।
 चमकी चमकी सज चित्त^२ चैती,
 लुळी^३ पाय लागी वळ लूण लेती ॥ ३१ ॥

२७ ^१घोर [ख,ग], ऊर [ङ], स्यामची देख देहे [च], ^२दोहे [ट] ^३भमे [ख,ग], ^४सखि [ख,ग,घ] ।

२८ ^१चोळ [ख], रगमई रग रगे [घ] ^२तव [ट] ^३मूरतोदी [ख] मोर तेही [घ,ट], ^४थाप पारप [ख], चोप पापर [ग], उप साख पारिख [घ] ।

२९ ^१बूहै [ख] कीधी [घ] घणू [ट] ^२माविलोके [ग] घम्वलोके [ङ], ^३एही [ख], ^४प्रु खज [घ] ^५द्वारे [ख,घ], घवारे [घ] ।

३० ^१देवी [ङ] ^२हरने [ख] हराने [ग] हिर ये [ङ] ^३अशो [ख], धरो [ग], भोगे [ट] ^४बोन [ख] ।

३१ ^१देव [ख,ग], पाव [घ,च], ^२चन [ख], ^३लागू [ख,ग] ।

हे सखी ! दोनों मृकृटियों के किनारों को देखकर ऐसा भ्रम होता है मानों दोनों मोहों के ऊपर मोरे सो रहे हों और अलकें मानों भ्रमरों की शृंखला हो । इसी प्रकार केसर तथा कस्तुरी का तिलक भी गोमायमान हो रहा है । १२७।

विविध रंगों में रंगी हुई चोळमां बांधी हुई है और मस्तक पर देवी पगड़ी भली शोभित हो रही है । इसके अतिरिक्त मयूर-चित्रिका भी लगाई हुई है । नागिन कहती है कि—इनकी प्रमा तो वर्षा ऋतु की अनहीन घटा के समान प्रतीत हो रही है । १२८।

इधर उधर से श्रीकृष्ण की देख कर नागलोक का दरबार साधारण लोगों से खचाखच भर गया और वे लोग कहने लगे कि—ऐसी कौन नागयान है जिसकी फील से इस (बालक) ने जन्म लिया और जिसने अपने घर पर हिंडोला डालकर हुलाराया । १२९।

स्वरूपमय भगवान् श्रीकृष्ण को देख कर सभी आश्चर्यचकित हो गए और कहने लगे—नागराज जग जायेगा, इस बालक की यत्नपूर्वक रखो । ऐसा सुनकर नागिन भगवान् कृष्ण से कहने लगीं—वरा ! तुम्हें धेर तो होगी फिर भी आप धीरे धीरे हमारे महल से चले चलो । १३०।

यह सुनकर भगवान् कृष्ण ने प्रत्युत्तर दिया कि—यदि तुम्हारे घर रहूंगा तो किसी अथ धवसर पर रहूंगा, मेरा स्वरूप विराट है अतः जमी यहाँ नहीं समा सकता । भगवान् क मुख से इस प्रकार का कथन सुनकर सभी नागिनें चौंफ चौंफ कर अपने मन में सावधान होतो हुईं भगवान् के पदों में झुककर पड़ने लगीं और बलया लेने लगीं । १३१।

२७ कौर—किनारा । भ्रम—मदेह । प्रमी—सखी, भोरा । भ्रू है—मोहों में । सखी—शृंखला । कीधी—बनाई ।

२८ चोळमां—वतमान चोल के स्थान पर पहना जाने वाला वस्त्र । रंगीबिरंगी—विविध रंगोंवाली । खापी—टडी । चगी—भली । उप—गोमायमान । चोप—काति । पावस—वर्षा ऋतु । प्रडेही—घतहीन ।

२९ मराहै—जिना मार्ग के । कर भावलोक—देख करके । रुधी—बावू हो गया, मर गया । लोके—साधारण लोगों से । जे—जिसकी । कूल—कुल । हिंडोळी—पनना । हुं नरायो—दुनार दिया ।

३० हैराग्न—चकित । जर्प—कहने लगे । जत न—यत्न पूर्वक । बाळ—बालक । पधारो—चलो ।

३१ दाव—धवसर । घाट—स्वरूप । वराट—धनन । णवी—इस स्थान पर इससे । मावू—समा सकता है । चेनी—सावधान हुई । तुट्टी—झुककर । मूख—बलया ।

सुण्यो रूप वेद मु पेख्यो मग्ही,^१
 वडा भागरी नागरी-नागि^२ वेही ।
 माहो माह^३ आणद दाह^४ मुरक्की,
 वालाव^५ भळ^६ नाथ नाग्गी मुरक्की ॥३२॥
 कठाहूत आयी थठ काज^१ वेहा
 ग्रहा भूलियो चापरो, साप गहा ।
 भली^२ नागणी नाधियो राहू भूली,
 देवो^३ आपरी आजलीधो^४ दडू^५ ॥३३॥
 सटक्क मुहै^१ नागणी वोल पारो,
 प्रभू जागणी^२ मूक्ष पाछा पधारो ।
 काळो-नाग^३ सू लीजिय बगि कानो ।
 पटचो^४ तान साझ चढ मान पारो ॥३४॥
 नही^१ नागणी वोल तेहा^२ निकास
 वस रस्सण र्भस्सण विरखवा^३ से ।
 विहो^४ कोर चपी, रही^५ मा^६ वकाव
 इसो वाळ देखी दया मूक्ष^७ आव ॥३५॥
 हजारो मुन्वा^१ जागसी नाग हवा,
 थडीलो^२ न छाड निराधार ऐवा^३ ।
 महाकाळ काळो न को^४ बाळ मान
 पनी दोतटो^५ आज ही^६ बाध पान ॥३६॥

३२ ^१ सुवेई [ख], सवायो [ग] - नागी भूलोन मयो [ग], ^३ महामोह
 [ख ग] महामोद [घ] ^४ दये मुरकी [ख ड] ^५ मुलाह म [ख ड]
^६ वळी [ख ड] ।

३३ ^१ काम [घ] ^२ भोळी [ख घ], भूलो [ग], ^३ निय [ग], दिघो [ड],
^४ लाधो [घ], दीघ [ग] आप [ड] राख [च] ।

३४ ^१ मुन [ख ग घ], मुही [ट] ^२ जागिस्थ [ख घ] ^३ कुळी [ग],
 काना [ड] ^४ पार [ख] परा [घ], परो [ड] ।

३५ ^१ ग्रहा [वि] ^२ रहा [ग] ऐसा [ड], ^३ ब्रह्मवासे [ख], ^४ कहे
 [ख] कही [ग] कही [ड], ^५ रहै [ख] ^६ भाव्य काव [ख], रहै
 आवि [ग घ], भाव काव [ट] ^७ मोय [ड] ।

३६ ^१ मुहै [ग घ] ^२ थडीरो [ख], न हुलो [घ ड], ^३ लेवा [ख]
 नेवा [घ ड] ^४ न क्यू [ख], ^५ दो घणी [घ] बोक्की [ड], ^६ ह
 [ख ग] ।

भगवान के जिस स्वरूप का घणन वेदा मे सुना था वही स्वरूप आज सबने प्रत्यक्ष देखा अत वे नाग नारिणा बड़ी भाग्यशालिनी हैं । नागिने परस्पर हसती हुई अपार आनन्द का वचन करने लगीं । इनने मे ही भगवान के बोलों ने उन पर फिर घुरकी डालदी । ३२।

एक नागिन कहने लगी कि—लाला ! तुम कहा से आए हो और यहाँ पर तुम्हारा क्या काम है ? कहीं तुम अपना घर तो नहीं भूल गए हो ? यह सप का घर है । ऐसा सुन कर भगवान् धीकृष्ण बोले—हे मली नागिन ! मैं भाप भूल कर यहाँ नहीं आया हूँ वरन् तुम्हें तुम्हारी प्रतिष्ठा रखनी है तो मेरी गँद जो तुमने लेली है उसे लौटादो । ३३।

हे नागिन ! तेरा यह कटु वचन—“मेरा स्वामी जाग जाएगा तुम वापस धले जाओ” मेरे हृदय मे खटक रहा है । नागिन बोली—मैं आपसे फिर कह रही हूँ—आप कालिय नाग से शीघ्र विनारा करलो अन्यथा तुम्हारा पिता इधर उधर खोजता फिरेगा और माता के (स्तनों मे) स्तन्य बह जाएगा । ३४।

भगवान् धीकृष्ण कहने लगे—नागिन ! तुम्हारी रसना के अदर क्रुद्ध सप क विय क समान निवास करनेवाले घघन मत निकालो । किसी अन्य नागिन ने उसका पल्ला दबाते हुए कहा—अरी ! ठहर, क्यों एकवास कर रही है । ऐसा बालक देखकर मुझे दया आ रही है । ३५।

क्योंकि हजार मुखोंवाला कालिय नाग अभी जाग उठेगा और वह हठीला इस प्रकार के आश्रयहीन को नहीं छोड़ेगा । महाबाल-स्वरूप कालिय कोई बालक नहीं जानेगा ! (बालक समझ कर नहीं छोड़ेगा ।) आज यह कृष्ण स्वरूप बकरी, घाघ स्वरूप कालिय के पाले पड़ गई है । ३६।

- ३२ पेह्यो=देखा । माहो माह=परस्पर । राप=कहने लगीं । घुरवकी =स्मिन् हास्य से । बुलाव=वर्षों ने । नांखी=डाली । घुरवकी =वशीकरण शीपधि, घुरकी ।
- ३३ कठार्हूत=कहाँ से । घठ=यहाँ । केहा=कसा । यहाँ=घर । नाविघी =नहीं थाया । राह=माग । शीघो=लिया हुआ ।
- ३४ मुहै=मेरे को । खारो=कटु । मूऊ=धेरे । पाजा=वापिस । बेग =शीघ्र । कानी=विनारा । सोऊ=दू डता फिरेगा । पानीं=स्तन्य
- ३५ ऐहा=इस प्रकार से । रसणे=रसना मे । डस्तणे=डसने वाले । विखलवा से=विपघर के समान । किही=किसी ने । कोर=विनारा चपी=बबाया । रही=ठहर । मूऊ=मुझे ।
- ३६ हवा=समी । घडोलो=दठी । निराघार=आश्रयहीन । भेवा=ऐसा, इस प्रकार का । मान=ममंकेगा । दोतड़ी=बकरी । पान=पाले ।

आवो^१ नागणी नाग वगी जगाडी,^२
 जठे^३ माडमा आज वडू^४ अखाडी ।
 रढीजे इसा^५ मात आग रढाळा,
 चवीजे नही बोड, ऐकाळ चाळा^६ ॥३७॥
 न दीठी कदीये न^१ नेत्र निहाळी,
 काने ही नथी^२ साभळघो नाग-वाळी ।
 दरब्वार वाळी तणो मेल्लि डावो,
 खडजम राणा^३ नकोलाभखावी ॥३८॥
 चाळा मा कर^१ मामुहा जुद्ध चाळा,
 बवारचा^२ न घारे अज बाळ वाळा ।
 खेलीजे रमीज पिता^३-मातु खोळा
 भरीज नही आभ सू वाय भीळा ॥३९॥
 जुडवा^१ जुतू^२ नाग काळी जगाव,
 अज मुख प पान री^३ मोडि^४ आव ।
 जुन वस धारी परस्स मनही,^५
 काळी नागसू जुद्ध^६ रीलाग केहो ॥४०॥
 च्छवा^१ वाल देख किसू^२ वाळ छडे
 कटक्का जटक्का^३ नही तूझ वेड ।
 दुरगा दुवाहा दुहल्ला^४ दुक्षल्ला,
 नडा रा नही अबला झूल^५ भल्ला^६ ॥४१॥

- ३७ १ जा हे [ख] २ जगावो [ख] ३ वडे [त्य घ] दोनू [ड], ४ इसू
 मात [ग घ] प्रसोमात [ड] ५ चविबोली प्रितथ्य प्रकाल बाला [ख],
 वष बात एह यपा काळ चाळा [ग] चवई बोल ऐहई चवई चकचाळा
 [घ] ।
- ३८ १ अदुयेण्य [ख घ] जदिपाण [ग], कदीईन [ड] जडीफेण
 [ख] - घी [ख], कनेही नही [ड], २ न यपा [ख] निवयो [ग],
 विवे [ड] ।
- ३९ १ करती [ख], समा [ख घ], २ बवे रोम घारे [ग], बधेशान घारे
 [ड], ३ यह पद्यांश नही है [ख ग], धणू [ड] ।
- ४० १ जडेवा [ख], २ न तु [ग], ३ रा [ग], नही है [ड], ४ सोड
 [ख], ५ जुन वस धारी परास स जेहो [ख घ च], ६ समाम [ड] ।
- ४१ १ छावा [ख], छाश [ग], घवा [ड], छवि [च] २ कमू [ड],
 ३ मटका [ग], हटक्का [घ], ४ तू हासी [ख], तू हाटव [घ],
 प्रोष^५ [ख], कुठ [ड], ६ माया [ड] ।

ऐसा सुनकर मगवान श्रीकृष्ण कहने लगे—हे नागिन ! तुम शीघ्र जाकर कालिय को जगा दो, हम दोनों यहाँ पर ब्रह्मांडा रचेंगे । नागिन बोली—लाल ! इस प्रकार का रोना मा के सामने रोना (इस प्रकार मा के सामने मचलना) यहाँ ये काल को प्रेरित करने वाले वचन मत कहो । ३७।

तुमने कभी कालिय नाग को आँखों से निहार कर नहीं देखा है और न कानों से सुना है । कालिय के दरवार को घमराज भी बायाँ रख कर चलते हैं और तुम भी कोई लान नहीं उठाओगे । ३८।

तुम युद्ध को प्रेरित करने वाली चालें मत चलो (अपनी शक्ति और उग्र से बढ़ करके स्वांग मत करो) । अभी तक तुम्हारे वचन के केशो का मुण्डन भी नहीं हुआ है । तुम अपने माता पिता को गोब में खेलना, कूबना । मोले । आकाश को बाहुपाश में नहीं भरा जा सकता । ३९।

तुम कालिय नाग को युद्ध के निमित्त जगाते हो । अभी तक तो तुम्हारे मुह से दुग्ध पान की गंध आ रही है । हृदय से लगाकर स्पृश करने जसी तुम्हारी अवस्था देखत हुए कालिय नाग से युद्ध का लगाव कसा । ४०।

मैं बालक ब्रह्मकर कहती हूँ कि—क्यों मौत को बुला रहा है । तेरे पास सेना आदि भी कुछ नहीं है और बुराव्यय, दुग्ध, बुलम, कुट्ट प एव अष्ट योद्धाओं का अच्छा समूह भी नहीं है । ४१।

३७ गीगो=शीघ्र । प्रठ=यहाँ । प्रधाडी=दगल । रबीज=रोना (क्रि०) रवाळा=रोना । खबीज नहीं=नहीं कहना । बाळ चाळा= काल के उपद्रव, काल को प्रेरित करने वाले ।

३८ दीठी=देखा । निहाळी=निहार कर । नथी=नहीं । सांमळयी=सुना । टावी=बायाँ । सई=चलत है ।

३९ पाळा=घाल, गरारन । मा=नहीं । सामुत्रा=स मुत्त । जुद्ध चाळा=युद्ध के उपद्रव, युद्ध की प्रेरणा देने वाले । बधारधा=काटे । प्रजे=प्रभी तक । वाळ=केश । सोळा=गोब में । धाम=आकाश । बाय=बाहुपाश ।

४० जुडेवा=युद्ध करने को । पै पानरी=दुग्धपान की । सोढि=गध जुन=दक्षकर । परस्त=प्यार करे । लाग=लगाव, कर ।

४१ च्यवी=कहती है । किसू=क्यों । बहवर्का प्रटवर्का=अमलु शील सम्य । केडे=पास । भडारा=बीरों के । प्रभ्वला=अष्ट । भून=समूह ।

१ का^१ है, प^२ मग^३ तदा,
 तु^४ ता^५ त^६ का^७ उभय^८ मग^९ तदा ।
 गता^{१०} तुता^{११} त^{१२} ता^{१३} त^{१४} मा^{१५},
 हा^{१६} ता^{१७} ता^{१८} हा^{१९} ता^{२०} ॥४२॥
 पा^{२१} ता^{२२} म^{२३} भा^{२४} म^{२५} ता^{२६} पा^{२७} ता^{२८},
 ता^{२९} ता^{३०} पा^{३१} ता^{३२} म^{३३} ता^{३४} ।
 मा^{३५} ता^{३६} वा^{३७} ता^{३८} हा^{३९} ता^{४०} म^{४१},^२
 ता^{४२} ता^{४३} अ^{४४} ता^{४५}, ता^{४६} ता^{४७} ता^{४८} ॥४३॥
 टा^{४९} हा^{५०} ता^{५१} ता^{५२} ता^{५३} ता^{५४}
 प्र^{५५} ता^{५६} प्र^{५७} ता^{५८} ता^{५९} ता^{६०} ता^{६१} ।
 ज^{६२} ता^{६३} ता^{६४} ता^{६५} ता^{६६} ता^{६७}
 गु^{६८} ता^{६९} ता^{७०} ता^{७१} ता^{७२} ॥४४॥
 कि^{७३} ता^{७४} ता^{७५} ता^{७६} ता^{७७}
 क^{७८} ता^{७९} ता^{८०} ता^{८१} ता^{८२} ता^{८३} ।
 टा^{८४} ता^{८५} ता^{८६} ता^{८७} ता^{८८} ता^{८९},
 पा^{९०} ता^{९१} ता^{९२} ता^{९३} ता^{९४} ॥४५॥
 न^{९५} ता^{९६} ता^{९७} ता^{९८} ता^{९९} ता^{१००}
 रि^{१०१} ता^{१०२} ता^{१०३} ता^{१०४} ता^{१०५} ।
 न^{१०६} ता^{१०७} पा^{१०८} ता^{१०९} ता^{११०} ता^{१११}
 छि^{११२} ता^{११३} ता^{११४} ता^{११५} ता^{११६} ॥४६॥

४२ ^१ नहीं [ट] ^२ रण उदाह जहा [ड] ।

४३ ^१ बाहू बाहू [ष], ^२ महषी [ड], ^३ नही जीण मंगलता जीव रली [ख ष], जूड़े [ड] धंग धने [घ] ।

४४ ^१ हाण रगीन ठाई [ख ग], ^२ प्रहूच प्रभूर [घ ष], ^३ जही छेकड़ी [ख ग] ।

४५ ^१ सेल [ख ग] ^२ कधीनी [ड], ^३ स [ड], ^४ बघाण [ख ग ड],

४६ ^१ बाजनों पाय [ख], बाजनी धाय [ड], ^२ पद्माल [ख ष], पेयाल [ड], ^३ वाई [ड], ^४ छाई [ख ड] ।

नहीं कोई हृदय एव पैदली का मेघ गजन हो रहा है । लडने के लिए चुने हुए प्रसिद्ध उमराव भी नहीं हैं । चंचल भुजाओंवाले सिंह के समान साथी भी नहीं हैं और हठीले घोड़े एव बड़े बड़े दांतों वाले हाथी भी नहीं हैं । १४२।

घोड़ों का और सुमट्टों का समूह भी नहीं है और पाखरों के लगे हुए घुघरुओं की झनकार भी नहीं सुनाई दे रही है । घातुओं के अंदर हजार कीलों वाला बाजूबद तथा शरीर पर बस्तर एव जीवरत्नी भी नहीं है । १४३।

वीरों के हाथों में तथा रानों में यथास्थान रागे के कवच भी नहीं दोल रहे हैं और पट्टियों पर पट्टीचिया तथा परों पर लोहे के मोजे भी नहीं हैं इसी प्रकार छक्कियों द्वारा जटित गिरस्त्राण युक्त कवच भी नहीं हैं । तुम्हारे पास गुस्ति, गक्ति, बर्तरी एव गदा नामक गस्त्र भी नहीं दिखाई देते हैं । १४४।

विस्तृत सना में फरसिया भी नहीं फिर रही हैं और कटिवस्त्र से कटारी भी फसकर बांधी हुई नहीं है । मीषण टकार करने वाले धनुष भी नहीं दिखाई देते हैं । और तो और मामूली बाकी कबाल एव बाण तक भी पास में नहीं हैं । १४५।

नफीरी, भेरी, नगारे एव रणतूर भी नहीं बज रहे हैं और उनसे होन वाला नाद भी नहीं हो रहा है । घोड़ों के पद प्रहार से पाताल भी नहीं बज रहा है (या घोड़ों के पावों में डाली हुई पायलें भी नहीं बज रही हैं) तथा साथ पद रज से सूय भी ढका हुआ नहीं दिखाई दे रहा है । १४६।

४२ जुड़ेवा = युद्ध करने के लिये । उमरा = उमराव । नामजदा = चुने हुए । सचाळा = चंचल । सकाळा = सिंह । पटाळा = घोड़े ।

४३ पाघरटटा = समूह । पाखर = बस्तरों की । रोळ = झनकार । पट्टा = समूह ।

४४ ठव = यथास्थान । ठाई = जवाकब, युक्तिपूर्वक । पाई = परों में । जरदा = कवच । छती = शक्ति ।

४५ बबर = समूह, विस्तार । कठ चीळ = कटिवस्त्र में । घटार टकी = धनुष । पसाण = पास में तूणीर (?) बाकी = प्रदमुत्, डेडी

४६ भेरी = भेरी । निर्माण = नगारे । रणतूर = युद्ध के बाजे । धोरै = शम्भू का, बहून । बाजये = घोड़ों में । रेण = धुनि । रेणा = सूर्य, बाकात ।

१ वा^१ हैदळ पळ मघाग,
 गु^२ वा १ तो उमगा^३ ताम जहा ।
 गताळा जुजाळा उथाळा १ सायो,
 हुटाळा पटाळा दनाळा १ हायो ॥४२॥
 घोटा ग भग ग नही पाधग्टा,
 गही पूघर पागर गळ घट्टा ।
 गाह वाह^१ बाज हगाग १ गगी,^२
 गती^३ अगि अग, नही जीयररती ॥४३॥
 टा हाथळा राम^१ राग १ ठाई,
 प्रह^२ प्रहूती लोह मीजा न पाई ।
 जडी छनढी^३ टोप गाटी जरहा
 गुपत्ती न छत्ती न वत्ती न गहा ॥४४॥
 फिर दवरी सय^१ नाही फरस्मी
 कड वीळ^२ कट्टार वस्ती न^३ वस्ती ।
 टवारी न भारी १ अठार टाकी,
 पपाण^४ न वाण १ रुमाण वाकी ॥४५॥
 नफेरी न भेरी न निस्साण-नहा,
 रिणतूर वाज न गाज रवहा ।
 न का वाजदै पाय^१ पायाळ^२ वज्जई^३
 छिण ऊफण रेण रणा न छज्जई^४ ॥४६॥

४२ ^१ नहीं [ड], ^२ रण छपाह जहा [ड] ।

४३ ^१ बाहू बाहू [घ], ^२ महली [ड], ^३ नहीं जीण भगासगा जीव रली
[ख च], जुहू [ड] भग भगे [घ] ।

४४ ^१ हाथ रगीन ठाई [ख ग], ^२ प्रहूच प्रभूर [घ घ], ^३ जडी छेकड़ी
[ख ग] ।

४५ ^१ सेल [ख ग] ^२ कबोली [ड], ^३ स [ड], ^४ बघाण [ख ग ड],

४६ ^१ बाजनों पाय [ख], बाजनों वाय [ड], ^२ पद्माल [ख घ], पेवाल
[ड], ^३ वाई [ड], ^४ छाई [ख ड] ।

महीं कोई हृयदल एय पैदलो का भेघ गजन हो रहा है । लडने के लिए चुन हुए प्रसिद्ध उमराव भी नहीं हैं । चचल भुजाओंवाले सिंह के समान साथी भी नहीं हैं और हठीले घाडे एव बडे बडे दातों वाले हाथी भी नहीं हैं । ४२।

घोडों का और सुभट्टों का समूह भी नहीं है और पाखरों में लगे हुए घुघरुओं की झनकार भी नहीं सुनाई दे रही है । बाहुओं के अवर हजार कीलो वारा वाजूवद तथा शरीर पर बस्तर एव जीवरखी भी नहीं है । ४३।

वीरों के हाथों में तथा रानों में यथास्थान रागे के बवच भी नहीं बोल रहे हैं और पट्टुओं पर पट्टुचिया तथा पंरो पर लोहे के भोजे भी नहीं हैं इसी प्रकार छबड़ियों द्वारा जटित निरस्त्राण युक्त बवच भी नहीं है । तुम्हारे पास गुस्ति, गक्ति, बर्तरी एव गदा नामक शस्त्र भी नहीं दिखाई देते हैं । ४४।

विस्तृत सेना में फरसिया भी नहीं फिर रही है और बटिवस्त्र से कटारी भी फसकर बाधी हुई नहीं है । भीषण टकार करने वाले घनुप भी नहीं दिखाई देते हैं । और तो और मामूली बांकी कबाण एव बाण तक भी पास में नहीं हैं । ४५।

नफीरी, भेरी, नगारे एव रणतूर भी नहीं बज रहे हैं और उनसे होने वाला नाद भी नहीं हो रहा है । घोडों के पद प्रहार से पाताल भी नहीं बज रहा है (या घोडों के पावों में झाली हुई पायलें भी नहीं बज रही हैं) तथा सय पद रज से सूय भी ढका हुआ नहीं दिखाई दे रहा है । ४६।

४२ जुडेवा = युद्ध करने के लिये । उम्भरा = उमराव । नामबट्टा = चुने हुए । सघाला = चचल । लकाला = सिंह । पटाला = घोड़े ।

४३ पाखरटटा = समूह । पाखर = बस्तरों की । रीळ = झनकार । पट्टा = समूह ।

४४ ठव = यथास्थान । ठाई = जचाकर, युवितपूवक । पाई = पंरो में । जरदा = बवच । छनी = शक्ति ।

४५ बबर = समूह, विस्तार । बड़ धीळ = बटिवस्त्र प । घटार टकी = घनुप । पलाण = पास में लूणीर (?) बांकी = पदमुठ टेढ़ी

४६ भेरी = भेरा । निसाण = नगारे । रणतूर = युद्ध के बाजे । घोरै = शम्भ का, बहून । बाजये = घोडों के । रेण = पूनि । रेणा = सूय, घाकाप ।

न वी नकीए साप गापा १ राज^१
 वड रागरी^२ घुति फीज १ बाज ।
 गुड ताळ^३ गाळा न दाह १ गाज,
 वने हाव होना^४ १ ता गाव वाज ॥४७॥
 १ ता^१ हुअये जम छूट रवाई
 त्रिवाळ वजाळ न वाजै त्रिपाई ।
 घड वड हूह माती न घटा
 पुर जाण^३ वासाड री मघ^४ घटा ॥४८॥
 टळकरतडी^१ टाउ नेजा न घज्जा,
 दिस मारळी हन धार दुमुज्जा ।
 आया औद्रक^२ सूरमा एणि^३ आर,
 अत लोहवी^४ लोह रिछघा न धारै ॥४९॥
 नही सन सनाधि एयो सजाई
 लड सो किस मूळ^१ पूछा, लडाई ।
 भण^२ नागपत्नी^३ जिता मून भीर,
 तिता माही^४ एको नही तूश^५ तीर ॥५०॥
 कटक्का सगा बाहरी नाग^१ काछ,
 अमा नागणी पत्य^२ री ज्व आछ ।
 बुलाडो जगाडो जुवो जुध्व बाघ ।
 हारिया जीपिया^३ करतार हाथै ॥५१॥
 इसो आज ते^१ कौण भूलोक आछे,
 काळीनाग सू जुध्व^२ सग्राम काछ ।
 चड^३ कूण काळी तणी सीम चाप,
 काळीनाग हू आज ही कस काप ॥५२॥

- ४७ १ न कू नाखिये खाप खगा न राज । ख ग ड, २ बडारागरी
 [ख ग ड], ३ गहीनाख्य [ख] गुडे [ग], गडे [ड], ४ कोका [ख, ग] ।
 ४८ १ वया हू [ख] २ घड बेह बेह [ख] घुडा बेहू बेहू [घ च]
 ३ जेम [ख ग] ४ मेड [ग ड] ।
 ४९ १ डलकतडे [ख], री [ग] नवी [ड], २ घापे उमगे [ड], ३ ऐह
 [ड] ४ लहडु [ख घ] ।
 ५० १ सूत्र [ख], सूत्र [ग], भाति [च] पूत्र [ड], २ सुण [ग], ३ पुवी
 [ख ग], ४ माहीको एको [ख], ५ नाग [ड] ।
 ५१ १ नाम [च] - भूभरो पति भाणू [ग], ३ घात [ख ग ड] ।
 ५२ १ जे [ड], २ जोष [ड], ३ चड विषयाला [ख ग] ।

सेना में शाखा प्रशाखा के नकीब भी नहीं शोभित हो रहे हैं और मारु राग की धुन भी नहीं बज रही है । तोपों के गोलों से तथा बारूद के छूटने से गजना भी नहीं हो रही है । युद्ध के शब्द से होने वाला कोलाहल भी नहीं सुनाई दे रहा है । १४७।

'हुक्क' ऐसी आवाज करते हुए आग्नेयास्त्र भी नहीं छूट रहे हैं । बड़े नगरों का लयपूर्ण घोष भी नहीं हो रहा है । दोनों सभ्य समूह में आयाड़ की मेघ घटा के समान रघ (हुकार) भी नहीं हो रहा है । १४८।

लटकती हुई डालें अब भालों की नोक पर फहराती हुई ध्वजाएँ भी नहीं दिखाई देती हैं । हमें तो तुम्हारे हाथ में केवलमात्र एक मुरली दिखाई देती है । इस कालिय के द्वार पर आते हुए अनेक शूरवीर भी भय खाते हैं । परन्तु तुम्हारे शरीर पर तो लोहे का कबच तक भी तो नहीं है । १४९।

तुम्हारे पास न तो सेना है और न एक भी सेनापति है । मैं पूछती हूँ तुम किस आधार पर युद्ध करोगे ? भगवान् कृष्ण इस प्रकार के वचन सुनकर बोले—नागिन ! तुमने मेरे लिए जितने सहायक गिनाए हैं उनमें से तुम्हारे पास तो एक भी नहीं है ! १५०।

नागिन ! सभ्य एवं वीरों से रहित नाग लडेगा उसका प्रीर हमारा युद्ध होगा । तुम भाग को जगा करके बुलाओ और फिर हमारा बाहु युद्ध देखो । हार जीत की बात तो ईश्वर के हाथ है । १५१।

नागिन बोली—ऐसा आज पृथ्वी पर कौन है जो कालिय नाग से युद्ध लडे और उस पर घड़ाई करके उसकी हृद् दबावे ? कालिय नाग से आज कस तक कांपता है । १५२।

४७ नकीब=नकीब (शाखा के सुयश गायक) । खांप=शाखा । बड़ी राग=मारुराग । गुडनाळ=तोप, बंदूक । बारूद=बारूद । गाज=गजता है । होर हीका=युद्धरथ ।

४८ त्रिबाळ=नागरों के । बड़ाळ=बड़ों के । त्रिघाई=लयपूर्ण ध्वनि । पड=समूह में । हुह=हुँकार । मातो न=मची नहीं ।

४९ नेजा=भाले । ध्वजा=ध्वजाएँ । हुभुज्जा=दोनों हाथों में । पीद्रक=भयभीत होते हैं । ऐणु=इमरु । घारै=तुम्हारे ।

५० सेनाधि=सेनापति । मूळ=आधार । लडाई=युद्ध । मणे=कहै । मूरु=मेरे । मीरु=सहायक । तितामादी=उनमें से । तीरे=पास ।

५१ कटवका=सेना । खर्गो=वीरों, तनगरों । काछ=लडेगा, बाधेगा । पाछ=होगा । जुवो=देखो । करवार=ईश्वर ।

५२ घषो=ऐसा । त=तह । कृणु=कौन । सीम=हृद् (सीमा) । खांप=दबाव । हु=से । कांप=कांपता है ।

न का नकीऐ खाप खापा न राज,¹
 वढै रागरी² धुनि फौज न वाज ।
 गुडै नाळ³ गोळा न दार न गाज,
 वहै टोक हीका⁴ को साक वाज ॥४७॥
 न का¹ हृवक जन छूट हवाई,
 त्रिवाळ वटाळ न वाजै त्रिघाई ।
 यडै वेहडै² हूह माती न थटा,
 घुर जाण³ आसाढ रो मघ⁴ घटा ॥४८॥
 ढळक्कत्तडी¹ ढारु नेजा न धज्जा,
 दिस मोरळी हेव थार दुभुज्जा ।
 आया औद्रक² मूरमा एणि³ आर,
 यत लोहवा⁴ लोह रिछ्या न थार ॥४९॥
 नही सैन सैनाधि एको सजाई
 लड सो किमै मूळ¹ पूछा, लडाई ।
 भण² नागपत्नी³ जिता मूझ भीर,
 तिता माही⁴ एको नही तूझ⁵ तीरै ॥५०॥
 कटकका खगा बाहरो नाग¹ काछै
 अमा नागणी पत्य² रो जूझ जाछ ।
 बुलाडी जगाडी जुवो जुध्ध वाय ।
 हारिया जीपिया³ करतार हाये ॥५१॥
 इसी आज ते¹ काण भूलोक आछ,
 काळीनाग सू जुध्ध² सग्राम काछै ।
 चढै³ कृण काळी तणी सीम चाप
 काळीनाग हू आज ही कम काप ॥५२॥

- ४७ ¹ न कू नांखिये खाप खगा न राज [ख ग ड], ² बहारागरी [ख ग र], ³ गडीनाय [ख] गुडे [ग] गडे [ड], ⁴ कोका [ख, ग] ।
 ४८ ¹ वषा हू [ख] ² घट्ट वेह वट्टह [ख] घूडा वेहू वेहू [घ ष] ³ जेम [ख ग] ⁴ भेड [ग ड] ।
 ४९ ¹ ढलक्कत्तडे [ख], रो [ग] नका [ड], ² घापे उमगे [ड], ³ ऐह [ड], ⁴ लहडु [ख ष] ।
 ५० ¹ मूर [ख], मूष [ग], माति [ष] पूत्र [ड] ² मुण [ग], ³ पुमो [ख ग], ⁴ मादीसो एको [ख], ⁵ नाग [ड] ।
 ५१ ¹ नाम [ष] ² भूकरो वति घाष्ट [ग], ³ वात [ख ग ड] ।
 ५२ ¹ जे [ड], ² जोष [ड], ³ चड विपयाना [ख ग] ।

सेना में गाथा प्रशाखा के नकीब भी नहीं शोभित हो रहे हैं और मारु राग की धुन भी नहीं बज रही है। तोपों के गोलों से तथा बारूद के छूटने से गजना भी नहीं हो रही है। युद्ध के शब्द से होने वाला कोलाहल भी नहीं सुनाई दे रहा है। ४७।

'टुक' ऐसी आवाज करते हुए आग्नेयास्त्र भी नहीं छूट रहे हैं। बड़े नगरों का लयपूण घोष भी नष्ट हो रहा है। दोनों सय समूह में थापाड़ की मेघ घटा के समान रव (हृकार) भी नहीं हो रहा है। ४८।

लटफती हुई ढालें एवं मालों की नोक पर फहराती हुई ध्वजाएँ भी नहीं दिखाई देती हैं। हमें तो तुम्हारे हाथ में केवलमात्र एक मुरली दिखाई देती है। इस कालिय के द्वार पर आते हुए अनेक शूरवीर भी मग खाने हैं। परन्तु तुम्हारे शरीर पर तो लोहे का कबच तक भी तो नहीं है। ४९।

तुम्हारे पास ७ तो सेना है और न एक भी सेनापति है। मैं पूछती हूँ तुम किस आधार पर युद्ध करोगे? भगवान् कृष्ण इस प्रकार के वचन सुनकर बोले—नागिन! तुमने मेरे लिए जितने सहायक गिनाएँ हैं उनमें से तुम्हारे पास तो एक भी नहीं है! ५०।

नागिन! सय एवं वीरों से रहित नाग लड़ेगा उसका घोर हमारा युद्ध होगा। तुम नाग की जग करके बुलाओ और फिर हमारा बाहु युद्ध देखो। हार जीत की बात तो ईश्वर के हाथ है। ५१।

नागिन बोली—ऐसा आज पृथ्वी पर कौन है जो कालिय नाग से युद्ध लड़े और उस पर चढ़ाई करके उसकी हृद् दबावे? कालिय नाग से आज कस तक कांपता है। ५२।

४७ नकीब—नकीब (शाखा के सुमन गायक)। खाप—शाखा। बड़ी राग—मारुराग। गुडनाल—तोप, बटुक। बारू—बारूद। गाज—गजता है। होरु हीका—युद्धरव।

४८ त्रिबाल—नागरों के। बडाल—बडों के। त्रिघाई—लयपूण ध्वनि। पख—समूह में। हृद—हृकार। माती न—मची नहीं।

४९ नेजा—माले। ध्वजा—ध्वजाएँ। बुभुज्जा—दोनों हाथों में। मीद्रक—भयभीत होते हैं। ऐण्डि—इमक। चार—तुम्हारे।

५० सेनाधि—सेनापति। मूळ—आधार। लबाई—युद्ध। मणी—कहे। मूरु—मेरे। भीरु—सहायक। तितामाड़ी—उनमें से। तीरे—पास।

५१ कटवकी—सेना। खगो—वीरों, तलवारों। कालू—लड़ेगा, बांधेगा। भाछ—होगा। जुवो—देखो। करतार—ईश्वर।

५२ घसी—ऐसा। त—वह। कूण—कौन। सीम—हृद् (सीमा)। खाप—दबाव। हू—से। काप—कांपता है।

जाळें त्रिरच नीला बहे विरख झाळा,
 वदन सहस्स वच ध्योम व्याळा^१ ।
 वटा शृंग मीनग^२ हेमग वाळा,
 जिरी फूक आग^३ भर दूक फाळा ॥५३॥
 अन्ठी घणौ माम झूठी^४ जमागी ।
 हुसी टाकरा आरू आज^५ आरी^६ ।
 निज नारि वरखाणिया कद्र^७ नाह ।
 वद^८ जस्म वरी जिक हत्य वाह^९ ॥५४॥
 पनगा नरा दाणवा देवि^१ पासा ।
 तुन दखावू^२ आज वगा तमामा^३ ।
 फणी^४ नाथ न झालवू ऐणपाणी^५ ।
 मारी^६ एह^७ ककालियो द्रोहमाणी ॥५५॥
 मुहे^१ जोड होमी घडी हक माहै ।
 निघी^२ नाग ते बोल धोटा त्रिबाहै ।
 जमना जप्पई नागणी छोडि जोरा ।
 फणी फेण^३ न खावसी देवि फोरा ॥५६॥
 जमना तण^४ नागणी वण^५ जागी,
 लियो^६ बोल^७ त खाजना^८ ऐण लागी ।
 कठ वास मूसाल धोटो^९ किणी री,
 वळ दूमरी ताहर कूण वीरी ॥५७॥

५३ ^१ विष घाला [ग] ^२ सेनग [ग], ^३ चल [ग] ।

५४ ^१ तुठी [ख] रुठी [ड] दूठउ [घ], ^२ भूक घारी [ग उ], ^३ इनके
 भाग च प्रति मे अधिक पाठ है —

खड सीह सोनीग हवार ररीज, करतार न भावती बात कीज ।
 ववा मनपा कर्मणा जीव वाली समजे लीयो रज तज्जा समाली ।
 घुर हीन बठी लूग माही दूक, चिहूँ लाग वायो परि पाव बूक ।
 वडा बोलिये वोन तेना बिचारी, भराहे मदा म न घ उतारी ॥
^४ रुद [ख ग], वय [ड], नुहे [घ], ^५ वडे [ड], ^६ दण्य [ड],
 घटा [च] ।

५५ ^१ वेग [ग], देखि [घ] ^२ तुना दाणवा [ड], ^३ हम एकली गाठ
 फेरा हजारी नदी नागणी लाग घारोलगारी । प्र पा [ड] ^४ पुण्डि
 प्रणि [ख ग] ^५ जाणयो [ग], ^६ मुणे [ग], ^७ ऐण [ख], एक [ड]

५६ ^१ मुर [ड], ^२ नयो [ख], नह [ग] निज [ड], ^३ फुणा कीण [ड] ।

५७ ^१ जय [ड] ^२ वेण [ड], ^३ लिय [ग], ^४ बोनती [ख ड],
^५ सोमना [घ], ^६ दोटो [ड] ।

जब कालिय नाग के सदृश मुखों में विष ज्वालाए निकलकर
 व्योम में सर्पाकार होकर बढ़ती हैं तब हरे वृक्षों को जला देती हैं तथा
 जो हिमालय की बड़ी-बड़ी शीतल चोटिया हैं वे तो उसकी फूत्कार के
 सामने छलागें भरने लगती हैं । १५३।

मेरा पति कालिय क्रोधित हो जाने पर पागल हो जाता है
 ठाकुर । आज बहुत ही घोर लड़ाई होगी । भगवान ने कहा—नागिन ।
 अपनी नारी के बखान करने पर पति की इज्जत नहीं बढा करती, प्रत्युत
 जिसके बाहु प्रहारों का बखान शत्रुगण करें तब ही उसकी सच्चे माने में
 इज्जत बढ़ती है । १५४।

पद्मगों, मनुष्यों, राक्षसों और देवताओं के समक्ष आज तुम्हें शीघ्र
 ही खेल दिखाऊंगा और इन्हों हाथों से कालिय को वश में करके पकड़ूंगा ।
 यह कालिय मेरा परम शत्रु है । १५५।

नागिन बोली—अभी घटो मर के अंदर आमना सामना हो जाएगा ।
 तुमने नाग की निंदा की है इन वचनों को नागपुत्र निभाएंगे । जमुना
 कहने लगी—नागिन । तुम जोर छोड़ दो । इसको छोटा समझ कर कालिय
 नाग नहीं खामेगा । १५६।

जमुना के वचन सुनकर नागिन सजग हुई थीर वचन के द्वारा
 ही धीवृष्ण की परीक्षा लेन लगी । नागिन बोली—तुम्हारा निवास एव
 ननिहाल कहा पर है ? तुम किसके पुत्र हो और तुम्हारा दूसरा भाई
 कौन है ? । १५७।

१३ विश्व=वश । विश्व=विष । भाळा=लपटे । पाळा=सप ।
 गृग=चोटी । सागग=शीतल । हेमग=धर्म वाले पहाड़ ।
 दूक=पहाड़ पहाड़ की चोटिया । पाळा=छलाग ।

१४ भरुठी=दृष्ट होने पर । माम=पति । कूडी=पागल । भमारी=
 हमारा । भाकरु=तेज । धारी=युद्ध अतनाशयुक्त को गोल ।
 वल्लाणियां=प्रशंसा करने पर । बद्र=इज्जत । बंद=कहें ।
 हत्यवाह=प्रहारों की ।

१५ पासा=समीप, से । बगा=रीघ्र । समासा=वेला । फणीं=गाय ।
 नायन=काबू करव । एण पाणो=६ हो हाथों से । दाहमाखी=घनु ।

१६ मु हजोड़=आमना सामना । तप=कहने लगी । जोरा=जोर ।

१७ वण=बननों स । जापी=सनेन नाकर । योजना=जांव, परीक्षा ।
 कठ=कहा । वास=निवास । भूसाळ=ननिहाल । धोटी=पुत्र ।
 पूछ=कौन । धोरो=भाई ।

अमारा^१ भगता तणा^२ एह ओरा,
 मट्टया^३ मधुरा धरा वास मोरा ।
 मोरै नद बाबो जसोमत्ति^४ माई,
 भलो^५ हेक थळभद्र चै^६ नाम भाई ॥५८॥
 मोरै कस मामी रहै^१ मूक्ष मूळै,
 कियो वास^२ नडो जमूना ज कूळै^३ ।
 मनासू न मूकई घडी हेक मामी ।
 करै^४ सूर ऊगा^५ तणी^६ नित्य सामी ॥५९॥
 मामे मोकली खोजना^१ करण मासी ।
 इता दोह चो^२ हू हुतो उप्पवासी^३ ।
 पणा दोहरो मूकियो नेम घातै ।
 हवै जीम सु जुज्झ विभ्रात जात ॥६०॥
 चवै^१ मात, भ्राता विम्है^२ घेन चारी,
 वहे आज ते नागणी मूक्ष^३ वारी,
 सुरभी तणी नागणी ऊच सेवा,
 गळे अध्ध ओघा^४ खुरी-सेह प्रेवा^५ ॥६१॥
 नरा^१ सेह लागै^२ रहै देह नौको,
 तिसी^३ नागणी गव्वुरोचन^४ टीको ।
 बघा देस दीजै विप्र^५ वद बोल,
 नही नागणी तोइ^६ गोदान सोल ॥६२॥

- ५८ १ धना [ग], २ रिद वास [ट] ३ महाप्रामहेर धरा वास मोरा [स] मट्टया प्राम धरे धरा [ड] मटे रिडि वा विपि वा [च], ४ असोदानु [ड], ५ थळ [ख], ६ छ।
 ५९ १ कह [ग] फहे [ड घ], २ नास [स ग] ३ मकौल [ग] भकूलै [ड], ४ सज [ट], ५ ऊग [स ग] ६ समेजुद्ध [ड] ।
 ६० १ मारवा [ड] सोभना [च], २ रो [ड] ३ अप्पवासी [स ड] ।
 ६१ १ चदि [ख], २ बने [ड] ३ घात्र तो घ० पा० [च], ४ घाय घाय [ग] मग उधां [च], ५ गेवा [घ च] स प्रति में घट्ट पद्यांग नहीं है ।
 ६२ १ नकयी [ग] नकी [ड], २ नागी रही [ड] ३ विमठ [ग घ] समू [ड] ४ गजुरोचन [ग], पतरइ चान्द्र [घ] नापरो बद्र [ड] ५ विप्रदान [ग] गो वे* [घ] द्विजावे* [ड], ६ बाय [ग] गायरइ [घ], सेह [घ], स प्रति में यह पद्य नहीं है ।

नगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि—मेरे मत्तों के हृदयों में एव पृथ्वी पर मथुरा में मेरा निवास है। मेरे चाचा नवजी धीर माता यगोदाजी हैं और मुझे से बड़ा बलमद्र नाम का एक माई भी है। ५८।

मेरे कस नामक मामा हैं जो मेरे समीप ही यमुना तट पर निवास करते हैं। वे मुझे एक घड़ी भी मन से नहीं उतारते हैं, निरत्य सूर्योदय होते ही सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। ५९।

मामा ने मुझे खोजने के लिए मौसी को भी भेजा था। मैं इतने दिन से उपवास ही कर रहा हूँ। बहुत दिनों का नियम डाल रखा है, अब युद्ध की भ्रांति मिट जाने पर ही भोजन करूँगा। ६०।

हे नागिन! माता ने कहा है कि—तुम दोनों माई गायें चराओ। आज मेरी बही (गायें चराने की) बारी है। गायों की सेवा बहुत श्रेष्ठ है। इनकी पद रज से पाप समूह नष्ट हो जाते हैं। ६१।

जिस प्रकार गो पद रज से मनुष्यों का शरीर अच्छा रहता है, उसी प्रकार गोरोग्न का निकल करने पर भी शोभित होता है। वेदों और ब्राह्मणों का कहना है कि—समस्त देश का दान देने पर भी गो दान के तुल्य नहीं हो सकता। ६२।

५८ समारा = हमारे। घोरा = हृदय (तर), कीटा। मोरा = मेरा। माई = मां। मलो = अच्छा। नाम = नाम वाला।

५९ मूळ = मेरे। मूळी = समीप। नैडी = निकट। कूल = तट पर। सामो = युद्ध, घगवानी।

६० मोकळी = भेजी। खोजना = जाच। मासी = मौसी। दोहची = दिनों का। उपवासी = भूखा। घणा = बहुत। नेम = नियम, व्रत। घाते = डालकर। हव = अब। जुजळ = युद्ध। विभ्राति = विडम्बना। जाने = वीतने पर।

६१ चव = कहती है। बिहै = दोनों। चारी = चराओ। ते = वह। मूळ = मेरी। वारी = वारी। सुशमी = गाय। ऊच = श्रेष्ठ। गळी = नष्ट होने हैं। मधव = पाप। घोघा = समूह। खुरी सेह = खुरों की धूलि। प्रेवा = गायों की।

६२ नोको = अच्छा, सुतर। तिसी = उसी प्रकार। टीको = तिनक। बघा = समस्त। दोन = उन्त हैं। तोइ = तब भी। तौले = तुल्य।

पचाअन्नत देव इच्छ^१ पखाळा ।
 सबे तीथ वासो वस^२ गव्वुसाळा^३ ।
 दही दूध रावा^४ ची आ सुखदाई ।
 मठा घाळीया^५ खाड खोहा मळाई^६ ॥६३॥
 वळे हाथ सू मात आफ विरोळे ।
 घृत पीजिये आण निवात^१ घोळे ।
 लियी मागि लूणी दियो मात लूदो ।
 न खम तिके नागणी बोल वूदो ॥६४॥
 घणे^१ उच्छबे व्याहिया ग्रेह ग्रेवा,
 पियूस दुवावहि माहे परेवा ।
 अतनी तणी भारि ले कव आयो,
 जुवो^२ नागणी ते हुतो गव्वुजायो^३ ॥६५॥
 कही सू खडो कपडो तीर^१ काही,
 महम्मा घणी प्रागण^२ घेन माही ।
 खळा हळा नागळा पाण^३ सेती,
 अमे नागणी हाथ मे^४ आय ऐती ॥६६॥
 पड लातरी घेन ओ^१ नोर पोध,
 काळीनागनू जग्गवू^२ तेण^३ कीधे ।
 प्रिया तात न गोत्र थारी पिछाण्या,
 वडा गोप री पुत्र^४ जायो विहाण्या ॥६७॥

- ६३ ^१ कीज पखाळा [ग], घाछा बक्वाळे [ङ],^२ रहे [ङ],^३ घेनु [ङ],
 घ प्रति में यह पद्यांग नहीं है । सवामन्न दे दूध उगे सवारो, एरी
 नागणी तोल मोटो घमारो अ० पा० [ङ],^४ जे नवनिध [ग] री
 वासना [ङ] नवनीत जे [च] - मीठा घोनवा [ग] घोलिए [ङ],
^५ पिनाही [ङ], मिठाई [च], यह पद्य ख प्रति में नहीं है ।
- ६४ ^१ नोनीत [ङ], निघोण [च], यह पद्य ख प्रति में नहीं है ।
- ६५ ^१ वरो उक्क माह प्रासी गरबी, पचासा घव घेन माहे परबी [ग],
 घरद घुछवद ग्याहनद सेह प्रीबा पचू माघव माहे परवा [घ], गर
 उक्का अ - प्रेरी गरबी पचामाहते घन माहो परबी [ङ] ^२ जोने
 [ङ]^३ घेन । यह पद्यांग घ प्रति में नहीं है ।
- ६६ ^१ कोर [ङ] चीर [घ],^२ पाहणो [ग], प्राहण [घ], प्राणणे [ङ]
^३ कीजेन [गङ] ^४ घाषमी रात [ग घ], न प्रति म यह पद्यांग नहीं है ।
- ६७ ^१ इणे [ग], घइ [घ], घ [ङ],^२ न जागवो [ग], जगाडी घे]^३,
 जगाडी जे [घ च],^४ वेण [ङ],^५ पूत [ग] ।

वही, दूध, घृत, शहब एव घीनी (पद्मासृत) के द्वारा प्रक्षालन की बेधता भी इच्छा रखते हैं । अमस्त तीर्थों का निवास गोगाला में होता है । वही, दूध एव मट्टा मिलाई हुई राव, घीनी मिलाया हुआ खोवा तथा मलाई, मिथी मिलाया हुआ घृत पीने से यों ही सुख देने वाले हैं फिर जब माता उन्हें अपने हाथ से मयकर देती है तो उसमें स्वाद और भी बढ़ जाता है । मां से मखलन मागने पर वह उसका बड़ा सा खोंदा दे देती है । हे नागिन ! इस प्रकार के खान-पान याभा ममुष्य वधन स्वी नू बें (छोटाकणी) सहन नहीं कर सकता । ६३ ६४।

घर के अन्दर गाय के प्रसूत होने पर बड़ा ही उत्सव मनाया जाता है तथा उसका पीयूष मिट्टी के बतन (पारी) में डुहा जाता है । हे नागिन ! जो पृथ्वी का मार अपने कर्षों पर धारण कर क आया वह गाय की मत्तान ही था । ६५।

हे नागिन ! किसी भी किनारे (छोर) पर चलकर देख लो । जिसके प्रांगण में गाय है उसका बहुत महत्त्व है और खलिहान में तथा हल खलाने में बलों के आधार (शक्ति)से ही खेती का कार्य होना है । इस प्रकार का गो-बल स्वकृपी धन हमारे हाथ में है । ६६।

इस ब्रह्म का पानी पीने से गायें दुबल होती जा रही हैं । इसी कारण से कालिय नाग को जगाना है । नागिन ने कहा—प्रिय ! तुम्हारे पिता एव गोत्र को हमने पहचान लिया है, सुबह सुबह बहुत बड़े गोप क पुत्र यहा आए हो ! जिस प्रकार मेरे सामने कालिय नाग को जगाने की

६३ इच्छा=इच्छा करते हैं । पद्माळा=प्रक्षालन । वस=रहते हैं । गधुसाळा=गोगाला में । राव=छाद्य में घाटा डाल कर बनाया हुआ पदार्थ ।

६४ वल्ल=पुन । माफ=स्वय । विराळ=मयकर । जान=मानो । निघात=मिथी । लूणा=मखलन । लूबो=खोंदा । न तम=नहीं सहन कर सकते हैं । तिक=दे । बोल लूनी=छोटाकणी ।

६५ उच्छव=उत्सव । ग्रह=घर में । प्रेवा=गाय के । पीयूष=खीस, पीयूष । परेवा=पारी में । भवधो=पृथ्वी । मार=बोक । कध=कर्षापर । ग-बुसापी=गो प्रसूत ।

६६ खडो=बलो । कपडो=पकडो । तीर=छोर (किनारा) । काही=कोई भी । महम्मा=बड़ाई । प्राण्यो=मागने के । माहि=घर । खळो=खलिहानों में । हळा=हल में । पाण=प्राधार पर । नागळो=बलों के । मम=हमारे, मेरे । हाथमें=वशवर्ती । माथ=धन सम्पत्ति । एसी=इतनी ।

६७ सातरी=दुबल । धो=वह । पीध=पीने से (पर) । जगवू=जगाना । पिछाण्यो=पहचाने । विहाण्यो=घात ।

जपे गो दिगी जेम^१ बाळी जगाडी^२,
 इना^३ टाड, ले मात सू चात^४ आढी ।
 हात^५ मिल वापसू पूछि होई,
 सुती, साप जगाडीज^६ वेण कोड ॥६८॥
 वहे वाग जे^१ सापरी याळ रोज,
 तर^२ आविजो जागती जाम शोजे ।
 पछा पीव^३ रा नागणी तू पिछाण^४,
 बड टाकुर वात वाच विहाणे ॥६९॥
 रोती^१ बाहडू जे अजोदयी घराने,
 निसाणी मणा केण पास न मान ।
 पिता मात रो ओवणी^२ पववानो,
 मारया री हुई घूघरी साच^३ मागी ॥७०॥
 दूज नद र घेन नीलरस दूणी,
 लला तू नही एह बुदत लूणी ।
 जिहा^१ बोल्ता उपड बोल जेता,
 लला लहे^२ लेखो फणा केण^३ लेता ॥७१॥
 अही^१ नारि^२ तू एह नेठाह आणे,
 जिके बोलिया^३ बोल गदत जाण ।
 वृथा वेण जाण रल^४ मूझ वाळा,
 पुणू^५ एकणी, नार इक्कीस पाळा ॥७२॥

- ६८ ^१ घेम [ग], कोली जगायो [ख], ^३ प्रसो [ड] ^४ भात [झ]
 भात [झ] ^५ जगाडिय [ट]
- ६९ ^१ तो [ग] जो [ङ] ^२ तुमे [ग], तथा [ङ], ^३ पछा पावरा [घ ख],
 पापरा [ङ] ^४ पमाणो [ख] ।
- ७० ^१ रीतु बाहडु कोप्र जीतु नरानि [ख] रीतो बाहडु सो जीतो
 कुणरान [ग घ], जातु बाहिरो को प्रजे तू न जाण [ङ], रीतो
 जाऊ तो कोइ जीतो घरान [च], रे उधयै [ग], रगट्टु [ख],
 पोस्त्रियठ [घ], वलट्यो [ङ] ^३ साध [ख ड घ] ।
- ७१ ^१ जेही [ङ] बालिजे [ग ड] ^२ लहेस [ख], लेस [ङ], ^३ पुणा
 मोण [ग ड] ।
- ७२ ^१ प्रसो [ङ] ^२ नागणि [ङ] ^३ नीकत्या [ग], नीसरथा [ङ], ^४
 नके [ङ], ^५ पणा [ङ] ।

बात कह रहे हो इसको छोड़कर माता से बातों में ही हठ कर लेना । यदि तुम्हारी माँ हा भर ले तो फिर पिता से गत बंद कर पूछ लेना कि—सोते हुए साँप को किस उतसाह के लिए जगाया जाय ? ।६७-६८।

यदि तुम्हारा पिता कह दे कि—तुम जाकर भले ही साँप से छेड़-झानी करो, तो तुम तभी आजाना । साँप तीसरे पहर में जगेगा । मगधान ने कहा—नागिन ! तुम अपने पति के पक्ष को अच्छी तरह पहचानती हो तभी तो सुपह से ही उस बड़े ठाकुर (सप) को बाते बाँच रही हो ।६९।

यदि मैं साँप को बिना जीते खाली घर लौट जाऊँ तो घर वाले साँप के बिना ह के बिना यहाँ घाने की बात को ही नहीं मानेंगे । नागिन बोली—साला ! तू यह सत्य समझे कि—तुम्हारे माता पिता के पकवाम उलट गए हैं एव घृधरी मुत्ताओं ने परिवर्तित हो गईं जात होती है ।७०।

नद के घर नौलाख दूध देने वाली गायें हैं अतः यह नाघ-कूद तुम्हारी नहीं है उस मक्खन का ही प्रताप है । तुम्हारी जिह्वा से जितने घोल [बुबघन] निकले हैं उनका हिसाब तो कालिय ही लेता पर वह सभी सो रहा है ।७१।

धीकृष्ण ने कहा—नागिन ! तू यह निश्चयारमक रूप से समझ ले कि मेरे घघन जो निकल गए हैं वे हाथी के दातों के समान हैं जो निकलने के पश्चात् कभी नहीं मुड़ते । तेने मेरे घघनों को व्यय समझ रखा है वास्तव में ऐसी बात नहीं है मैं जो एक बार कह देता हूँ उसका इक्कीस बार तक पालन करता हूँ ।७२।

६८ मोदिसी=मेरी तरफ । जेम=जिस तरह । छोड़=रवाना । घाड़ी=हठ । हेकार=हां । हीड=प्रतिज्ञा करक । कोड=प्रसन्नता के लिए ।

६९ घाल=छेड़झानी भूठ । तर=तय । जाम श्रीजे=तीसरे पहर । पछा=पक्ष । बाच=बाचती है ।

७० रीती=झाली । बाहडु=लौढ़ । जे=यदि । निसाणी=बिना । मण्णपेण=कालियनाग । पान्न=बिना । घोघणी=उलटना । घृधरी=सावुत घन उदात्त कर बनाया हुआ पक्कवान । साघ=सत्य ।

७१ दूणी=दूध देने वाली । घोल=बघन । सेखो=हिसाब । फण्णफेण=सप ।

७२ नेठाह=निश्चयारमक । ग दत=हाथी के दांत । जाणें=मानो । वृषा=फिजूल । मू भ=मेरे । पुणू=कहत है । बार=दफा । पाळां=पालन करता हूँ निभाता हूँ ।

अमा पय खाडा तणी घर आग, ।
 लरा एह^१ भूवया पछे छोट लाग ।
 मोरे देव आहीर च गाम^२ माहै,
 सत्री उमट बचका खग वाहै^३ ॥७३॥
 सत्री कदवा^१ कस रयत^२ खासी,
 वहै^३ बट भाय वहै ब्रज वासी ।
 घर^४ कसर तातरी टाट घुट्टी,
 तदै ताहरी केथ सत्रवट^५ घुट्टी ॥७४॥
 रळी^१ कसर राज प्रवेस रमता^२
 तद^३ नवर नेस^४ बलभद्र न हुता ।
 हिवे^६ नागणा मो बलभद्र आगे,
 मिळ कमरा दूत पाणी न माग ॥७५॥
 जोवी^१ नद र ग्रेह^२ सत्रवट^३ जागी,
 हिव लागवा सक त्रोलाक लागी ।
 कहू नागणी सुण^४ तू रोप कान,
 मिळ दादुरा मेह तो साच मान ॥७६॥
 काळीनू^१ न नाथू तो थार^२ कमावू,
 जमोदा माई^३ नद बाब न जावू ।
 नही नागणी नाग^४ थारी निवार,
 हिव एक ही^५ गाठि फेरू हजार ॥७७॥

७३ ^१ घट [ग], घाट [ङ], ^२ बाजात [ख ङ] ^३ सत्री ऊम ही खाण को लाग वाहै [ङ] ।

७४ ^१ काहै बी [ङ] ^२ रेहेत [ङ] ^३ दिचेवाट [ङ] ^४ घर कसरेतुबसी तात [ख] टाटि [ग], घाठी [घ ङ] घर कसरे तातरी टाट घाती [च] ^५ सत्रवट [घ] ।

७५ ^१ रले [ङ] ^२ पहुता [ख], पोता [ङ], ^३ तदा [ङ], ^४ सेत [ख], नेह [ङ] ^५ नोता [ङ] ^६ बहै [ग] भावे [ङ] ।

७६ ^१ जुए [ग] जोयो [ङ] ^२ नेस [ख ग] ^३ सत्रोट [ङ] ^४ बोल रोप काने [ख ग], हपयु बोल [ङ] ।

७७ ^१ काळी नाग नाथून जा एर मायो [ङ] ^२ तुं आरो कमायो [घ ङ] ^३ प्रमू [ङ] ^४ लाग [ग घ ट] ^५ हेरुली [ङ] ।

हमारा बंध (माग) छांड़े की धार पर है अर्थात् दुगम है । इस दुगम माग का त्याग करने पर ही कोई बलब लग सकता है । हमारे गांव के ग्रहीर क्षत्रिय हाथों में खड्ग धारण किए कमा के उमड़ रहे हैं । (कि—कालिय नाग को द्रुह से निकाल कर छोड़ेंगे) । ७३।

नागिन छोली—अज्ञवासी कब से क्षत्रिय बन गए हैं ? ऐसे तो कस की बहुत रघत है जो अपने अपने हिस्सों पर चल रही है । अज्ञवासी भी हिस्सों पर चल रहे हैं अर्थात् कस के अधीन रह रहे हैं । अब कस के घर तुम्हारे पिता का सिर मूड़ा गया था, तब तुम्हारी क्षत्रियता कहा चली गई थी ? । ७४।

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन ! जब कस के राज्य में बहुत से लोगों ने मिल कर उपयुक्त नाटक खेला था, तब नद के घर बलभद्र के समान पुत्र उत्पन्न नहीं हुए थे । अब मेरे और बलभद्र के सम्मुख यदि कस के वृत्त आ जाय तो वे पानो भी नहीं मांगते ह अर्थात् हमारे द्वारा मार दिए जाते हैं । ७५।

नागिन ने अग्र सखियों की ओर संकेत करके कहा—वेखो, वेखो ! नन्द के घर में क्षत्रित्व जाग उठा है, जिससे अब तीनों लोकों को मय होने लगा है ! भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन तू क्या ताने दे रही है ? ध्यान लगाकर सुन, मेडक तो वर्षा होने पर ही वर्षा को सत्य मानते हैं, वर्षा की बात को नहीं । ७६।

मैं यदि कालिय को अपने काबू में न कर सका तो 'आश्रीवन तुम्हारे यहा ही चाकरी करता रहूंगा' अपने माता-पिता के घर नहीं जाऊंगा । परन्तु नागिन ! मेरे घर का निराकरण तुम्हारा कालिय नहीं कर-सकेगा । मैं अभी उस सहस्र कणधारी कालिय को इस एक गांठ की लकड़ी से घुमाऊंगा । ७७।

७३ अर्थात्—हमारा । पप—माग । छांड़ा—तलवार । धार—नोक । पध—बाद में । छांट—दाग । मांहे—मैं अज्ञ । ऊपट—उमड़ रहे हैं । बड़का—कमी ब । बांहे—हाथ में ।

७४ रघत—बनता । छागी—बहुत । घट—हिस्से । टाट—सिर । तदे—तब । कप—कहा । मूड़ा—बीड़ गई थी, टूट गई थी ।

७५ रली—मिलकर, प्रमनता । बिस—घर । हिव—अब । मो—मेरे । पाखी न मार्ग (मु०) = पृथु को प्राप्त हो जाते हैं ।

७६ ओवो—देशों । गेह—घर । क्षत्रवट्ट—क्षत्रित्व । सक—मय । रोप-कार्नि—कानिश्चर करके, ध्यान पूर्वक । दादुरा—मेडकों को । मेह—वर्षा । साध—सत्य ।

७७ न—नहीं । नापू—वग में करू । कमाऊ—चाकरी करता रहूंगा । पारी—तुम्हारा । निवारं—निवारण करसकेगा । एक ही गांठ—एक ही धंधी वाली लकड़ी से । फेरू—घुमाऊंगा । हबार—सहस्र कण वाले, नाग को ।

पयाटा अगाटा पदेला^१ पुमाणो^२
 पदाण विळ तोगड आ जगावो^३ ।
 रागी वा^४ पूजां तरी साम तो^५
 बोल^६ बाइना मार^७ पागोर बो^८ ॥७८॥
 सुण्यो^१ न ओगाणो^२ गुराणो गयाणो
 म्हीजे तरी जगळां जाट^३, गंणा ।
 काळी नागरी काण रागी ७ काई,
 यक्याळ^४ नं मुह मा चाडि बाई ॥७९॥
 घुरा पोसियो^१ घान न घान घायो^२,
 यळ मोरळो माळीय लाट्यायो ।
 अम्हा सामहो हे गगी मिज्ज^३ आव,
 विसू आपरो माल आप कराव ॥८०॥
 पसं श्रीहू पोडी, मागी सीग मोरी,
 अर मूण गजे पती^१, आव ओरी ।
 नमो धीठ^२ धाठा, चय ताग तारी,
 हिव^३ जोडि तोसू वाता वाऱ हारी ॥८१॥
 बढगा^१ बहो- बोल जेता अघाए,
 पल^२ ततला आज तोनू पसाए ।
 नरा नारी को नागणी ना वियाणी,
 रही बाइडी देव दाणव्व राणी ॥८२॥

७८ ^१ पहेली [ड], ^२ पवाये [ड], ^३ पही राध्यमु निमडो घाजपाए [ख ग], घणाइ राखीपठ नीयडइ मा जु पाए [घ], घणों रु धियो नीयडे नेट पाए [ड], ^४ बये [ड], ^५ बोइ [घ] ।

७९ ^१ सुणीज [ड] ^२ उखाणु [ख घ], ऊखाणो [ड] ^३ अट्ट [ड], ^४ नीमु ही म चाढाम्य बाई [ख घ], मुडो चढवेत बाई [ड] ।

८० ^१ पोसियो [ड], ^२ घायो [ड], ^३ पूड [ख], वाद [ड] परसा देखि [घ] ।

८१ ^१ पस्यु [ख], पगे [घ], पलो [ड], ^२ घोट [ग] ढीठ [घ] उजपा [ग], जपो [घ], हवे [ड], ^३ घजे [ग] हर्ष [ड] ।

८२ ^१ घटकां [ग], ^२ कडा [ड], ^३ पलु तेतरा [ड] ।

तुम अखाड़े के अन्दर आने से पहले ही अपने पति के युद्ध-चरित्र पर प्रसन्न हो रही हो। अभी इसी स्थान पर दो घड़ों में निणय हो जाएगा। एक अथ नागिन ने पहली नागिन से कहा—सखी ! श्याम के बराबर विवाद में हम नहीं पहुँच सकती हैं क्योंकि यह तो 'सीधा किनारा काटता हुआ' ही बोलता है १७८।

नागरानी ! तुमने एक पुरानी लोकोक्ति नहीं सुनी है क्या— 'जंगल में जाट को रोकना नहीं चाहिए'। इसने अपनी बकवास में कालिय नाग की कोई प्रतिष्ठा नहीं रखी। इसमें कहती हूँ—बहिन ! इस मूल को 'अपने मुँह मत लगा' १७९।

प्राणम से ही हम लोगों ने इसे अनादि से पोषित करने और फिर महल के अन्दर दुलारन का प्रयत्न किया। इतना करने पर भी यह हमारे सम्मुख अधिष्ठित हो कर आता है तो 'हम भी अपना मोल अपने आप क्यों कराए'। अर्थात् इसमें दूर रहना ही अच्छा है १८०।

तुम तीनों ही पक्षों (पीहर, ससुराल, ननिहाल) में घतुर हो अतः मेरा कहना मान कर इधर भा जाओ। इस कृष्ण के किस पक्षवाले सज्जित होंगे ? अर्थात् इसके कोई पक्ष है ही नहीं। नागिन ने कृष्ण की ओर संकेत करके कहा—हे धृष्ट बालक, तुम्हें नमस्कार है ! अब मैं तुम से धाव विवाद में परास्त हुई, तू विजयी हुआ १८१।

तेरे पास जितने घतुके घचन हैं उन्हें तृप्त होकर कहते, आज तुम्हें सब माफ है ! क्योंकि—मानव, नाग, देव, दानव जाति की कोई भी स्त्री आज तक प्रसूता नहीं हुई है सारी बध्याएँ हैं १८२।

७८ पुमावो=प्रसन्न होवा। निमड=निपटेंगा। जघावो=स्थान पर। पूजा=पहुँचना। तोल=बराबरी में। बाढतो=काटता हुआ। पाघोर=सीधा स्पष्ट।

७९ घोसाणी=लोकोक्ति। रुडो जै नहीं=रोकना नहीं। काण=प्रतिष्ठा। काई=किसी भी तरह की। मई=मत।

८० घुरा=पहले। पान=प्याणु, मूल। धान=घन। घायो=तृप्त किया। मोकळो=बहुत। खिज्ज=अधिष्ठित होकर। किमू=क्यों, कैसे। मोन=कीमत। घापै=स्वयं ही।

८१ प्रौड=घतुर निपुण। घरै=इसके। पखी=पक्ष वाला। घाव-घोरी=इधर भाजा। घोठ=घण्ट। जोडि=ओढ़कर। तोसू=तेरे से। हारी=पराजित हुई।

८२ घडगा=व्ययं। घघाए=तृप्त होकर। पलै=समीप में। तेवसा=जितने। पसाए=प्रमा किए। विघाणी=प्रसूता हुई। वांभडी=बध्या। राणी=रानिया।

गारी गाठियो सूठ दूजो^१ न रायो,
 जखनी^२ किणी हक तू ही जायो ।
 आयो नाग सू झुझ लेया अतागो^३,
 अहीला हुयो आज पाछा न आगो^४ ॥८३॥
 घडा भीच^१ भूपाळ वेंबाण वाळा^२,
 म्बिव^३ नागरो^४ बाण केवाण वाळा ।
 अहीराय न आवडा^५ एह आडा,
 गिणा,^६ वाद जाता वेई^७ कोट गाडा ॥८४॥
 भुजगा तणी वात^१ धार भुजारी^२,
 दोहा^३ अतरा^४ रात^५ छोटा^६ दुजारी ।
 सदा भाणियो नागणी तण^७ मारो^८
 ययो^{१०} वेद^{११} पाग^{१२} नक्यु पण^{१३} चारो ॥८५॥
 अहीनारि सू नारि भास^१ अनरी
 अरी^२ जोवो न देतो^३ चसे न हेरी ।
 सुणो^४ नागणी आपणी हद्द माही,
 नरा अस्तुरा अम्मरा गम्म नाही ॥८६॥
 पवनो न चदा न दुडदो^१ प्रवेसा,
 अठ एहरी गम्म एहाअ देसा^२ ।
 मुण^३ नाम पारह्व विच्चार सुनी,
 घोटो^४ रूप, मारारि निवाण धूनी^५ ॥८७॥

८३ १ बोझी [ख], २ जनु नी तू ही हेक हेकीज जायो [ङ], ३ अताग [घ ङ], ४ आगे [घ ङ] ।

८४ १ मोंब [ङ] २ बुला [ख घ] बोल्या [ग] ३ म्बिव [ग], विह [घ] ४ सु केण [ग ङ] ५ दावडा [ङ] ६ घणा [ख], गिण [ग], गुणा [ङ] ७ कही [ङ] ।

८५ १ भास्य [ख] भाति [ग] भेट [ङ], २ भुजारी [घ] ३ दिसी [ङ], ४ धात [ख] ५ राति [ग], राता [घ ङ], ६ छेटी [ख] ७ दुजारी [घ], ८ लेण्य [ख], बोल [ङ], ९ साह [घ ग], सार [घ], १० पऊ [ख], ११ देव [च], १२ पासा [ख, ग] १३ एण [ग घ] ।

८६ १ आलाह [घ] २ हिंवारो न जोवे चसे वेई हेरी [ङ], अहीराण चउ देव [घ] ३ जाह लख [च] ४ मुण [ङ], मुडह [घ] ।

८७ १ दुडदो [ख] दुडदो [ग घ] दिगदो [च], २ प्रवेश [ङ], प्रवेस [घ], ३ सुण्य शारम ताहि विचार सुनी [ख] मुण रूप विचार एतेह सुनी [ङ] सुण्यो उर विचार को नहि [ग] ४ घोटो [ङ], ५ नावाण्य [ख] निमाण [ङ] नेवाण [घ ग] ।

किसी भी अय स्त्री ने सोंठ की गाठ नहीं खाई है ! अर्थात् प्रसव नहीं किया है , कम सत्कार भर में किसी एक माता ने तुझे ही जन्म दिया है ! जो तू कालिय नाग से युद्ध करने का हटपूवक निश्चय करके आगे बढ़ रहा है । ८३।

तुम यह नहीं जानते हो कि—मेघ घटा के सहस्र सय वाले बड़े-बड़े खड्ग धारी राजा कालिय नाग की भर्थावा को मानते हैं । हे सखी ! अहिरास कालिय एव इस बालक को, परस्पर विवाद की दृष्टि से तुलना करें तो यह बालक कालिय से कई करोड़ गुणा अधिक है । ८४।

नागिन ने कहा—कालिय नाग और तुम्हारे दादुओं की तुलना की जाय जो दिन और रात तथा नूत्र और द्विजों के समान अंतर दिखाई देता है । भगवान् कृष्ण बोले—हे नागिन ! जो सदा से आ रहा है वही अच्छा है । तुम्हारा प्रण क्या बंद से विपरीत नहीं हुआ है ? अर्थात् तुमने मेरे सनातन स्वरूप को नहीं पहचाना । ८५।

नागिन स एक अय स्त्री ने कहा—अरी नागिन ! सुनो—क्या तुम अपनी आँखों से निहार कर नहीं देख रही हो ? ये अपनी सोमा के अंदर हैं । इनकी जातकारी मनुष्य, देव तथा दानव किसी को भी नहीं है । ८६।

हे विचारशून्य ! जहाँ सूर्य, चंद्र एव पद्म का भी प्रवेश नहीं है , उन देशों में भी इनकी पहुँच है । इनके नाम स्मरण मात्र से (भबसागर) पार हो जाता है । ये घालस्वरूप में निर्वाण-प्रदाता कृष्ण हैं । ८७।

८३ आयो=उपन किया । भूक्त=युद्ध । प्रतापी=इतना प्राणे । मञ्जिला=हठी । पादोनप्रापी=स्थिर ।

८४ भीच=शूरवीर,बादल । केकाणु=सय प्रसव । तिव=सहते हैं,मानते हैं । बवाणु=कृपाणु । डावडो=बालक । एह=यह । घाडा=तुलना करें । केई कोड गाडा (मु०) =अधिक । गिणा=मानते हैं । जीता=देखते हुए ।

८५ भुजगातणी=भुजगों की । भुजारी=भुजगों की । दीहा=दिन । घतरा=घतर । रात=राति । छाटा=नूत्र । द्विजारी=उच्च बग की । सदा=परम्परागत । तेणु=वहाँ । सारो=अच्छा है । पयो=हुआ । पणु=प्रण ।

८६ घनेरी=घन्य । घेरी=घरी । (स) । बख=प्राणों से । हेरी=निहार कर । हद्द=सीमा । प्रसुर्ग=दानवों की । अम्मरी=देवताओं की । गम्म=जानकारी, पहुँच ।

८७ पवनो=पवन । घघो=चंद्रमा । दुडो=सूर्य । घठ=पहा । एहरी=इसकी । विरुवा सुनी=विचार शून्य । रूप=स्वरूप में । योरारि=धीबुरल । निवाणु धूनी=निर्वाण प्रदाता ।

सहे^१ बोलीया बाल जेता मभाळी,
 वाम वाम दीए दादयाळी^२ ।
 त्रिलोती^३ त मासई मोहा ओन^४ यूक्ष
 सग्यी गळ एन त्रिभुध्नन मूक्ष ॥८८॥
 दिगाळ^१ विसू तागवाळा दिवाजा,
 ग्रणी वाग सावा-बंधी पोढ^२ वाजा ।
 न मांनत तारी मुरारी निररग्यो,
 पढी^३ मामद्रगी^४ करगी^५ पररग्यो ॥८९॥
 रामा^१ सारसी है सग्यी धण्ण^२ रग्या,
 ग्रहाड^३ वाळी वळी को विसेता ।
 सहस्सा लिपी साळ अर सयाणी,
 पचासा उभ^४ रट दो पट्टराणी ॥९०॥
 इठ्यासी^१ उभ सी दश^२ वाधि आठ,
 मग्यी देस वेटा लिख्या^३ लस्व साठ ।
 जणणी^४ तणी ज्ण मा ए न जायो,
 उतारेवा^५ ए भोम चो^६ भार आयो ॥९१॥
 मजाण^१ वाळ तू, चक्चाल माधी
 वळीराव जेहो छळी एण यागो^२ ।
 जितो डावडो जो, वळी देग्यी जाण्यो,^३
 ठगेवा^४ गयो आप, आप ठगाण्यो^५ ॥९२॥

८८ ^१ सब [स ग] जेता बोलिया [ड] ^२ दृढ [ड] ^३ सा लोटे [स ग],
 न लोटे [ड] ^४ विह्वयो न [च], वि.ावू त [ड] ।

८९ ^१ दिखाव [ड] ^२ काय [ग घ] कोय [ड], ^३ पोढ [ख] पढ [ड],
^४ वाम दूजी [ड], ^५ कररस्ता [ड] ।

९० ^१ रमा [र ड], ^२ ध य [ड], दू यू [घ], ^३ ग्रहीमड वाळा लहै
 कीण लता [ड] ^४ ग्रभितिन [ख], ग्रभे चत्र [ड] ।

९१ ^१ ग्रभिसी [ख], ग्रभ्यासी [ड] ^२ दरबार [ड] ^३ लस [ड],
^४ जनून तणी जाण मा एण जायो [ड], ^५ हवा [ड] ^६ वा
 [ड], राणो [च] ।

९२ ^१ विया ग्र०पा० [ड] ^२ खाघा [ड] वाघा [च], ^३ जाति दाळ के हे मली
 देव जाणू [ख] त्रिकवा दावक सपी देव जाणू [ग] जनोदा तणी
 नद ए देवजाणी [ड], ^४ छलेवा [ड] ^५ छलाणो [ड] ।

हे सखी ! इन्होंने जितने वचन कहे उनको सुना ? प्रत्येक वचन में कितना चातुय था ! इनके मय से त्रिलोक आसित हैं ये (कालिय नाम से) क्या मयभीत होंगे ? इम बालक को तो तीनों भुवन प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं । ८८।

इनको तुम कालिय नाम का क्या शीघ्र दिखा रही हो ! इनके युद्ध बद्ध करोड़ों कायों का कथाओं में वचन है । यदि तुम नहीं मानती हो तो इनका हाथ पकड़कर सामुद्र शास्त्र के अनुसार हाथ की रेखाएँ पढ़कर परीक्षा कर लो । ८९।

हे सखी ! इनके हाथ में लक्ष्मी जसी स्त्री होने की स्त्री रेखा है और ललाट पर जो बलि है वह एक विशेष प्रकार की है । इनके सोलह हजार स्त्रियों का उल्लेख है जिनमें १०८ पटरानिया होंगी । ९०।

हे सखी ! देखो इनके बहुत से पुत्रों का उल्लेख है और यह अप्य सोर्गों की तरह माता के उदर से नहीं उत्पन्न हुए हैं । ये तो पृथ्वी का भार उतारने के लिए ही आये हैं । ९१।

इनको तुम बालक मत समझ लेना, ये चक्रवर्ती माघव हैं । बलि जैसे राजा को इन्होंने छल से बाध लिया था । जितना यह बालक दिखाई देता है वसा ही स्वर्ण बलि ने देखकर इनको पहचान लिया था । ये माघव वास्तव में तो बलि को ठगने गये थे, पर बाध ठगे गये । ९२।

- ८८ सहे=सब । बोल=वचन । तभाळी=सुना । दोड=चातुय । बोहा=भय । धी न=यह नहीं । वू अ=हर, मयभीत होता है । बाळ=बालक । त्रिभुज न=तीनों लोक । सूअ=दिखाई देते हैं ।
- ८९ किमु=क्या । दिवाजा=शीघ्र । साबा=युद्ध । शोड=कराडों । काभा=कागों की । न मानत=नहीं मानती हो । निरखी=देखो । करग=हाथ पकड़ कर । परखी=जाच करलो ।
- ९० रामा=लक्ष्मी । सारखी=तुल्य । धण्ण=स्त्री । वळी=रेखा । विसेखा=विशेष प्रकार की । सयाणी=चतुर स्त्रिया ।
- ९१ जण्णी=माता । तणी=की । जूण=घोनि । मा=में । प्रायो=उत्पन्न हुआ । ए=यह । मोमचो=पृथ्वी का ।
- ९२ म=नहीं । बाळ=बालक । चक्रवाळ=चक्र चलाने वाला । माघो=धोकृष्ण । जेही=जैसे की । छलि=छलकर । एण=इसने । बाघो=बाध निषा । डावडी=बातक । धी=यह । प्रापै=स्वयं ।

वळी रावळी वणिजो^१ दक्षि वाई,
 प्रतिहार मा^२ मिद्ध कर्तार पाई ।
 सवही^३ कथी^४ ग्यान^५ राणी सुणायो,
 अरूठी अतूठी भलै काज आयो ॥९३॥
 ऊभो मूरळी आप लीव अघूर,
 मोरो जागी साम वाय मूर ।
 विक्स्सी ह्मसो वण^१ ऊची बजाई,
 सपत्त पताळ सरगो सुणाई^२ ॥९४॥
 वधाई वधाई जसोदा वधाई,
 करे मूरळी नाद ठाढी कहाई^१
 मथ नीर ओछो- जिही मच्छ माही,
 जसोदा विणी काह जीत्यो न जाही ॥९५॥
 वडा जीप सी जुध बाहै वडाई,
 ग्रागाचार नारद् सखेप गाई
 रही मूरळी बुन वाजी रसाळी,
 वळी चेतना व्रजना^१ साथ वाळी ॥९६॥
 लट्यो^१ साथ जाण अमीधार त्रीधो
 करी^२ वण नाद सजीवत्त^३ कीवो ।
 विजागी सजोगी वेण^४ ऊची बजायी,
 प्रभू आपरा^५ जानि अन्नत पायो ॥९७॥

९३ ^१ वळी रिठगणटुनतक दासवाई [स], वळी राज सू-तूळत [ड], वनि
 रे विगढानिके देववाई [घ], ^२ कर्तार में रिद्ध [ग ड], प्रतिहार
 कर्तार मर्दाई पाई [ब], ^३ सवाणी [अ ग] सवाई [घ], समाखी
 [न], ^४ दगा [ख घ च], जमू [ड] ^५ नाग [ग घ ड च] ।

९४ ^१ वेण उ नो वजायो [ग स ड] ^२ सुणायो [ख ग ड] ।

९५ ^१ काहा व्रजद [ख] ^२ तो छातरु एां, एो [ख ग ड] ।

९६ ^१ रा [ड] ।

९७ ^१ नट [अ], सगी [प च], लुटे [ड] ^२ किलो [ड], ^३ सजीव न
 [ड], ^४ वगैवण वायो [ख ग] वजे वेण वायो [ड], ^५ रो [ड] ।

देखो यहिन ! बलि इनका अपना घना और द्वारपाल के स्थान पर भगवान को नियुक्त करके सिद्धि प्राप्त की। इस प्रकार रामस्तज्ञा (पूर्वोक्त शत्रु सम्बन्धी जानकारी) नागिन को सुनाया और वह बोली— प्रसन्न तथा अप्रसन्न, किसी भी तरह से ये हमारे मन्त्रों के लिए ही भाये हैं। १९३।

भगवान मुरली अघरों पर रखे हुए खड़े हैं मेरा स्वाभी कालिय, इनके मधुर वादन से जग जाएगा। भगवान ने प्रसन्न होकर हसते हुए इतना उच्च बांसुरी वादन किया कि उसे सातों पाताल एवं स्वर्ग तक सुना दिया। १९४।

मुरली की सरस ध्वनि को सुनकर व्रजवासियों में चेतना का संचार हुआ गर्गाचाय तथा नारद जसोदा से कहने लगे—घपाई ! घपाई ! भगवान कृष्ण मुरली नाद कर रहे हैं। जिस प्रकार थोड़े पानी की मगर मपता है उसी प्रकार ये घमना के पानी को मच रहे हैं। ये कृष्ण किसी से कौते जाने वाले नहीं, इनकी मुद्राओं में गुप्त है अतः कोई बड़ा पुढ जीतेंगे। इस प्रकार सत्र में यणन किया। १९५-१९६।

व्याकुल होते हुए समूह का मानो अमृतधारा स्वरूप धनु-नाद करके जीवित कर दिया हो ! जो वियोगी स्वर्गों तथा सयोगी स्वर्गों द्वारा उच्च वेणु वादन किया है यह प्रभु ने हमें अपना समझ कर ही यह अमृत पान कराया है। १९७।

६१ रावळो=घना। प्रतिगार=द्वारपाल। गिद्ध=सिद्धि। कयी=कहकर। प्रसन्नी=प्रसन्न। प्रतूठी=प्रसन्न। भल=मच्छे। वात्र=काय।

६४ कमी=सड़ा। लीघ=लिये हुए। मधुर=अघरों पर। वाय=वादन से। मधुर=मधुर। विकस्मी=प्रफुल्लित होकर। हस्सी=हसते हुए। ऊची=तेज स्वर से। सपसे पताळ=सातों पाताल में। सरगे=स्वर्ग में।

६५ ठाढी=सड़ा। घाघी=कम। जिहीं=जय। मछ=मगर मछ।

६६ जापसी=चोतेगा। बाहे=मुद्राओं में। प्रगाधार=गर्गाचाय। ससेप=सक्षय में। धून=ध्वनि। रसाळी=मधुर। वळी=लीटी चेतना=स्मृति।

६७ लटधी=ध्याकुल, मरा हुआ। त्राँ=मानो। अमीधार=अमृत की धारा। ऊची=नीचतर। आपरा=अपने।

जिगो सिधवी^१ गग नाळा जगायो
 उगाढ फगातार इग्यार आयो ।
 फगातार घाटवरी^२ पूछ पेरी,
 घणो घातियो सातढ गाम पेरी ॥९८॥
 पेयो तररी पोटा^१ अहिराट अहो
 जळायाळ^२ माह^३ वळा साळ जेहो ।
 गोजी घाटत सामटो^४ घाट गांगी,
 प्रभू^५ अग रागा सोई पूळ पागी ॥९९॥
 गोपोनाय रा हाय आया गडूद्
 अहि गारडी जाण छाट^१ उडद् ।
 अहीमूठ वाग जिहा^२ ना उपाढ,
 रम गारटू^३ जाणि घाळी^४ रमाढ ॥१००॥
 जुहो^१ जाति टोळा मिळी नागजादी,
 विठै^२ साग नै मामळी मूरवादी ।
 उभ जग जेथी फिर नीर ऊड
 घाळी नाग^३ नू आणियो^४ काह वू डै ॥१०१॥
 पसारा उसारा^१ सरा पाइकारा,
 सहै^२ नाग^३ सारा^४ नरा नाइकारा ।
 मच मूठ मारा^५ क्षर श्रोण क्षारा
 फणारा घणारा कर फूत्रकारा ॥१०२॥

९८ ^१ जिरो सिधव [ड] ^२ को ाटक [ड] ।

९९ ^१ ढोट [ड] ^२ जळागोळ [ख], भळाबोळ [ख] ^३ घाणै [ड],
^४ सामठी [ख ग] सामुही [ड], ^५ प्रभू [ड] ।

१०० ^१ छाटयो [ड] ^२ न जेहो [ड] ^३ गागडी जेम [ड] ^४ काळी [ड] ।

१०१ ^१ जाई गात्र टोली [ड], जात्र टाळा [ख] जुडे भाग टोळे [ग]
^२ वड [ड], अभी जग जेठी फिर नीर डडी [ख च] डै [ड],
^३ सु [ड], ^४ मावियो [ड] ।

१०२ ^१ मोसारा [ड], ^२ लहि [ख] सहै [ड च] ^३ साग [ख ग च]
^४ वास [घ], लारा [ड च], ^५ मर [ग ड] ।

जसी सिधु राग से कालिय को जगाया वसी ही भावृति बनाए, फणों के समूह को ऊँचा उठाए वह नरवार में आया । उसने फणों का प्रहार करते हुए अपनी पूँछ का चारों ओर घेरा देकर घृष्ण को सकट में डाल दिया १९८।

कालिय ने परकोटे के समान अपने शरीर का घेरा देकर नकुमार को घेर लिया । इसमें घिरे हुए श्रीकृष्ण वादलो के अदर चद्रमा की तरह दिखाई देते थे । कालिय ने डक डक गदग करते हुए जोर का प्रहार किया । प्रभु के अग पर वह पुष्प पगुडी की तरह लगा १९९।

गोपीनाथ के दोनों हाथ कालिय की गदन के पोछे आए मानों गरुडी साँप को बज में करने के लिए उड़ने छाट रहा हो । कालिय की केवल कठप्वनि ही बज रही थी वह जिह्वा नहीं उठा रहा था मानो कोई गरुडी खेल करता हुआ साँप को खिला रहा हो १९०।

जहा पर कालिय नाग तथा श्रीकृष्ण दोनों लड़ रहे थे वहाँ समस्त जाति की नागिनिया समूह बनाकर एकत्र हुई । पश्चात् उस स्थान से कालिय को भगवान श्रीकृष्ण ब्रह्म के गहरे पाती से ले आये १९१।

नरनायक श्रीकृष्ण द्वारा किये गये तीक्ष्ण पदाघात को कालिय सहने लगा तथा मुष्टिका प्रहार से कालिय के मुँह द्वारा श्लोणित के फव्वारे चलने लगे और वह अपने सारे फणों से फूँटार करने लगा १९२।

- १८ मिथवी=सिधु (मारु) राग । फणाकार=फणों को । भाटकते=प्रहार करते हुए । फेरी=घुमाई । घातिथी=डाल दिया । साँकटे=सकट में । घेरी=घेर कर ।
- १९ कोट=किल्ला । महेो=समान । जटाबोळ=बाँधन समुद्र । बळा सोळ=चद्रमा । नीळी=सप की श्वनि । सामटि=तीक्ष्ण । भाट=प्रहार । पाँखी=पखुडी ।
- १९० गडूहू=गदन पर । गारडो=सप का मंत्र जानने वाला । उडडू=उड़द [या घ] । महेो मूठ=सप की श्वनि । जिहा=जिह्वा । सदाट=उठाता है । रमं=खेलता है । जाण=मानो । रमाड=खिलाता है ।
- १९१ जुडो=एकत्र हुई । टोळा=समूह । गगजादी=नागिनियाँ । विड=चड । मूरवादी=घोर । उभ=दोनों । त्रूग=घोर । ज घी=बहा स । ऊड=गहरे । कूड=शमी ब्रह्म में ।
- १९२ सरा=तीक्ष्ण । पाडवाँस=पाँव से । मारा=मार । धोणु=रक्त । भारा=फुँटारे ।

जडे^१ डींगळा^२ पींगळा^३ रा अगारा,
 अधोराज^४ मारा उय कीध आरा ।
 नाहारा^५ करारा गमे हाय तारा^६,
 वोछी^७ नाव^८ धारा वहे धारवारा^९ ॥१०३॥
 तिधारा^१ चौधारा जुडे^२ भव्यतारा,
 पादूरा प्रहारा घका^३ छीचणारा ।
 घमूरा घमारा सहै साप^४ सारा,
 पड पाव, पाणा^५ मय मिण्णिधारा ॥१०४॥
 ग्रह्यो^१ गूदळी^२ जेम काळी लगारा,
 नम^३ आज^४ धारा भुजै^५ सेस भारा ।
 धुजती धरा रा श्रव थम भारा
 निहस्सै^६ नगारा सुरारा सवारा ॥१०५॥
 काळी नाग न कान झूव^१ करारा,

काळी^१ नागरी कोपरी हरि^२ हथ्ये,
 रह्या ठाठरी देखिवा देव रथ्य^४ ॥१०६॥
 जुडी^१ नाग^२ बाला पडी पाव^३ जाचा,
 कर^४ सापरी, साकळी सूत्र वाचा ।
 रडे, दाढ काढे कियो^५ वा न रीसा,
 बदत^६ वहे श्रोग^६ पचास वीसा ॥१०७॥

१०३ १ युडि [ख] उडा [ड] २ डिंगळा [ख] डगळ [घ], डेगळ [ङ]
 ३ फिंगळा [ख घ] फेंगळा [ट] ४ अधारा भिनारा [ग ड]
 ५ कहानिरा [ख], कनारा [ङ], ६ धारा [ङ] ७ उछी [ङ],
 ८ राव [ङ], ९ वारि [घ] ।

१०४ १ अघारा [ङ] २ जडे [ङ], ३ ठिका [ङ] ४ साव [ट], ५ पाणा [ङ]
 गहुदी गमारा गडी गुठणां रा [ख ग ड घ पा]

१०५ १ ग्रहै [ङ], २ गुदद [ग] गुदडि [ख], गुदळ [ट], ३ यम
 [ख ड च] ४ श्रोग [ङ], ५ भेली [ग ड], ६ नहस्सो [ङ] ।

१०६ १ भूक [ङ], २ नांखी [ङ], ३ दाम [ङ], का ह [च], ४ भर
 चुड चाडा चहै जाड भाड, बहु हायरी बाय भु नाय बीड [ङ]
 प० पा० ।

१०७ १ जरै [ङ], जडे [ख] २ हाप [ग ड] ३ माय [ङ], पास [ख ग]
 ४ पडी [ङ], ५ वडे नाग रीसे [ङ], ६ सोळ [ङ] ।

श्रीकृष्ण की भार द्वारा उसने आत्तनाद किया तथा अगारों के सहस्र डिगलमय एवं पिगलमय बघन कहने लगा । श्रीकृष्ण के प्रहारों को सहना हुआ कालिय, जल धारा के अंदर छोटी नाव के समान तैर रहा था । १०३।

भय तारक श्रीकृष्ण, कालिय के साथ तिरछे एव सामने से मिडे तथा परो में पडे हुए साँप को हाथों से मचने लगे । साँप, श्रीकृष्ण के द्वारा किए गये एडियों के, घुटनों के तथा भुवकों के प्रहार सहन कर रहा था । १०४।

श्रीकृष्ण की भुजाएँ आज शेष के समान कालिय के भार को सहन कर रही हैं । उन्होंने कालिय को भू दळी (हरे प्याज के पत्ते) के समान उठा लिया । उस समय भार से पृथ्वी कपायमान होने लगी । बडे-बडे स्तम्भ भी घिरवने लगे और देवताओं की विजय दुःखमि बजने लगी । १०५।

कालिय नाग और श्रीकृष्ण मिड रहे थे ।

—कालिय का सिर भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में था । इसे देखने के लिए देवताओं के रथ ठहर गए । १०६।

समस्त नागिनियाँ एकत्र होकर भगवान के पावों में पडीं एव साँप की पाचना करने लगीं । उनके हाथों में कच्चे सूत की शृ खलाए थीं । भगवान कालिय नाग के दांत उखाड रहे थे अतः वह विलाप तो करता था, परन्तु क्रोध नहीं कर रहा था । उसके हजार फणों से धोषित बह रहा था । १०७।

१०३ प्रकारा—जलता हुआ कोयला । उर्वे—उसने । धारा—घातनाद । करारा—तीव्र । हाप—प्रहार । खम—सहता है । बोधी—प्रोधी, छोटी । धारा—नदी, तरण ।

१०४ तिघारा—टेडे, पाँव से । चीघारा—सामने से । भवतारा—भव तारक कृष्ण । पाटूरा—पंठलों के । ढीचणारा—घुटनों के । यमूरापधारा—भुवकों के प्रहार । पाणा—हाथों से । मिण्डिधारा—साँप को ।

१०५ प्रहो—घटण किया । भू दळी—हरे प्याज की कोपल । घ्र जठी—कपाय मान हुई । धरा—पृथ्वी । प्रक—इगमगे । निदस्से—बर्ज । सुरारा—देवताओं के ।

१०६ भूव—भिडना मारना । कोपरी—सिर । ठाठरी—स्थिर । देव रथ्य—देवताओं के रथ ।

१०७ आधा—पाचना । दाड—दट्टा । काडै—निकालने पर । रीसा—क्रोध । बदमन—मुख से । पधाध बीसा—हजार ।

काळी नाग नै^१ जुद्ध माती किसन,
 जमूना बही पूर सिंदूर व्रन ।
 कियो आप सू आप आळोच कानै,
 माराय ही खपे घावसू औ न मान ॥१०८॥
 बाहाल^१ बडाळ गोपाळ वडव्व,
 जो ये नागणी झाग नाख जडव्वै ।
 अहीराव न डाव कोई न^२ सूझ्यो,
 इसी भीडियो सास^३ नासा अळूझ्यो ॥१०९॥
 पयो^१ मार पाण^२ भयो^३ गात्र भग,^४
 प्रभू माडियो रास माथे पनग^५ ।
 तिसी तत वसी बजी ताल ताळी,^६
 माडै पाव आणी दियो व्र नमाळी ॥११०॥
 काळी^१ नाचियो ऊपर नाग^२ काळी,
 वळ रभ नाटारभी अक्वाळी ।
 डर नाग काळी परे श्रोग डाच्या^३
 नमो नाच त नाथ नारद् नाच्या^४ ॥१११॥
 भलो नदकिसोर नारद् भाव,
 पनगा सिर नाचियो नदि^१ पाल ।
 जपे नाथ सू नागणी हाथ जोडी
 तमा देव^२ मोटा अमा मत्त थोडी ॥११२॥

१०८ ^१ नी [ङ], ^२ मरम्या पलि घाळ सद्धु न मन [ख च], मरम्या साप घाव मूधो न मान [ग], रम साप खेघाउ [ङ] ।

१०९ ^१ बिहाल हथाको [ङ], ^२ काहू न सूभ [ङ] एकोन सूभ [च], ^३ ह्हेस नासे प्रवृत्ते [ङ] ।

११० ^१ पयो [ङ] पयु [ख], ^२ प्राण [ङ] ^३ कियो [ङ] ^४ भगो [ङ], ^५ पनगो [ङ], ^६ तिसी तत तातो बजी ताल ताळी, मळयो पांव शारभियो वल्लमाळी । तताथ तताथ तताथ सतान, सर भतय भजय सुलमान । गिडुयो गिडुयो गिडुयो क गाज, वाइ वांसळी नाद बोकासु वाज ॥ [ङ] भ पा ।

१११ ^१ काळी [ङ ग] ^२ नित्त [ग ङ च], ^३ डाच [ग ङ च] ^४ नमो नाथ तो नाच नारद् नाच [ङ] ।

११२ ^१ नाथ पाल [ङ] यह पद्याश [ग] प्रति में नहीं है । ^२ पयो दोस [ङ] ।

जिस समय कृष्ण और कालिय युद्ध कर रहे थे उस समय यमुना लाल रंग से परिपूण होकर बह रही थी। भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने आप मन्त्रणा की कि—यह कालिय प्रहारों से तो बस में होने वाला नहीं है, इसे तो मारने पर ही सफाया होगा। १०८।

देखो नागिन, उस बड़े भारी सपराज को भगवान् कृष्ण ने अपने हाथों में उठा लिया है तथा उसे ऐसा पीड़ित कर रहे हैं कि—कालिय को कोई दाव-पेच स्मरण नहीं हो रहा है और उसका श्वास नासा-गुट में उलझ गया है एव वह मुह से फेन गिरा रहा है। १०९।

पैरों की मार के कारण कालिय का शरीर टूट कर गिर पड़ा तब भगवान् ने उसके सिर पर नृत्य करना प्रारम्भ कर दिया। भगवान् ने जब कालिय के सिर पर पाव रखा, उसी समय वासुरी बजने लगी सायहो चारों ओर से लय-पूण तालियाँ बजने लगीं। ११०।

श्रीकृष्ण, कालिय नाग के सिर पर भाटक की अक्सरा के समान अपनी कटि को मोड़ कर मुद्रा बनाते हुए नृत्य करने लगे। जिसके कारण कालियनाग नयभीत हो रहा है तथा उसके मुह से रक्तस्राव हो रहा है। इसी समय नृत्य करते हुए नारद ने आकर कहा— भगवान् ! आपके नृत्य को नमस्कार है। १११।

श्रीकृष्ण बहुत ही भले हैं, श्रीकृष्ण बहुत ही भले हैं ऐसा कहते हुए नारदजी भी भगवान् के पास नृत्य करने लगे। भगवान् श्रीकृष्ण से नागनियाँ हाथ जोड़कर कहने लगीं—हे देव ! आप बड़े ही और हम अल्प बुद्धि हैं। ११२।

१०८ नं=भीर । जुद्ध माती=युद्धमत्ता । पूर=बढ़ाव सम्पूर्ण । सिन्दूर व्रन=लाल रंग की । घाळोच=मन्त्रणा । स्वप=नष्ट होगा । पाव सू=प्रहारों से । भी=यह । मारने=समझना, बस में होगा ।

१०९ बढाळ=बड़े । भाव=फेन । जड=बं=मुह से । न=को । दाव=दाव, भवसर । सूझ्यो=दिखाई दिया । भीडियो=पीड़ित किया, कसा । घळइयो=उलझ गया है ।

११० पयो=पैरोंकी । पाणे=से, हाथों की । गात्र=शरीर । रास=नृत्य । तिमो-तत=उसी समय । मांड=मुहपर ।

१११ रम=भासरा । न टारभी=नाटककी । अकवाळो=कटि मोड़कर । डाच्या=जबड़ों से । त=घायका ।

११२ भतो=अच्छे । पास=समीप में । तमा=तुम । भमा=हम । मध=बुद्धि ।

तुकारा^१ रेकारा जिकारा^२ तमासू ,
 आया आज ते भाफ कीज अमासू ।
 महा सम्मिया निव्धि^३ जादम मोटा,
 खरो हेक तू ही बिया सब्ब छोटा ॥११३॥
 जुडे^१ रूप तोने^२ व्रणावत्त जेहा,
 कुहाडा त्रिणा ऊपरा मार^३ केहा ।
 लोका ही विचाळ^४ प्रभू लीक^५ लाग
 अहडा सुण्या सापरा^६ केयि आगे ॥११४॥
 सामी^१ सेस महेस जे^२ ही न सूव,
 बुधी^३ हीण की रावळी गत्त^४ वृक्ष ।
 ब्रह्माड इकीसा देखावी^५ विहाण
 जसोदा सोई^६ राजनू पुत्र जाण ॥११५॥
 पयो^१ व्रतरा पास^२ हू पध्धराव,
 भज नद तोई तुना^३ पुत्र भाव ।
 पडीछा नही छी प्रिया राज पायो^४
 प्रभू वेदना^५ हुव^६ साप^७ दिरावो ॥११६॥
 देऊ^१ कत वगी हसे^२ वण दीघी ,
 काळी नागरी नार उछाह कीघी ।
 आग नागणी भेट सामट्टी^३ आणे,
 जदूनाथ लीजे जिकू^४ राज जाणे ॥११७॥

- ११३ ^१ तुकारे रेकारे [ड] ^२ सुभाया [ग] ^३ नड सुवद [ड] ।
 ११४ ^१ जडि [ख] जडो [ड], ^२ तुना [ड] ^३ माट [ख] मात [ग च], मान
 [ड] ^४ लुकाई वचाळ [ड] ^५ लक [ड], ^६ सातरा [ड] ।
 ११५ ^१ सम्ही [ड] ^२ जाह [ड] ^३ बुढय [ख], बुका [ड] ^४ गात्र [च]
^५ दाख [ख ग], दाखी [घ] देखी [ड] ^६ घर्जो [ड] ।
 ११६ ^१ पिता [ड] ^२ हो [ग ड] ^३ तवो [ड] ^४ पडीछापि निपाप्यठ
 राज पाय [ख], पही सापरी छपवो राज पाय [ड] ^५ वेदना [ख ग],
^६ होयधी [ख ग] ^७ साप खराथी [ख] सास खरामी [ग घ],
 राज पायो [ड] ।
 ११७ ^१ दिया [ग] दीपठ [घ] दिधी [ड], ^२ हवे [ड] ^३ सामेटय
 [ख ग], सम्मेट [ड] ^४ जकी [ड] ।

हे यादव कुल झेष्ठ देव ! आप तो क्षमा के अथाह सागर हो । ससार में एक भाप ही सत्य हो अन्य तो सभी मिथ्या है । अतः हमारे द्वारा आपके लिए जो छोटे बड़े शब्द प्रयोग में आगए हों, उनको क्षमा करना । ११३।

आपका स्वरूप तो नृणावत जैसे राक्षसों से मिटने का है , हमारे जैसे तुच्छ नृणों पर कुल्हाड़े का प्रहार कसा ? तीनों लोकों में यह लकीर (लाञ्छन) लगवाएगी । भगवान ! कहीं आगे (पहले) भी साप की शिकार सुनी है ? ११४।

हे स्वामी ! आपके वास्तविक स्वरूप तो नेव नाग तथा भगवान शिव के लिए भी अगम्य है फिर हम जब बुद्धि आपकी गति को क्या समझ सकती हैं । प्रातः काल में जब आपने इच्छीस श्रृंगार्यों को दिखलाया था, फिर भी यशोदा जी तो आपको पुत्र ही समझती हैं । ११५।

धृत्वावन क पास ही आप अपने चरणों को पधराते हैं फिर भी नव तो आपको पुत्र भाव से ही देखते हैं । हे प्रभु ! आपके पाद-पद्मों की जानकारो इस कालियनाग को नहीं थी, तब वह आप से भिडा । अब हमें कष्ट हो रहा है । आप कृपा करके इस साप को हमें बंधीजिये । ११६।

भगवान श्रीकृष्ण ने नागनियों को वचन दिया कि—“तुम्हारे पति को शीघ्र ही तुम्हें दे दूंगा ।” यह सुनकर कालियनाग की स्त्रियों ने हर्ष प्रगट किया और भगवान श्रीकृष्ण के सामने बहुत सी भेंट लाकर रखी तथा प्रार्थना करने लगी कि—इनमें से जो जो भी आपको पसंद हो वह ले लीजिए । ११७।

- ११३ तुकारा रकारा=तिरस्कार मय शब्द । जिकारा=सम्मानमय शब्द ।
 पाफ=क्षमा । लम्भिया निधि=क्षमा के समुद्र । जादम=
 यादव । सरो=सत्य । दम्ब=समस्त । खोटा=असरय, नकली ।
- ११४ जुड़े=सबने का । कुहाडा=कुठार । केहा=कसा । महेडा=
 शिकार । केपि=कही भी । भाग=पहले भी ।
- ११५ सोमी=प्रभु । सूक्त=दिखाई देता है । की=क्या । रावली=
 आपकी । बूक्त=जान सकते हैं । राय नु =आपको ।
- ११६ पथी=चरण । मजै=स्मरण करते हैं । भावं=भाव है ।
 पढ़ीछा=परीक्षा । प्रिया=प्रिय को । राज=आपके । वेदना=
 कष्ट । दरावो=देमो ।
- ११७ पैगी=शीघ्र । पण=वचन । उछाह=उरसाह । भेंट=भेंट ।
 सामट्टी=बहुत । जिकू =जो भी ।

तवारं^१ घणां आप आप अरचां, चरचा ।
 चोय चंदण नीत्र^२ तारी चरचा ।
 अही नायियो पोयणी-नाळ आणी,
 अतवार ह्रवो आप अप्पलाणी ॥११८॥
 वागा^३ शालिया प्रज्ज सेरो विचाळ,
 वळ फेरियो आगण नद वाळ ।
 शही^४ देह^५ चिता पढी, कस जप,
 वाळी मारिय^६ टार वेयाण कप ॥११९॥
 वाळी नाग वाळीद्रहा हत^७ वाड,
 दियो वास दूरतर^८ तिकी तूम^९ दाड ।
 महाकाळ वाळी तण माण मोढी,^६
 जसोदा दिसी^५ आवियो पाण^६ जोडी ॥१२०॥
 विड^१ प्रिज्जरी एह उच्छाह वाळी,
 कहता शळ्ळ^२ ग्रहा कपाळी^३ ।
 गोविंददासर आसर गुण^४ गायी
 वाचता न पौच^५ वहू^६ सेस वायो ॥
 समवाद वाळी तणी मत्त^८ सार,
 चवं दास दासानु सायो^९ चितार^{१०} ॥१२१॥

११८ १ ऊमारि [ख] उचार [ग घ] उवारे [ङ] । २ चोस नारी
 [ख], चीर [ग घ], चाड [घ], काशमीर [ङ], काळी भागियो कमळा
 मार क'ने, पळयो धाय पाताळ सु धाय पान । प्रसवार काळी तणो
 कान धायो, विविधि विधी प्रज्जनारी कपायो । भगवान सु गोप
 गोपाळ भेला, बहा वीच फोळां दुजां तेण वेसा ॥

११९ १ वागे [ङ], २ मडे [ग] ऋरो [ङ], ३ प्रोह [ङ], ४ कूटियां,
 यो [ग ङ] ।

१२० १ लहत [ङ], २ दूरे नका [ख], दूरे जिता [ग], दूरांतका [ङ],
 ३ हत [ग] ४ मोडे [ङ], ५ दसु [ख], मणी [ङ] ६ हाप [घ] ।

१२१ १ विठा [ख ग], मीठा [घ], वाई [ङ], वाठा, [घ], २ भवूम
 [ङ], ३ कमाळी [ख] ४ जस [ङ], ५ पूज [ङ] ६ सवेस [ङ],
 काळी नाग वाळो सवाद कान, पया पेट नाव पडे तास पाम ।
 जाणो वो न जायो जमदूत जाड, पुराण प्रठोरे कियो भूम पाई ।
 रसमे समय कही सन मळे, समवाद गातां प्रहे पार सले । [ङ] घ पा
 भगवान त गोपाळ भेळा वद वात पूज दुजां तेण वेळा ।
 [घ] घ पा ७ समवास [ग] ८ एह सारो [ङ] ९ साधु [ख],
 साधयो [ग] साधयठ [घ], १० चितारो [ङ] ।

नागिनियों ने अपने आपको सुसज्जित करके भगवान की अर्चना की और घोवा तथा घदन के चित्र बना कर उन्हें चित्रित किया। तत्पश्चात् भगवान ने कमल नाल भगवावर कालियनाग के नाक में नकेल डालकर उसे अपने वग में किया। फिर बिना बाठी के ही उसकी पीठ पर सवार हो गए ११८।

भगवान ने कालिय की लगाम को पकड़े पकड़े उसे व्रज की गलियों में घुमाया। उसके बाद नद के आगम में लाकर फिराया जिससे उसकी देह चिन्ता शब्द गई। कस ने कहा—कालिय जैसे टट्टू को मारने से कौनसे केकाण कापते हैं? अर्थात् उस क्षुद्र जीव को मार कर कौनसा बड़ा काय कर दिया ११९।

जिस तरह कालियनाग को काली ब्रह्म से निकालकर उसको बहुत ही दूर स्थान दिया। उसी तरह तेरे कालिय की दाढ़ वाला (विष) या उसे भी भगवान ने दूर किया। महाकाल स्वरूप कालिय का मान मदन करके भगवान श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथों को जोड़े हुए माता यशोदाजी के सम्मुख भाये १२०।

इस उसाहवद्धक व्रज की लड़ाई का घणन करते हुए अह्मा तथा निव भी उत्स्र जाते हैं। फिर भी मैंने भी गोविन्ददासजी के सहारे से भगवान के गुण (धरित्र प्रथ) का वणन किया है। जो कोई भी इसे पड़ेगा उसे सांप की हवा (पवन) तक नहीं लगेगी। यह भगवान श्रीकृष्ण तथा कालिय का सम्वाद (घणन प्रथ) अग्नी बुद्धि के अनुसार वासानुदास कवि सांपा ने कहा है १२१।

११८ धारं=देती है, देकर। घोवा=एक सुसज्जित द्रव्य। चित्र=चित्र। पीयली नाल=कमलनाल। घपनाली=बिना बाठी के।

११९ घानी=लगामें। घेरी=गली, मुहस्ता। विचाळ=मध्य। टार=टट्टू। केकाण कापे (मु०)=घोड़े कापते हैं।

१२० हूत=से। काड=निकाल कर। वास=स्थान। दूरठर=बहुत दूर। ठिको=वह। लूक=तेरे। दावे=बादों में, बहुत। माण मोशी=मान मदन करके। दिसी=सम्मुख। पाण=हाथ।

१२१ विड=लड़ाई। एह=यह। उच्छाह-वाली=असाह बद्धक। शळूक=उपकृत है। कपाली=शिव। घासर=प्राथम्य में। न पीच=नहीं पहुँचगा। मत्त सार=मत्त्यनुसार। चव=कहता है। वितार=कवि वितवन करता है।

॥ कलस रो कवित्त ॥

सुण पर्ण^१ समवाद, नद नदन अहिनारी ।
 समद्रा पार ससार, होहि गोपद^२अणुहारी^३ ।
 अनत अनत आनद, सबे वपु तास समावं ।
 भुगति जुगति^४ भडार, क्रिसन भुगताज कहाव ।
 रम्यो^५ नृत्य राधा-रमण, दुहुभुज करि काळीदमण ।
 ते चवण सुणण अहि^६ रावतणा, मटण^७ काज आवागमण ॥१॥



कलस १ सण-सण [रु] २ गोविन्द [व], द्रोपद [व], ३ धनुशारी [रु],
 ४ भुगति ठ [ख ग रु] ५ रम्यो चरित्र [रु] ६ गहरा [रु]
 ७ गमण काजि [ख], गमण काठि [व] ।

कलस का कवित्त

नव नदन श्रीकृष्ण और नागनियों का यह सम्वाद (वर्णनप्रय) जो सुनेगा, कहेगा वह मय रूपी समुद्र को योगद के समान तर कर पार हो जाएगा तथा उसके शरीर में अनन्तानन्द का समावेश होगा। भुक्ति, जुक्ति एवं मुक्ति के भंडार श्रीकृष्ण अन्न कहलाते हैं उन्हीं राधारमण ने अपनी दोनों भुजाओं द्वारा कालिय दमन नृत्य क्रिया। उसी नृत्य को आवागमन मिटाने लिए कहना तथा सुनना चाहिए।



[कसस] पण = कहेगा। धरुणहारी = समान। वपु = शरीर। तास = ससक। भुगति = भोग। जुगति = युक्ति। भंडार = कोष। मुग-
 ताज = धजमा एव मुक्त। रम्यो = खेल। राधारमण = श्रीकृष्ण।
 ते = वह, उसे। चवण सुगण = कहना तथा सुनना। मटण
 काज = मिटाने के लिए। आवागमन = पाना जाना, पुनः मृत्यु।

परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य में नागदमण प्रसंग

गीत नागदमण री वारठ मुरारिदास री कहियो

तोहे याधियां जडू लो बडू सा करगं किया
उघूडलो नागरी जडू लो भाग आज ।
अडू लो आंगणे ऊमो लडू लो सो रोस तियां,
कांनूटो बडू लो वोले दडू ला के काज ॥१॥

घणी मिल नागणी सुभागणी सुहागणी सी,
मूणी यू पू छणी घायो पायो कुणी मात ।
मसो फूणी सुणा वाला कुणीसू जगणी आवै,
तत्र मत्र हणी जको अते तणी घात ॥२॥

बोलियो आणव नद नद री हू कहाऊ बेटी
चराऊ मुकद धन जसोदारो चव ।
मोरी दबो गेद काये जगावो नागेद्र मांटी,
छोडो फद रवगारी गारियांरा फव ॥३॥

हसे सारी नाग नारी उघारी विहारो हूत,
तयारी पधारी बळे लेतो आजे सू क ।
बठ थारो वेन असो जुद्धकारी यातां कर,
फूणाघारी दीठो न छ आगकारी फू क ॥४॥

मांटी रास घाटी असो आंटी आटी बातां मेळो,
भडासू उहाटी तेग बाटी न छ मोड ।
पम करा घाटी जघा पाटसो पुणारी फाटी,
पीड सीर घाटी चाटी पाटी तणी पीड़ ॥५॥

नागनी रहायो नाव वादियो अघाये घाव,
 ताअे घाता मूलायो लखायो ताग ।
 पायो अमी आपरां बजायो असो राग प्रभु
 काहूडे जगायो काळी नोळी आयो नाग । ६॥
 राळतो कराळ भाळ फू ना याळा फू कारडां,
 घाळा लागो ठाला कर बाव असी घोट ।
 सळवळां जीहां घणी गलाफा गु जाफा लाळा,
 परनाळा पड जठी ह्ळाह्ळां पोट ॥७॥
 कर यू रपट्टां रट्टां नपट्टां वपट्टां कीघा,
 छूटा पट्टां चहुबट्टां फिरतो छछाळ ।
 बाव ले उलट्टां दळतो दपट्टां द्रह्दां,
 वट्टां वट्टां कू टा कर काळी विकराळ ॥८॥
 करां वो मूकियां ह्रीक परियो वबादी कू ड,
 नादी नांमजादी गायो घासळी रो नाद ।
 मादी नागजादी जोयो महाजोगी मन्नवादी,
 अनादी जुगादी आदी बादी खेले घाद ॥९॥
 लाग नहो फू क झाळ रुपेडा घपेडा लाग,
 नेडा नेडां फुणा घणा ऊपरे नग्रीठ ।
 राजयो अहेडा जाण घडां डादा रोस रत्तो,
 रमतो उरेडा दिर्य केडा आयो रोठ ॥१०॥
 लडतो कळाप कर लाप लोप हुषो लोहां,
 आप नाग पाको फुणा वाहतो अमाप ।
 स्याम थाप बाहे जका ऊपडे जो छाप जसी,
 सांपरो अंतरे त्रिटू तापरो सताप ॥११॥
 नापियो पोअेगनाळि बतमाळ चड नाच,
 साळी साळी नत वाली होवतो त्रवक ।
 उघाडी घडाली घाप वदम्मा चहना वाळी,
 असा काळी कपाळी कीराळी मड अरु ॥१२॥
 अरस अनत फूल हरल्ल नारव व्हू
 निरहल्ल शरोळां शावं सत्रवाळी नार ।
 आनद असोदा नद घनी घनी जीत अल्लव,
 न लहल्ल अतल्ल माया मोहिमा निहार ॥१३॥

रीसिया पागणी हूती पापेदा शिवा रोभे
 गो मरनया गम पागदारी नार ।
 छोला कुडदा घदा तोमना न जाणू छदा,
 मत्त सारु दोन वषा मणदा 'गुार' ॥१४॥

—ग्री गोभागविद्द शस्तावन के सौजन्य से

•••

अथ गीत पाडगती सुपगरा

दडी पडता द्रहामे घड झाकियो कवव डाल,
 नीर पावे अघाघ घडता याव नार ।
 सेलह घाल घ दर करता लगादियो सेटी,
 काळी नाग जगादियो नदर कवार ॥

फल श्रोष घसमां कराळा भाग भाळा कुणां,
 ताळा व भुण्ळा तू गुपाळा तीरवान ।
 बिरवाळा सिघाळा अडाळा शोध घाळाबध,
 जूटा बिहू काळान वि घाळा जोरवान ॥

कदमां करगां घाय दाव द्हे अमूतकारा
 उडे मूतकारा विघां कुणांरा अमाव ।
 जद हरो बध काळी सघणा जोडिया जक,
 सघ सघ विछोडिया नदर मुजाव ॥

महा भुजगेत नाप समाप लडियो माण,
 लम ठोर मराय तडियो जत लम ।
 दडियो अदड नीर उघाटा मिटाय द्हे
 रजे मिश्र कुणाटां मडियो माटारम ॥

धू धू कटां ध्रुकटा ध्रुकटा धू धू कटां धार,
 ता धिना ता धिना धि ना ता धिना मुताळ ।
 ता थेई ता थेई थेई थेई थेई ताना,
 गता त अहेत माया नदरी गयाळ ॥

रमां शमां रमां शमा रमा शमा शमा रमा,
 ठमका हमका शका रषका ठमक ।
 पाङ्गनी गीत राधा रज्जण पपपै प्रयी,
 नाग पू सज्जणा निमी सपीत निसक ॥

—श्राटा भिगुनाजी
 'रघुवर जस प्रकाश' से सामार

•••

नागनाथन लीला

कायन की रे बाळा गेंद बणी रे, कांय स धेऊ घढाय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 रुप्या की रे बाळा गेंद बणी रे, सोप्रा म० देऊ मढाय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 पयलीज जो ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते दरवाजा मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 दूसरी जो ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते सेरी मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 तीसरी जो ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते बजार मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 चौथी ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे, गई ते गोया मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 पांचवीं ढोट्ट बाळा ढोट्टियो रे गई ते जमुनारी पाळ ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 खेलत जो खेलत गेंद गिरी पडी रे, गिरी ते जमना रा माय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 गेंद का ठमकस बाळो वूदघो रे, म्हारो काहो वूदघो जमना धपरे ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 बाळा गुवाळा बीरुपा आया र, आया ते जसोरा रा पास ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 निरळ जसोदा माता नायर अ धारी काहो वूदघो जमना-मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

रीक्षिया नागणी हूतां गार्गेदा श्रियदा रोभै
 गभो नदनदा नम नागदारी नार ।
 छबीला दुडदा चदा तोमदा न जाणू छदा,
 मत्त सारू दीन बवा भएदा 'गुनार' ॥१४॥

—श्री मोनाम्बमिह शखावत के सौजन्य से

•••

अथ गीत पाडगती सुपसरा

वडी पडता द्रहामें चड क्षाकियो कवव डाळ,
 नीर घाघे अघाघ घडता याव नार ।
 रोह्हा बाळ प्र दर करता लगाडियो खेटी,
 काळो नाग जगाडियो गदरै कवार ॥

फत बोध घसमां कराळा भाग भाळा कुणां,
 ताळा व भुण्ळा तू गुपाळा तीरवान ।
 विरडाळा तिघाळा अडाळा जोध छाळाबध,
 जूटा विहू थाळान वि घाळा जोरवान ॥

कवर्मा करगां घाय दाय इहै अमूतकारा,
 उहै मूतकारा विघां फुणांरा अमाय ।
 जद हरो बध काटी सघणा जोडिया जरू,
 सघ सघ विछोडिया नदर मुत्राय ॥

महा भुत्रगेम नाय समाय लडियो माण,
 लम डोर मराय लडियो जत-लम ।
 दडियो अडड नीर उघाटी मिटाय इहै
 रजै मित्र फुणाटी मडियो माटारम ॥

पू पू क्तां प्रुक्तां प्रुकटा पू पू क्तां घार,
 ता धिना ता पिना पिना ता धिना मुताळ ।
 ता धेई ता धई धई धई धेई ताना,
 गां त भहेत माया नगरी गशाळ ॥

रमां क्षमां रमा क्षमा रमा क्षमा क्षमा रमां,
 ठमका हमका क्षमां रमका ठमक ।
 पाडगती गीत राधा रजण पयप प्रयी,
 नाग धू सजणा निमो सगीत निसक ॥

—आडा किशनाजी
 'रघुवर जस प्रकाश' से सामार

●●●

नागनाथन लीला

कांयन की रे बाळा गेंद बणी रे, काय स वेऊ घडाय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 रुप्या की रे बाळा गेंद बणी रे, सोघा मऽ वेऊ मडाय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 पयलीज जो डोट्ट बाळा डोट्टियो रे, गई ते दरवाजा मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 दूसरी जो डोट्ट बाळा डोट्टियो रे, गई ते सेरी मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 तीसरी जो डोट्ट बाळा डोट्टियो रे, गई ते बजार मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 चौथी डोट्ट बाळा डोट्टियो रे, गई ते गोया मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 पांचवीं डोट्ट बाळा डोट्टियो रे गई ते जमुनारी पाळ ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 खेलत जो खेलत गेंद गिरा पढो रे, गिरी ते जमना रा मांय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 गेंद का छमचऽ बाळो कूदघो रे, म्हारो काहो कूदघो जमना धपरे ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 बाळा गुवाळा बीडया आया रे, आया ते जसोदा रा पास ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥
 निवळ जसोदा भाता नायर जे धारो काहो कूदघो जमना माय ।
 मोहन धारी गेंद बणी रे ॥

रहती ज फुदती माता नोसरी रे आई ते जमना री पाळ ।
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥

×

×

×

नांग सोवऽ न नागेण जागऽ,
जगाण नागेण पारा राग खऽ, घडी दुई खेलां घाब ।
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥
की रे बाळा तू, मारग मूल्यो,
की रे बाळा पारी माता न डुरघो, की घर छोटी नार ?
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥
आंगठी जो मोडि नांग जगाविघो रे,
नांग अवघूत ज ग्यो, मची धमघोळ,
घरसी अगनि का सोळ, जे का मुल्ल मऽ जवाळ,
जळ जमना री पाळ, खेले नवानु बाळ,
नवानु बाळ नाई—कसा-नु काळ ।
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥

×

×

नांग नापीन बाळो हुयो असवार रे
बोली ते नागेण तव —
म्हारा हाप चूडा की लाव रासो,
म-खऽ जुग जुग दीवो अस्थात ।
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥
नांग नापीन बाळो हुयो घसवार रे,
आयो ते जमना री पाळ ।
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥
बाळ-गुवाळघा बौड्या आया रे,
आया ते जसोदारा पाम ।
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥
निखळ जसोना माता मायेर ओ,
नांग नापीन बाळो आयो पारा डार ।
मोहन पारी गेंद बणी रे ॥

मोतियन सीरे पारो घाळो बघाओ,
 बूध पिलाव काळ नाग ।
 मोहन पारो गेंद बणी रे ॥

—२१० कृष्णलाल हस

“निमाडो और उसका साहित्य” से सामार

●●●

नाग अभिमान मदन

मुण जो साजन अचरन नी कथा । ॥ ए प्रांकीणी ॥
 एक दिन जमुना हो जळ मे पगिसरे हरि रम सुबिचार । च० ।
 गिबुक उछळी न तव पडजो, काळिद्रह मझार ॥१॥
 घतुर नर हरि रमे रस रग,
 जो हो सुदर रुप सुहामणा, लाला चलतो जाण अनग ।
 मुण जो साजन अचरज नी कथा ॥
 ते सेथा न हरो ब्रह्मनर गया, सोधी लियो गयद । च० ।
 पिछ फिरतो तव पलियो, आवास तेजनो कद ॥२॥ च० सु० ॥
 मितरे दीठी एक गवाक्षिका, कौतुक अधिको पाम । च० ।
 बेई फलांग माहि गया, निरोक्षण कर काम ॥३॥ च० सु० ॥
 आग जातां पलग पे भीलता, देव काळी नाग । च० ।
 सहस्र फलो सूतो निदमें महीरर विश्वनो छाग ॥४॥ च० सु० ॥
 कर तिहां नागणी पताळनी, नव नव मात विनोद । च० ।
 पामो अचरज ताम हरिमणी, बोले वचन सरोद ॥५॥ च० सु० ॥
 नागणी वाच—
 काई तू घाट बीसरियो रे बाला, काई तू मारग भुलियो ।
 काई ते तारो काळ घटियो, जे हण मारग आवियो ॥६॥
 जळ कमळ छडि जाय रे बाला, स्याम मोरो जाग से ॥प्रांकीणी॥
 कान वाच—
 नहि ते घाट बीसरियो रे नागण नहि ते मारग भुलियो ।
 नहि ते मारो काळ घटियो, हु एणे मारग आवियो ॥७॥ जळ ॥
 नागणी वाच—
 किहां तुमारी बेसणो रे वाळा कुण तुमारो गाम रे ।
 कुण राय ना चलण घाल, सु छे तुमारो नाम रे ॥८॥ जळ० ॥
 कान वाच—
 मधुरा हमारो बेसणो रे नागण, गोबुळ हमारो गामरे ।
 कस रायना चलण घाल गोबळीढो माहूर नाम रे ॥९॥ जळ० ॥
 नागण जगाको तोरा नाइ न बळो केते जे बितासीयो ।

रत राय पी जुचट रमतां, नाह तुमारो हारीयो ॥१०॥ जळ० ॥
नागणी नाग प्रयोधन थाप—

घरण घोळी अग मोड़ी नागणा ए नाहो जगायीयो ।
उठो न बळवत घटा पात्रो घालुडो हम घर आयीयो रे ॥११॥ जळ० ॥
उठ्यो हो महिपर विद मर लोचने, कोप करी ततकाल । घ० ।
आयो हो सनमुल हरिन ऊपर, रोस भरघो विकराळ ॥१२॥ घ० सु० ॥
नाप्यो हो भाली बल तणी परे, पाप्यो अघिको नास । घ० ।
ऊपर येसी हो ह्य परे माहियो, जोर किसो हगे पास ॥१३॥ घ० सु० ॥
घाको हो नाग तजो अमीमान ने, प्रणमें प्रभुना पाप । घ० ।
हु तुम पायक लायक छाहीय, मेहेर जो मशाराज ॥१४॥ घ० स० ॥
हिर्ब हु सेवक आजघो साहरो, न मजु अवर भूपाळ । घ० ।
सेई सातवार आयो हरी निज घर, विलीयां घाळ गोपाळ ॥१५॥ घ० सु० ॥

—५० श्री गुणमागर सूरि

“धो हरिवस चरित्र ढाळ सागर” से सामार

●●●

नागनाथण लीला

छोटो सो कह्यो काळीवह पर खेलण आयो रे ।
मोळो सो कह्यो काळीवह पर खेलण आयो रे ।
काहे को पट गेंद बणाई काहे को डडियो लायो रे ।
पुष्पन की बाळ गेंद बणाई, हरि चदन को डडियो लायो रे ।
खेलत गेंद पडी जमुना मे, हरि काळीवह मे घायो रे ।
काई घारो नांव किणां घर जायो, कोण नाम धरायो रे ।
भात जसोदा पिता नदजो, कृष्ण नाम धरायो रे ।
कोण नांव सू आयो रे घाळा, काई रे कारण आयो रे ।
गोकळ नगरी सू आयो अे नागण, नाग को नेतो लेवण आयो रे ।
नाग नाथ प्रभु बाहर आया नगर समास घायो रे ।
गुरुधोतम प्रभु की बळि जाऊ, नागनाथ घर आयो रे ।

—श्रीमती सुमद्रादेवी उपनाम ‘पपली’

से सामार

●●●

